RNI : UPHIN/2001/05232 ISSN : 0972-4737 SSP/LW/NP/61-2020-22
नवम्बर, 2020/Nov., 2020 वर्ष–17 अंक–06 (204)/Year-17 Vol-06 (204) प्रकाशन तिथि 10 नवम्बर 2020 मूल्य 30/–



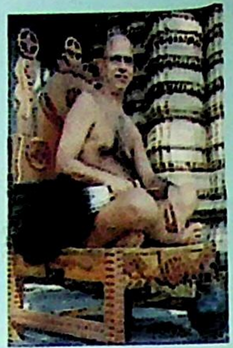
प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

शासन नायक वर्धमान महावीर

भगवान् महावीर स्वामी निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा प्रकाशन

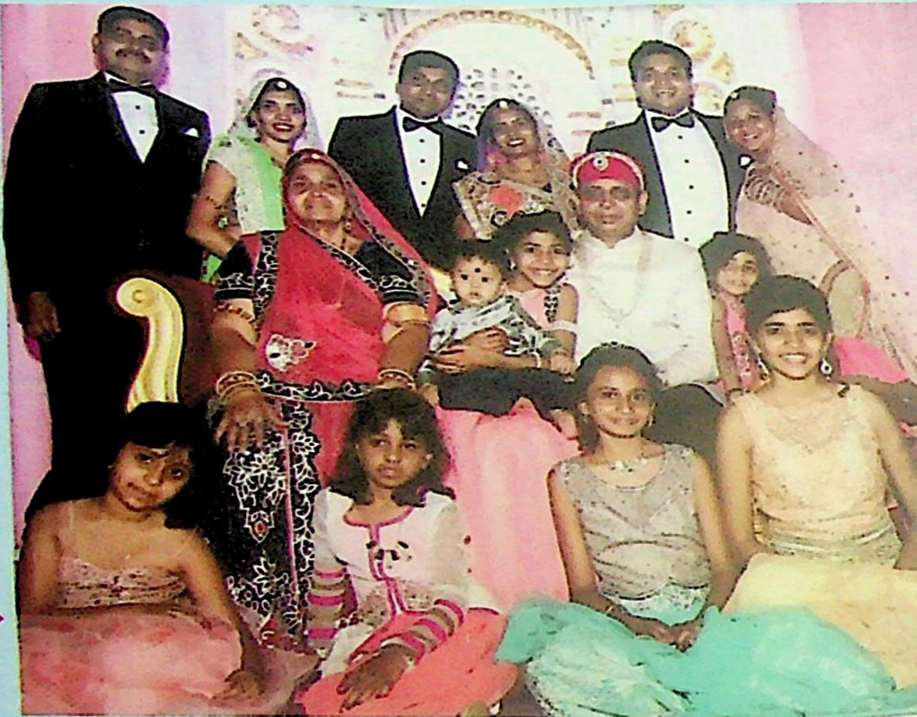




नव वर्ष एवं श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के
125वां स्थापना वर्ष महोत्सव (2019-2020) पर
महासभा के सभी केन्द्रीय व पदाधिकारी तथा कार्यकताओं एवं
समस्त जैन समाज को हार्दिक बधाई व शुभकामनायें

: शुभाकांक्षी : समस्त हपावत परिवार











ShreeKaviraj Group

- M/s. Global Waste Management Cell Pvt. Ltd.
- M/s. Vishwashakti Construction
- M/s. ShreeKaviraj Infratech Pvt. Ltd.
- M/s. K. K. Carrier
- M/s. Falguni Enterprises
- ShreeKaviraj Interprises Pvt. Ltd.
- Greenviro Infratech Pvt. Ltd.

: Office :

10- Atul Niwas,
20/21, Ist Floor,
7th Khetwadi,
Mumbai- 400004

E-mail :jnjain@kavirajgroup.com
Info@kavirajgroup.com
Website : www.Globalwaste.co.in
Tel : 02243402600

जमनालाल हपावत - लक्ष्मीदेवी हपावत

राष्ट्रीय कार्याध्यक्षः- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
वरिष्ठ संरक्षक एवं पूर्व महामंत्रीः- श्री भा. दिग. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

Kamlesh-Darshana, Vipul-Kusum, Rajkumar-Soniya, Faiguni, Yesa, Heena, Mahi, Punya, Charvi, Veer Jain Hapawat



प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

संस्कृति संरक्षण की मासिक पत्रिका

वीर निर्वाण संवत् 2547

(वर्ष-17), अंक-(06) 204, नवम्बर 2020 (Year-17), Vol.-(06) 204, Nov. 2020

इस अंक में ...

तीर्थ संरक्षिणी महासभा का सदस्यता शुल्क

1. परम संरक्षक	-	25,00,000/-	रु.
2. वरिष्ठ संरक्षक	-	11,00,000/-	रु.
3. विशिष्ट संरक्षक	-	5,00,000/-	रु.
4. संरक्षक	-	1,00,000/-	रु.
5. परम सम्मानित सदस्य	-	51,000/-	रु.
6. सम्मानित सदस्य	-	25,000/-	रु.
7. विशिष्ट सदस्य	-	11,000/-	रु.
8. आजीवन सदस्य (10 वर्ष)	-	5,000/-	रु.
9. साधारण सदस्य (1 वर्ष पत्रिका जायेगी)	-	1,100/-	रु.

नोट- उक्त सभी श्रेणी के सदस्य तीर्थ संरक्षिणी महासभा की साधारण सभा के सदस्य होंगे तथा पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी।

'प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार' पत्रिका का सदस्यता शुल्क

आजीवन- 2,500/- रुपये (10 वर्ष) त्रैवार्षिक- 800/- रुपये वार्षिक- 300/- रुपये

दानराशि भेजें ड्राफ्ट/चेक/ऑनलाइन -

"BDJ (Tirth Sanr) Mahasabha" SBI Aishbagh Branch
Branch Code - 2504 A/c No.- 10130995311
IFS Code - SBIN0002504

: मुख्य कार्यालय :

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर काम्पलेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
फोन : 011-23344668, 23344669 Email : digjainmahasabha@gmail.com

Head Office : Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (T.S.) Mahasabha
Shri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aishbagh, Lko.226004
Phone : 0522-2662581, Cell. : 09129065900, 09335920972, 09129065900
Website : jainpracheenteerth.org * Email : tsmahasabha@gmail.com

Printed at : Maheshwari & Son's, Motinagar, Lucknow

स्वागत है तीर्थ संरक्षिणी महासभा के दानवीर पदाधिकारियों का


श्री निर्मल कुमार जैन
दिल्ली-परम शिरोमणि संरक्षक


श्री महेन्द्र कुमार जैन
चेन्नई-परम संरक्षक


श्री राजकुमार जैन सेठी
कोलकाता-परम संरक्षक


स्व. मदनलाल बज
कोलकाता-परम संरक्षक


स्व. रतनलाल पाटनी
अजमेर-परम संरक्षक


स्व. शांतिलाल बड़जात्या
नागपुर-वरिष्ठ संरक्षक


श्री जमनालाल हपावत
मुम्बई-वरिष्ठ संरक्षक


श्री प्रकाशचंद बड़जात्या
चेन्नई-वरिष्ठ संरक्षक


श्रीमती ज्ञानादेवी सेठी
कोलकाता-वरिष्ठ संरक्षक

संयुक्त महामंत्री : कमल कुमार जैन रांवका
जैन मंदिर के सामने, सआदतगंज, लखनऊ
फोन : 0522-2251234 मो : 09335920972

: Chief Editor :
Dr. Bhagchandra Jain 'Bhaskar'
Near Kastoorba Library, Sadar Nagpur
Ph.: 0712-2541726, 09421363926
Email : drbcjain@hotmail.com

: सम्पादक :
नरेश कुमार पाठक
24 रामानुजनगर, सिटी सेन्टर, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल : 08223915111

: सह-सम्पादक :
प्रो. डॉ. पुष्पलता जैन
निकट कस्तूरबा लाइब्रेरी, सदर नागपुर (महा.)
फोन : 0712-2541726

विमल चन्द जैन (Chartered Accountant)
सेठ लाधूलाल जैन मार्ग, डालीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)
मोबाइल : 09415101181

: प्रकाशक :
सुधेश जैन
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊमोबाइल : 09415108233

सम्पादकीय ...

जैन चित्रकला

वास्तुकला के साथ जैन चित्रकला पर भी किंचित विचार कर लेना अत्यावश्यक है। जैनाचार्यों ने इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। इस सन्दर्भ में भित्तिचित्र, ताड़पत्रीय शैली, कर्गलचित्र, काष्ठचित्र, रंगावलि अथवा धूलिचित्र जैसी विधाएं दृष्टव्य हैं जिनके विकास में जैनाचार्यों का योगदान कम नहीं है। इनके अतिरिक्त काष्ठशिल्प, कल्पसूत्र आदि ग्रन्थों की चित्रित प्रतिलिपियाँ, रंगावली, अभिलेखीय व मुद्राशास्त्रीय शिल्प जैसे आयाम भी हमारे समक्ष हैं जिनका हम यहाँ संक्षेप में विचार कर लें। इनके अतिरिक्त वस्त्रपट चित्रकला, चित्रपट परम्परा और पाण्डुलिपि चित्रणकला समृद्ध क्षेत्र जैसे भी रहे हैं जिनमें जैनाचार्यो ने अपना विशेष योगदान दिया है। यहाँ हम इस योगदान को वस्त्रपट चित्रकला से प्रारम्भ करते हैं।

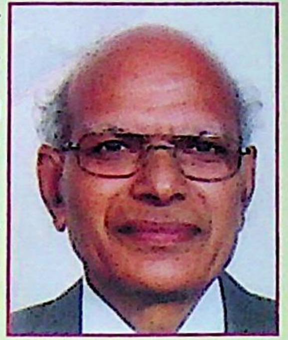
१. वस्त्र-पट-चित्रकला

अभी जैसा हम ऊपर संकेत कर चुके हैं, चित्रकला मानवीय संवेदना को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त और प्रभावक माध्यम है। इसमें स्वानुभूतिपरक सौन्दर्य दृष्टि, चिन्तनपरक भेद-दृष्टि औरी दर्शन परक कला दृष्टि का सुन्दर संयोजन होता है। जैन परम्परा ने इस संयोजन को सशक्त ढंग से कार्यान्वित किया है और उसे वस्त्रपटों पर पूरी प्रतिभा के साथ उतारा है, उसे संजोया है। इसका प्रयोग लगभग सातवीं शती से हुआ है। प्राचीन जैन-ग्रन्थ भण्डारों में ऐसे अनेक वस्त्र-पट चित्रित हुए हैं, जिनकी विषयवस्तु दार्शनिक या पौराणिक रही है।

जैन परम्परा के डॉ. श्रीधर अन्धारे और पण्डित लक्ष्मीभाई भोजक ऐसे विद्वानों में अग्रगण्य हैं, जिन्होंने वस्त्रपट और कागज चित्रकला पर बहुत अच्छा कार्य किया है। उनकी एतद्विषयक पुस्तक Jain Vastrapat लालभाई दलपतभाई इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी अहमदाबाद से प्रकाशित हुई है, जिसके आधार पर हम यहाँ एतद्विषयक सामग्री को कुछ विस्तार से प्रस्तुत कर रहे हैं, सधन्यवाद।

साधारण तौर पर वस्त्रपट चित्रकला के लिए पटचित्र या चित्रपट शब्द का प्रयोग किया जाता है पर यहाँ वस्त्रपट शब्द का प्रयोग किया गया है जो अधिक सार्थक लग रहा है। जैन यंत्र और तीर्थपट जैसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ है पर उनका प्रयोग सफेद मार्बल पर लिखे यंत्रों के लिए अधिक होता रहा है। भित्तिचित्रों को भी इससे सम्बद्ध किया जा सकता है। यहाँ हम पश्चिम भारत से प्राप्त कतिपय पटचित्रों का विशेष उल्लेख कर रहे हैं।

पादलिप्तसूरि की तरंगवतीकथा का नायक चित्रपट का उपयोग करता है। इसी तरह सीलंकसूरि (९वीं शती) ने तीर्थंकर नेमिनाथ के वैवाहिक दृश्य को रेखांकित करने वाले चित्रपट का उल्लेख किया है। महापुराण (१५४० ई.) की एक सचित्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। संयुक्तनिकाय में दुस्सपट का उल्लेख है। कुवलयमाला कहा (७७८-७७९ ई.) में संसार चक्र और बौद्ध-ग्रंथों में यमपट का भी उल्लेख आया है।



तांत्रिक परम्परा में इनका प्रयोग अधिक हुआ है। बौद्ध साधना में मण्डल का निर्माण कलात्मक ढंग से होता है। मंत्र-तंत्र परम्परा में उन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जम्बूद्वीप, सिद्धचक्रयंत्र, पार्श्वनाथ चिन्तामणि पट, पार्श्वनाथ पद्मावती पट, ओं, ह्रीं, क्रीं मन्त्रपट भी बहुत प्रसिद्ध है। डॉ. अंधारे ने ऐसे पटों को छह भागों में विभाजित किया है- १. तांत्रिकपट, २.अतांत्रिक पट, ३. भौगोलिक पट, ४. तीर्थपट, ५. विज्ञप्ति पट और ६. अन्य पट। इनके अतिरिक्त तांत्रिक पट, अयागपट, समवशरण पट आदि भी लोकप्रिय रहे हैं। अतांत्रिक पट, अष्टमंगल पट, तीर्थ चरितपट, यक्ष-यक्षी पट, सूरिमंत्र पट, तीर्थपट, वर्धमान विद्यापट, नवपद मंत्रपट, सिद्धचक्रयंत्र, नवपट यंत्र आदि भी लोकप्रिय रहे हैं। पाण्डुलिपियों के काष्ठ या कागद आवरण को भी चित्रित किया जाता रहा है। ध्यान के सन्दर्भ में देवी-देवता, मंत्राक्षर, उवसग्गहर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र, चतुरशीति महातीर्थनामसंग्रह कल्प, मथुरापुरी कल्प, सुमेरु, पंचपरमेष्ठी मंत्र मण्डल आदि का भी सुन्दर पट-चित्रण हुआ है। ये सभी पट यंत्र, मंत्र, तंत्र, परम्पराओं से सम्बद्ध रहते हैं। ऋषिमण्डल यंत्र भी बहुत प्रसिद्ध है। मंत्र को देवता माना जाता है और यंत्र को मंत्र के रूप में देखा जाता है।

यांत्रिक साधना का उद्देश्य है परमात्मपद की प्राप्ति। जैन-साधना में यंत्र, मंत्र, तंत्र का उपयोग विशुद्ध अहिंसात्मक होता है। इसके प्रयोग में शारीरिक और मानसिक शुद्धि की नितान्त आवश्यकता है। पाटन (गुजरात) में ऐसे चित्रपटों का सुन्दर संग्रह है। उनका आधार रक्तवर्ण रहता है। पीछे नन्द्यावर्त का चिह्न रहता है। साधारणतः ऐसे पट चतुष्कोणीय रहते हैं। उनकी साईज ५०X५० या ६५X६५ रहती है। कभी-कभी स्वर्ण भस्म का भी उपयोग किया जाता है। ऐसे पट लगभग १५वीं शती के मिलते हैं। यहाँ हम श्वेताम्बर परम्परा में मान्य कतिपय पटों का उल्लेख कर रहे हैं, जो बहुरंगी और मनमोहक हैं।

१. ह्रींकार मन्त्रपट- इस पट का आधार रक्तवर्ण है। मध्य में श्वेत वर्ण का कलश अंकित है। षोडशभुजी देवी का चित्र है, ऊपर से नीचे तक ह्रीं और क्रीं अक्षरों का अंकन है, चतुर्दिशाओं में यक्ष हैं, समीप ही नवग्रह देवता हैं, नवनिधियों के रूप में कलश हैं, दायें भाग में साधक पादुकाओं की पूजा कर रहा है। इस ह्रींकार पट पर कोई भी अक्षरों का लेखन नहीं है।

२. ओं स्रीं ह्रीं मन्त्रपट- यह रक्त वर्ण का पट है, ऊपर ह्रीं लिखा है और नीचे क्रीं लिखा है। चतुष्कोणीय इस पट पर मन्त्राक्षर लिखे हैं लाल स्याही में। मध्य में देवी का चित्र है, ओंम, ह्रीं, क्रीं अक्षर लिखे हैं। इसमें नवग्रहों का भी चित्रण है। दायें किनारे साधक हाथ जोड़े बैठा है और पीले रंग में गुरुपादुकाएँ चित्रित हैं।



३. वर्धमान विद्यापट- चौकोर पट पर तीन सर्किल बने हैं। पद्मासन में तीर्थंकर की मूर्ति है। अगल-बगल में चमरधारी विद्याधर हैं, बीच में तीन मण्डल हैं, जिनमें मन्त्र लिखे हैं, समवशरण जैसा अंकन मध्य में है, अनेक तीर्थंकरों के चिह्नों का अंकन है, दायीं ओर एक लघु शिलालेख है १४७५ ई. का। ऐसे अनेक पट हैं।

४. विजयपताका यंत्र- यह रेक्टेंगुलर वस्त्र पर चित्रित तांत्रिक पट है। ऊपर ह्रीं और नीचे क्रीं अक्षर लिखे हैं। समीप ही ऊपर बायीं ओर गणेश, ब्रह्मा, शिव, विष्णु आदि वैदिक देवताओं की आकृतियाँ बनी हैं और दायीं ओर देवियाँ, वृक्ष, मयूर, अश्व आदि की आकृतियाँ बनी हैं। नीचे नवनिधियों का चित्रण है और नवग्रहों का भी १४५१ ई. का यह पट खरतरगच्छ का है।

५. पार्श्वनाथ पट- यह पट जीर्ण-शीर्ण हो गया है जो राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में सुरक्षित है। इसमें निम्नलिखित देवियों आदि का सुन्दर चित्रण है- दुर्गा, महिषासुर मर्दिनी, शासन देवियाँ, चक्रेश्वरी देवी, गजारूढ़ नागराज त्रिशूल लिए, ऐरावत पर बैठे इन्द्र-इन्द्राणी, पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी मूर्ति, मयूर, पद्मावती देवी, अम्बिका, कलिकुण्ड तीर्थ, चमरधारी देवियाँ, नवग्रह, विद्यादेवियाँ, मंदिर आदि।

६. शिशुमार चक्र यंत्र- इस पट में तीन सर्किल हैं एवं गहरी काली स्याही का उपयोग किया गया है। तीसरे सर्किल के अन्त में पशु का सिर है, उसके कान मानवीय हैं, आँख भी, कुत्ते जैसा मुँह खुला है, पैने दाँत हैं, पीली रेखाएँ हैं, मन्त्राक्षर और चिह्न हैं, कोनों में कुछ लिखा है। इसका संबंध शिशु से रहा है।

७. पार्श्वनाथ ह्रींकार पट- इस पट में पीला, हरा, नीला रंग प्रयुक्त हुआ है, बीच में सिद्धासन में पार्श्वनाथ मूर्ति चित्रित है, चारों ओर अष्टप्रतिहार्य, नागराज इन्द्र, पद्मावती देवी, ऊपर से नीचे तक ह्रीं क्रीं लिखा है, मण्डल के चारों ओर अष्ट कमल दल चित्रित हैं। मन्त्राक्षर लाल स्याही में लिखे हुए हैं। मण्डल में धरणेन्द्र पद्मावती लिखा है, मण्डल के चारों ओर देवी-देवता और नवग्रह चित्रित हैं। यन्त्र के बीच गौतम स्वामी अवस्थित हैं। चारों ओर सूर्य, इन्द्र, ब्रह्मा, मंगल, यम, क्षेत्रपाल, पद्मावती, साधक, पादुकाएँ, शुक्र, वायु, जय, विजय, निधि, पार्श्व, यक्ष, शारदा, धनद, राहु, केतु आदि चित्रित हैं।

८. मन्त्राधिराज सूरि मन्त्र पट- मण्डल के मध्य गौतम स्वामी विराजित हैं। उनके चारों ओर गजारूढ़ इन्द्र कलश लिये हुए हैं चारों ओर ह्रीं क्रीं मन्त्राक्षर लिखे हैं। यह एक तांत्रिक पट है, जिसके चारों ओर यक्ष, यक्षी, गजारूढ़ इन्द्र, विद्या-देवियाँ, चक्रेश्वरी, पद्मावती, क्षेत्रपाल, नागराज आदि चित्रित हैं। इस पट में 'सूरि' प्रदान महोत्सव को भी चित्रित किया गया है।

९. सूरिमन्त्र पट- मण्डल के मध्य गौतम स्वामी विराजित हैं, गज अपनी सूँड से उन पर कलशों से जल गिरा रहे हैं। अन्य सर्किलों में चौबीस तीर्थंकर, ग्याहर गणधर, पीले वर्णों से मन्त्र, दस कल्पेन्द्र, दो ज्योतिन्द्र, बीस भवनपति, तैंतीस व्यन्तरदेव, चौसठ इन्द्र, ऐरावत हाथी, चन्द्र, मंगल, सरस्वती, गणिपिटक यक्ष, गजलक्ष्मी, पादुकाएँ, गुरु, साधक आदि का चित्रण है। इनके अतिरिक्त षोडश विद्यादेवियों को भी चित्रित किया गया है।

१०. सिद्धचक्र यन्त्र- रक्तवर्ण इस पट पर सिऋचक्रयन्त्र बना है। उसके मध्य कोई देवी है, पट के चारों कोनों पर भी देवी चित्रित हैं, ऐरावत हाथी कलश लिये हुए हैं, साधक वन्दना कर रहा है, रथ पर भी एक साधक बैठा है। राहु, केतु उस रथ को खींच रहे हैं। इसी तरह का एक अन्य सिद्धचक्रयंत्र है कलशनुमा। उसके चारों कोनों पर गरुड़ पर आरूढ़ चक्रेश्वरी, गुरु-पादुकाएँ, चरण चिह्न, ऊपर दोनों ओर नेत्र, मन्त्राक्षर, कल्पवृक्ष आदि का सुन्दर चित्रण है।

११. पार्श्वनाथ यन्त्रपट- इस पट पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन-दृश्य चित्रित हैं। मेघमालिन द्वारा उपसर्ग और धरणेन्द्र द्वारा उन उपसर्गों की शान्ति, षोडश विद्यादेवियाँ, नागबन्ध, मन्त्राक्षर, गणेश, वैराट्य, सर्प, लताएँ, देवियाँ आदि का सुन्दर चित्रण है।

१२. पंचतीर्थ पट- मोतीचन्द्र ने इसका उल्लेख किया है। १४३३ ई. में चांपनेर में यह निर्मित हुआ है। इसमें पार्श्वनाथ की पद्मासनस्थ प्रतिमा है। सिंहादि का भी चित्रण हुआ है। एक अन्य पंचतीर्थी पट है जो नव भागों में विभाजित है। इसमें शत्रुंजय पहाड़ी पर पाण्डव कायोत्सर्गिक मुद्रा में तप कर रहे हैं। नीचे शिखर है, उस पर ध्वज सहित कलश है, अगल-बगल में सर्प, मयूर, पार्श्वयक्ष, अम्बिका, सिद्धशिला पर आसीन तीन तीर्थंकर पार्श्वनाथ, ऋषभदेव, महावीर, महावीर का समवशरण, नवग्रह, सम्मेदशिखर आदि का चित्रण है। एक अन्य पंचतीर्थ पट है जिसके मध्य सरोवर है, अगल-बगल चौबीस तीर्थंकर विराजमान हैं, चारों दिशाओं में अष्टसोपान पथ है, शत्रुंजय, गिरनार, सम्मेदशिखर और आबू-इन चार तीर्थों का चित्रण है।

१३. सहस्रफण पार्श्वनाथ पट- इस पट को नौ भागों में विभाजित किया गया है, जिनमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के तथा अन्य तीर्थंकरों के जीवन दृश्यों को चित्रित किया गया है। साथ ही शत्रुंजय के आदिनाथ और शान्तिनाथ मंदिर, मरुदेवी, नाग, पादुकाएँ, कायोत्सर्गिक मुद्रा में तपोरत पाण्डव, धरणेन्द्र, पद्मावती, षोडश विद्यादेवी, कमठ का पंचाग्नि तप, अम्बिका, नेमिनाथ राजुलमती दृश्य, समवशरण, सम्मेदशिखर आदि का सुन्दर चित्रण हुआ है। एक अन्य पट में पार्श्वनाथ की सहस्रफणी प्रतिमा का सुन्दर अंकन है।

१४. सरस्वती पट- इस पट के मध्य चतुर्भुजी सरस्वती पद्मासनस्थ हैं, उनके हाथों में वीणा, अक्षमाला, पुस्तक, जलपात्र, गरुड़, भरतनाट्य करते हुए श्रावक-श्राविकाएँ चित्रित हैं। १४५१ ई. में निर्मित यह पट वसन्त विलास की शैली पर निर्मित है। वर्तमान में वह वाशिंगटन डी.सी. के संग्रहालय में सुरक्षित है।

१५. तीर्थ पट- तीर्थ दो प्रकार के होते हैं- मानसतीर्थ और भौमतीर्थ। भौमतीर्थ का संबंध वाराणसी आदि धार्मिक स्थलों से है। जिनप्रभसूरि ने विविध तीर्थकल्प में इन तीर्थक्षेत्रों का अच्छा वर्णन किया है। इसमें संघ, संघपति, आचार्य आदि का चित्रण है। अहमदाबाद में १६४१ ई. में इसकी रचना हुई थी। गुजराती और महाराष्ट्रीयन पोशाक का चित्रण सुन्दर हुआ है। कतिपय विविध तीर्थ पट भी अहमदाबाद में संग्रहीत हैं। इनमें जैन तीर्थ,

जिनप्रतिमाएँ, सम्मेदशिखर, अष्टापद आदि का सुन्दर चित्रण हुआ है। इसमें सेठ शान्तिनाथ (१६४१ ई.) का महनीय योगदान रहा है। उनके ही सहयोग से अकबर और जहांगीर ने जैन मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट न करने का आदेश जारी किया था। इसी प्रसंग में वाराणसी पट का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिसमें वाराणसी तीर्थक्षेत्र का सुन्दर चित्रण किया गया है।

१६. लोकपुरुष पट- जैन परम्पराओं में लोकपुरुष बहुत लोकप्रिय रहा है। इसमें ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक को चित्रित किया जाता है। अधोलोक में सप्त नरकों का, मध्य में मध्यलोक का और ऊर्ध्वलोक में स्वर्ग आदि का चित्रण होता है। इस चित्रण में दोनों पैर फैलाकर और कटिप्रदेश में दोनों हाथ रखकर चित्रित किया जाता है। इसमें सुमेरु, भरतक्षेत्र, लवण समुद्र, धातकी खण्ड, कालोदधि, मनुष्यलोक, पुष्करद्वीप, मानुषोत्तर पर्वत, कुण्डलद्वीप, रुचकद्वीप, देवद्वीप, स्वयंभूरमण समुद्र, अलोकाकाश आदि का चित्रण किया गया है। नव ग्रैवेयक, पंचनुत्तर आदि का भी चित्रण हुआ है। यह पट सं. १८५८ का रचित है।

१७. नन्दीश्वर द्वीप पट- जैन परम्परा में यह अष्टम द्वीप है। इसमें देव जिनेन्द्र देव की पूजन कर आनन्दित होते हैं। इसे बहुत चित्रित किया गया है। पट के मध्य में सुमेरु पर्वत सहित जम्बूद्वीप है। इसमें सात क्षेत्र, नदी और पर्वत हैं। उसके बाद लवणसमुद्र है, फिर धातकीखण्ड द्वीप है। बाद में कालोदधि समुद्र, पुष्कर द्वीप या अर्धपुष्कर द्वीप, फिर मानुषोत्तर द्वीप, क्षीरोदधि, धृतवर द्वीप, धृतवर समुद्र, इक्षुवर द्वीप, इक्षुवर समुद्र और फिर नन्दीश्वर द्वीप आता है। यहीं अंजनगिरि, दधिमुख पर्वत, रैतक पर्वत आदि कुल तेरह पर्वत हैं और फिर उस पर शाश्वत जिनालय है। इस प्रकार नन्दीश्वर द्वीप में कुल बावन जिनालय होते हैं। वह क्षीर समुद्र से घिरा है जो १६३८४ योजन विस्तृत है। यहीं भाद्रशाल वन है। अष्टद्वीप और नन्दीश्वर द्वीप के चित्र कम ही मिलते हैं। तारंगा मंदिर में कदाचित इसका प्राचीनतम चित्र है, जो १२वीं शती का है और मार्बल पर उत्कीर्ण है। रणकपुर जैन मंदिर में प्राचीनतम चित्र है, इसका जो १२वीं शती का है और मार्बल पर उत्कीर्ण है। रणकपुर जैन मंदिर में भी ऐसे चित्रपट उपलब्ध होते हैं।

१८. अधिद्वीप पट- इसका सम्बन्ध अढाई द्वीप से है। इसमें जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और आधा पुष्कर द्वीप सम्मिलित है। मध्यलोक में भरतक्षेत्र है। उसके उत्तर-दक्षिण में देवकुरु और उत्तरकुरु है। यहीं विदेह क्षेत्र है। यहीं जिनालय है और कल्पवृक्ष है।

१९. विज्ञप्ति पत्र- विज्ञप्ति पत्र एक प्रकार का घोषणा पत्र है जो चातुर्मास के सन्दर्भ में प्रचारित किया जाता है। इसमें अष्टमंगल, स्वप्न, महावीर जन्मोत्सव आदि के चित्र दिये जाते हैं। क्षमावाणी पत्र भी इसी के अन्तर्गत आते हैं। इन पत्रों को अधिकाधिक आकर्षक बनाया जाता है। इसके माध्यम से मुनि संघ से चातुर्मास करने का अनुरोध किया जाता था। इसमें पुरुष और महिला वर्ग की अलग-अलग पोशाक रहा करती है। पटशाही चित्रकार उस्ताद शालिकावाहन द्वारा तैयार किये गये विज्ञप्ति पत्र उपलब्ध हैं, जो १६१० ई. में आगरा में लिखे गये थे। जहांगीर ने एक फरमान जारी किया था कि पर्युषण के समय किसी भी प्रकार की जीव हत्या नहीं की जायेगी (१६१० ई.)। इसी तरह पर्युषण पर्व और क्षमापणा पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाता था। उन पर अष्टमंगल, स्वप्न या अन्य प्रकार के दृश्यों का चित्रण किया जाता था। इस सन्दर्भ में जोधपुर और सूरत से लिखे गये विज्ञप्ति-पत्र विशेष उल्लेखनीय हैं।

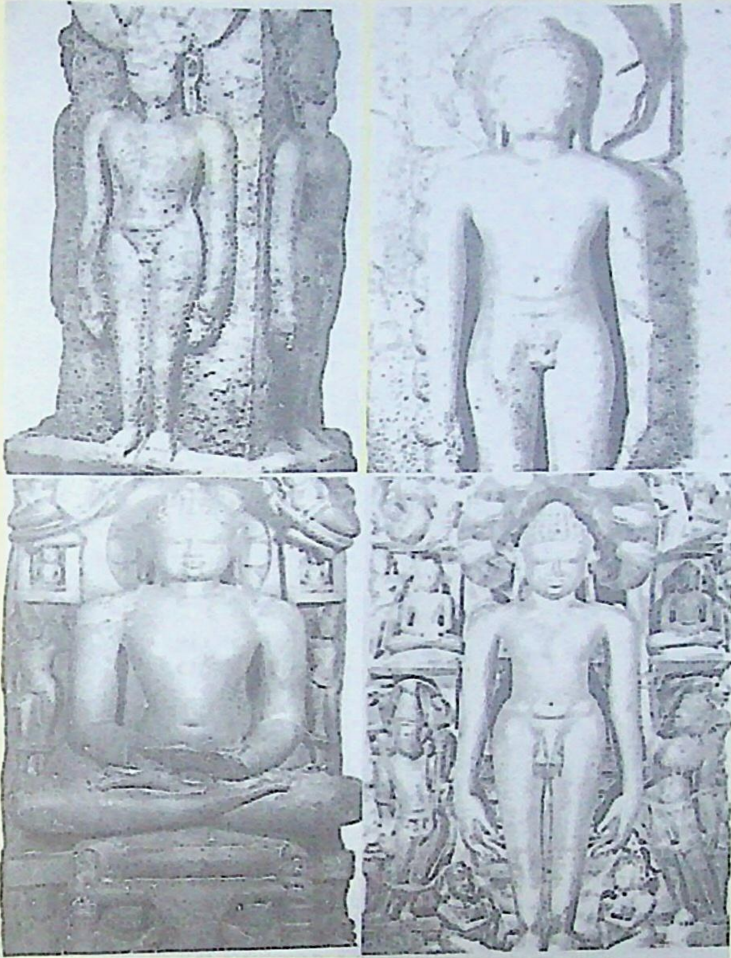
विज्ञप्ति पत्र के अतिरिक्त ज्ञानवाजी पट, चित्रकाव्यपट, हनुमान पटक, सूर्यपटक, ज्ञान चोपड़, सांपसीढ़ी आदि पटक भी लोकप्रिय रहे हैं। हुठीसिंग जिनमंदिर अहमदाबाद १६०३ ई. की प्रतिष्ठा पत्रिका भी उल्लेखनीय है। राजुलनेमिनाथ परिणय प्रसंग और लेश्या फलक भी बहुत प्रसिद्ध रहा है।

ऐसे और भी पट जैन ग्रंथ भण्डारों में भरे पड़े हैं। जयपुर, जोधपुर, अहमदाबाद, पाटण, नागपुर, कारंजा, चेन्नई, मैसूर, मूडबिद्री, नागौर, दिल्ली, वाराणसी आदि अनेक स्थानों पर निर्मित शास्त्र भण्डारों में चित्रित पाण्डुलिपियाँ एक अच्छी संख्या में मिलती हैं। प्रादेशिक स्तर पर उनकी शैली में वैविध्य है। चित्रकला की दृष्टि से उनका विशेष अध्ययन किया जाना चाहिए।

-प्रोफेसर भागचन्द्र जैन 'भास्कर'
मानद सम्पादक एवं पुरातत्त्व निदेशक,
मोबाइल : 09421363926

जैन संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन में सुरक्षित गुना की जैन प्रतिमाएँ

❑ नरेश कुमार पाठक

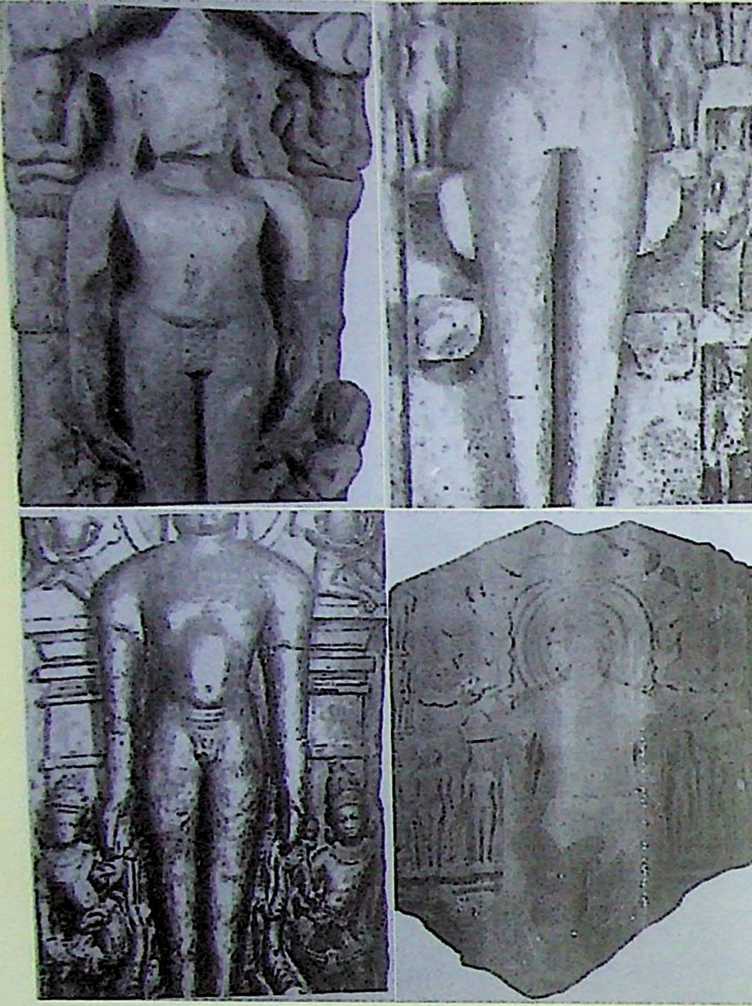


गुना मध्य प्रदेश के ग्वालियर संभाग का जिला मुख्यालय है। यह आगरा-बम्बई राजमार्ग पर भोपाल से २१३ किमी. एवं ग्वालियर से २१४ किमी. की दूरी पर अवस्थित है। यहाँ से इन्दौर २८३ किमी. दूर है। गुना इन्दौर-ग्वालियर एवं बीना कोटा रेलवे लाइन का स्टेशन भी है। गुना मूल रूप से ईसागढ़ जिले के बजरंगगढ़ परगना का एक छोटा सा गाँव था किन्तु ईस्वी सन् १८४४ में अंग्रेजों द्वारा ग्वालियर कन्टीजेन्ट का मुख्यालय बनाये जाने पर इसका महत्त्व बढ़ गया। ईस्वी सन् १८६७ में गुना में रेलवे स्टेशन बनने से और भी महत्त्व बढ़ा और व्यापारिक केन्द्र बन गया। ईस्वी सन् १६३२ में अंगेजों ने गुना सिंधिया को वापस कर दिया, जिसे सिंधिया ने जिला मुख्यालय बनाया। गुना नगर के नाम के संबंध में कई जनश्रुतियाँ हैं, किन्तु चन्देलकाल में गुना का सन्दर्भ मिलता है। अहार जी में विद्यमान एक प्रतिमा लेख में प्रतिमा के निर्माता पंडित त्रिकाली को गुनावाला कहा गया है। गुना से प्राप्त १५ जैन प्रतिमाएँ जैन संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन में सुरक्षित हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है-

पार्श्वनाथ- तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यह प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (स.क्र.७१) तीर्थंकर के दोनों पैर भग्न हैं, सिर के पीछे सप्तमुखी नागफण के मुख खण्डित हैं। नागफण मौलि एवं नीचे से ऊपर की ओर आती हुई सर्पकुण्डली दक्षिण भारतीय शैली में अंकित है। नागफण के ऊपर त्रिछत्रावली एवं उसके ऊपर मृदंग वादक दुन्दभिक अंकित हैं। वर्तमान में मुख पूरी तरह भग्न है। सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप, सिर पर सप्तफण नागमौलि है। अपने पूर्ण स्वरूप में यह प्रतिमा प्रतिहार कला की अनुपम कृति रही होगी। सफेद बलुआ पत्थर पर निर्मित १२०x४६x२० सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ६वीं-१०वीं शती ईस्वी की है।[१] **(चित्र क्रमांक एक)**

पार्श्वनाथ- तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यह प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (स.क्र.१४६) तीर्थंकर के सिर के ऊपर सप्तफण युक्त नागमौलि की छाया है। सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन है। वितान में त्रिछत्रावली के दोनों ओर अभिषेक करते हुये गजारोही, पूजक, उसके पीछे चंवरधारिणी स्त्री प्रतिमाएँ अंकित हैं। छत्र के दोनों ओर विद्याधर युगल है, जिसमें पुरुष के हाथ में माला न होकर खड्ग है। ऊपर गज व्याल नीचे दोनों ओर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा जिनाकृति है, परिकर में लम्बी माला लिये स्त्री आकृति है। सुन्दर आभूषणों से सज्जित नागराज धरणेन्द्र एवं पद्मावती चंवरधारी के रूप में अंकन होने के साथ-साथ पादपीठिका पर भी उन्हें यक्ष-यक्षी के रूप में शिल्पांकित किया गया है। तीर्थंकर पैरों के दोनों उपासक-उपासिका अंकित हैं। पादपीठ पर विपरीत दिशा में मुख किये सिंहों का अंकन है। इस प्रतिमा में धरणेन्द्र व पद्मावती के दो स्वरूपों का आलेखन किया गया है, जिसमें एक में तपस्यारत पार्श्वनाथ की उन्होंने नागफण से रक्षा की थी। दूसरे पीठिका पर यक्ष-यक्षी के रूप में भी शिल्पांकित है। वीतरागी पार्श्वनाथ की यह अत्यन्त भव्य एवं मनोहारी मूर्ति है। तीखे नैन नक्श ओज व भाव युक्त इस प्रतिमा में सात्विकता का आभास स्पष्ट है। प्रतिमा की चमक व आभा आज भी विद्यमान है। प्रतिमा के अंकन में शिल्पकार की मौलिकता व प्रतिया स्पष्ट परिलक्षित है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित १३०x६६x३० सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १०वीं शती ईस्वी की है।[२] **(चित्र क्रमांक दो)**

महावीर- तीर्थंकर महावीर की यह प्रतिमा पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। (स.क्र.१२६) सिंहासन पर आसन पट्टिका पर लांछन सिंह का अंकन है। पीठिका पर दायीं ओर तीर्थंकर महावीर के यक्ष मातंग बायीं ओर यक्षी सिद्धायिनी का अंकन है। यक्ष-यक्षी से ऊपर लेख शिल्पी के चिह्न उत्कीर्ण हैं। तीर्थंकर के सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं श्रीवत्स चिह्न का अंकन है। सिर के पीछे पंखुड़ियों से युक्त प्रभामण्डल है। वितान के नीचे रथिकाओं मे दोनों ओर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में जिनाकृतियाँ हैं। तीर्थंकर के पार्श्व में चंवरधारी त्रिभंग मुद्रा में खड़े हैं, जो एक हाथ में चंवर दूसरा हाथ पैर की जंघा पर है। दोनों मुकुट, कुण्डल,



हार, केयूर, बलय व मेखला धारण किये हैं। पादपीठ पर नीचे मध्य चक्र दोनों ओर विपरीत दिशा में मुख किये सिंह बैठे हैं। इस प्रतिमा के सिंहासन के दोनों ओर विनीत व लघुता भावयुक्त उपासक-उपासिका की छोटी आकृतियों का अंकन है। पांखरीयुक्त विशिष्ट व दर्शनीय प्रभामण्डल से युक्त पर केन्द्रित ध्यानस्थ अर्धोन्मीलित नेत्र, सौम्यमुखाकृति पर अद्‌भुत शांति का प्रतिभास, आंतरिक आनंद से पूर्ण स्मित मुस्कान लिये यह सौष्ठव युक्त प्रतिमा अनुपम सौन्दर्यशाली है और भारतीय जैन कला की श्रेष्ठ प्रतिमानों में से एक है। अनेक पद्‌मदल युक्त प्रभामण्डल प्रभु के सौन्दर्य में अतिरिक्त अभिवृद्धि की है। सफेद बलुआ पत्थर पर निर्मित ७८X४१X१७ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १०वीं शती ईस्वी की है।[३] **(चित्र क्रमांक तीन)**

तीर्थंकर- तीर्थंकर की यह प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (सं.क्र.२२७) तीर्थंकर के सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह है। दायें ओर के पूजक का चेहरा व पैर भग्न हैं। बायें ओर के पूजक का बायां पैर भग्न है। पूजक केश, चक्र मुण्डल, हार, मेखला धारण किये है। तीर्थंकर के चरण युगल का अग्रभाग भग्न है। तीर्थंकर के सिर के दोनों ओर मालाधारी विद्याधर अंकित हैं, जो दोनों हाथों में माला लिये हैं, केश, कुण्डल, हार, बलय आदि से अलंकृत है। वितान में त्रिछत्रावली, दुन्दभिक अंकित है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित २६X१६X१८ सेमी आकार की प्रतिमा लगभग ९वीं-१०वीं शती ईस्वी की है।[४] **(चित्र क्रमांक चार)**

तीर्थंकर- यह तीर्थंकर प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (सं.क्र.५१४) प्रतिमा के हाथ स्कंध से भग्न हैं। सिर के पीछे आधा प्रभामण्डल, सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न अंकित है। पार्श्व में दायें ओर एक एवं बायें ओर चार कुल पांच कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में जिन प्रतिमा खड़ी हैं, जो कुन्तलित केश व लम्बे कर्णचाप से अलंकृत हैं। पादपीठ पर मध्य में धर्मचक्र तथा उसके ऊपर तोरण के मध्य पद्‌मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर का शिल्पांकन विशेष उल्लेखनीय है। पादपीठ पर नीचे के भाग में अंजलीहस्त मुद्रा में पूजक बैठे हैं। बायीं ओर का पूजक अस्पष्ट है। पादपीठ पर विपरीत दिशा में मुख किये सिंहों का अंकन है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित ९०X३१X१६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १०वीं शती ईस्वी की है।[५] **(चित्र क्रमांक पांच)**

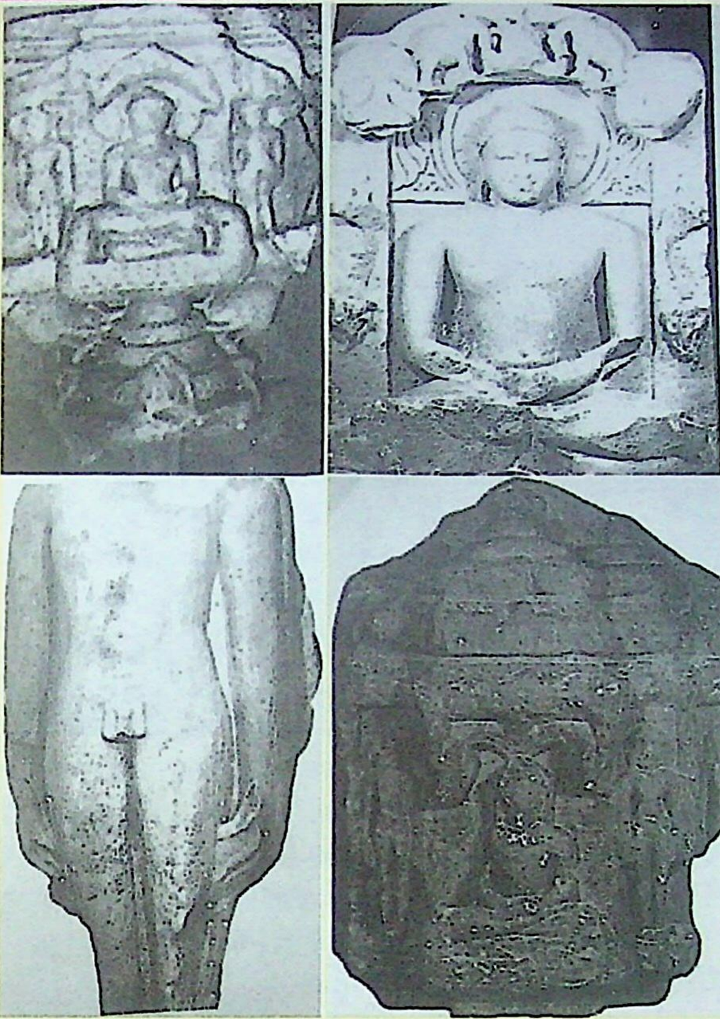
तीर्थंकर- यह तीर्थंकर प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (स.क्र.१५९) इस प्रतिमा के दोनों हाथ भग्न थे जिन्हें बाद में जोड़ दिया गया है। तीर्थंकर के सिर के पीछे प्रभामण्डल, सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। वितान में माला लिये उड़ते हुये मालाधारी विद्याधर जो करण्ड मुकुट, कुण्डल, हार एवं मेखला से अलंकृत हैं। पार्श्व में दोनों ओर त्रिभंग मुद्रा में चंवरधारी खड़े हैं। जो एक हाथ में चंवर एवं दूसरा हाथ पैर की जंघा पर रखे हुये हैं। दोनों करण्ड मुकुट, कुण्डल, हार, यज्ञोपवीत, केयूर, बलय व मेखला से सुसज्जित है। इस प्रतिमा में सर्वाभूषित चंवरधारी सेवकों और तीर्थंकर के मध्य दोनों ओर ऊपर उठती हुई तीर्थंकर के हाथों को स्पर्श करते हुए पद्‌मनाल इसकी विशेषता है। सफेद बलुआ पत्थर पर निर्मित १२०X६४X१६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है।[६] **(चित्र क्रमांक छह)**

तीर्थंकर- यह तीर्थंकर प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (स.क्र.१८७) सिर हाथ एवं घुटनों से नीचे का भाग भग्न है। तीर्थंकर के सिर के पीछे पद्‌म पुष्प एवं अन्य अलंकरणों वाला प्रभामण्डल है। वितान में त्रिछत्र, अभिषेक करते हुये गजराज एवं उड़ते हुये आकाशगामी विद्याधर युगल अंकित हैं। परिकर में दायीं ओर चार एवं बायीं ओर चार कुल आठ कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में जिन प्रतिमाएँ खड़ी अंकित हैं। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित १०६X८१X२० सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है।[७] **(चित्र क्रमांक सात)**

तीर्थंकर- यह शिल्पखण्ड किसी बड़ी प्रतिमा के वितान का भाग है। (सं.क्र.२५०) तीर्थंकर रथिका के मध्य पद्‌मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। सिर पर केश, लम्बे कर्णचाप धारण किये हैं। पार्श्व में दोनों ओर दो-दो कुल चार तीर्थंकर प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी हैं, जो केश एवं कर्णचापों से अलंकृत हैं। ऊपर वितान में शिखर अलंकरण है। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित ४३X३८X१२ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १०वीं शती ईस्वी की है।[८] **(चित्र क्रमांक आठ)**

तीर्थंकर- यह किसी तीर्थंकर प्रतिमा के वितान का दायाँ भाग है। (सं.क्र.४२) जिसमे दायीं ओर पद्‌मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में





तीर्थंकर बैठे हैं। सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। बायीं ओर अभिषेक करते हुये गज अंकित है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित १८X२४X१३ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १०वीं शती ईस्वी की है।[९] **(चित्र क्रमांक नौ)**

तीर्थंकर- यह शीर्षफलक किसी बड़ी प्रतिमा का भाग रहा होगा। (सं.क्र.२२८) इसमें नीचे छत्रावली के ऊपर बने गवाक्ष में पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर बैठे हुये हैं, सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। तीर्थंकर के दोनों ओर एक-एक कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में जिन प्रतिमा खड़ी है जिनके सिर कुन्तलित केश एवं लम्बे कर्णचाप धारण किये हैं। परिकर में बायीं ओर मकर, सिंह एवं गजव्यालों का अंकन है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है।[१०] **(चित्र क्रमांक दस)**

तीर्थंकर- यह तीर्थंकर प्रतिमा कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़ी है। (स.क्र.२५८) तीर्थंकर का सिर एवं पैर के पंजे टूटे हुए हैं। वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। पीले बलुआ पत्थर पर निर्मित ८२X४०X१६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है।[११] **(चित्र क्रमांक ग्यारह)**

तीर्थंकर- तीर्थंकर की यह प्रतिमा पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठी है। (सं.क्र.२३१) तीर्थंकर का दायां घुटना, हाथों की कोहनी, दोनों ओर के चंवरधारी एवं मालाधारी विद्याधर भग्न हैं। तीर्थंकर के सिर के पीछे अशोक के वृक्ष की पत्तियों से अलंकृत प्रभामण्डल, सिर पर कुन्तलित केशराशि, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन है। वितान में त्रिछत्र जिसके दोनों ओर अभिषेक करते हुये गजराज अंकित हैं। मुख पर भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति, शिल्पकार की प्रतिमा का परिचायक है। मूल स्वरूप में यह प्रतिमा अत्यन्त सुन्दर रही होगी। बलुआ पत्थर पर निर्मित १०६X७५X२६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १३वीं शती ईस्वी की है।[१२] **(चित्र क्रमांक बारह)**

तीर्थंकर पूजा फलक- इस प्रतिमा में छह पंक्तियों में ९६ कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमाएँ खड़ी हैं। (सं.क्र. १५५) दूसरी एवं तीसरी पंक्तियों के मध्य में मुनि या श्रावक की पद्मासन मुद्रा में आकृति है जो नमस्कार मुद्रा में अंकित है। केश एवं लम्बे कर्णचापों से अलंकृत है। वर्गाकार शिल्पपट्ट पर अंकित प्रतिमाएँ इस प्रकार हैं। प्रथम पंक्ति में सत्रह प्रतिमाएँ, द्वितीय पंक्ति में चौदह प्रतिमाएँ, तृतीय पंक्ति में चौदह प्रतिमाएँ, चौथी पंक्ति में उन्नीस प्रतिमाएँ, पांचवीं पंक्ति में सत्रह प्रतिमाएँ एवं छठी पंक्ति में पन्द्रह प्रतिमाएँ कुल ९६ कायोत्सर्ग तीर्थंकर जो जैन धर्म के दो उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी कालों का प्रतिनिधित्व करती है। यह तीर्थंकर बिम्ब अपने आप में अनोखा व दुर्लभ है और विशेष महत्त्व का है। कलाकार की कल्पनाशीलता द्रष्टव्य है। कायोत्सर्ग प्रतिमाओं के बीच के खाली स्थान में पद्मास्थ प्रतिमा की योजना अभिनव व अनूठी है। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित ६९X६३X१२ सेमी. आकार का फलक लगभग १२वीं शती ईस्वी का है।[१३] **(चित्र क्रमांक तेरह)**

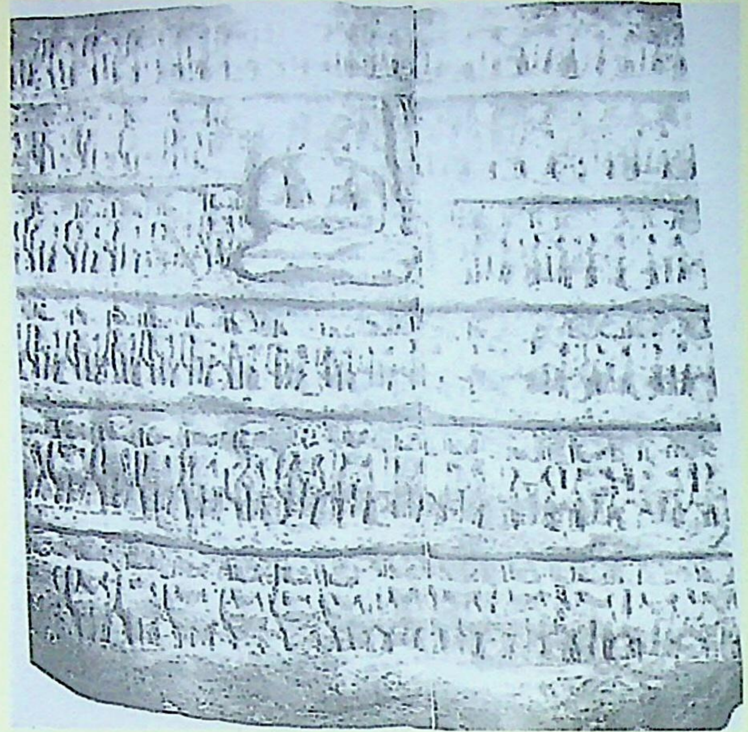
सर्वतोभद्रिका- यह सर्वतोभद्रिका स्तम्भ चतुष्ठिका में चारों ओर कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा शिल्पांकित है। (स.क्र.१५०) जिसमें पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ हैं, तथा शेष दो की पहचान नहीं हो सकी है किन्तु सम्भवतः ये महावीर व नेमिनाथ की आकृतियाँ होना चाहिए, चारों तीर्थंकर के कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न है। वितान में आदिनाथ में छत्रावली के स्थान पर अशोक वृक्ष को दिखाया गया है। पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर सप्तफण नागमौलि का अंकन है। सफेद बलुआ पत्थर पर निर्मित ८१X३२X३१ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ९वीं-१०वीं शती ईस्वी की है।[१४] **(चित्र क्रमांक चौदह)**

सर्वतोभद्रिका- यह सर्वतोभद्रिका स्तम्भ चतुष्टिका गवाक्ष के रूप में बनी हुई है। (सं.क्र.५२२) जिसमें ऊपर का भाग गोल अपूर्ण है। नीचे चारों ओर गवाक्ष बने हुये हैं, जिसमें सिंहासन पर चारों ओर तीर्थंकर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के सिर पर सप्तफण नागमौलि का अंकन है। अन्य तीर्थंकरों के लांछन स्पष्ट नही हैं। सिरो सज्जा के आधार पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ की दायीं ओर आदिनाथ प्रतीत होते हैं। सभी तीर्थंकर के कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। सभी तीर्थंकर के ऊपर अशोक वृक्ष की छत्रावली बनी हुई है। प्रत्येक के दोनों ओर उड़ते हुये गन्धर्व अंकित हैं। पादपीठ पर चारों ओर विपरीत दिशा में मुख किये सिंहों का अंकन है। सफेद बलुआ पत्थर पर निर्मित १२५X४३X३६ सेमी. आकार की प्रतिमा



लगभग १२वीं-१३वीं ईस्वी की है।[१५] (चित्र क्रमांक पन्द्रह)

उपरोक्त गुना से प्राप्त प्रतिमायें ग्वालियर क्षेत्र की प्रतिहार एवं कच्छपघात कालीन कला का प्रतिनिधित्व करती हैं।



सन्दर्भ सूची

१. यादव रमेशचन्द्र 'जैन अरविन्द कुमार' जैन संग्रहालय जयसिंहपुरा उज्जैन बड़नगर जिला उज्जैन २०१५ पृष्ठ ५७ एवं चित्र, २. वही पृष्ठ ८७ एवं चित्र, ३. वही पृष्ठ ५८-५६ एवं चित्र, ४. वही पृष्ठ ४६ एवं चित्र, ५. वही पृष्ठ १६४ एवं चित्र, ६. वही पृष्ठ १८६-८७ एवं चित्र, ७. वही पृष्ठ १३५ एवं चित्र, ८. वही पृष्ठ १५६ एवं चित्र, ६. वही पृष्ठ १३३ एवं चित्र, १०. वही पृष्ठ १३७ एवं चित्र, ११. वही पृष्ठ १२३ एवं चित्र, १२. वही पृष्ठ ४३ एवं चित्र, १३. वही पृष्ठ १७०-७१ एवं चित्र, १४. वही पृष्ठ १८८-८६ एवं चित्र, १५. वही पृष्ठ १८६ एवं चित्र।

-२४, रामानुजनगर, रामवाटिका के पीछे, सिटी सेन्टर, गोविन्दपुरी के सामने, ग्वालियर (म.प्र.) मो. 08223915111

ग्वालियर क्षेत्र में संवत् 1942 की खनियाधाना में प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाएँ

❑ डॉ. नवनीत कुमार जैन

भारतवर्ष के मध्य प्रदेश प्रांत के सुदूर उत्तरी भूभाग में अवस्थित ग्वालियर एवं चंबल संभाग का विस्तृत भूभाग जिसे 'उत्तरी मध्य प्रदेश' या 'ग्वालियर क्षेत्र' या 'ग्वालियर-चंबल संभाग' के नाम से भी जाना जाता है और जिसके अंतर्गत वर्तमान में ग्वालियर संभाग के पाँच जिले (ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर एवं गुना) और चंबल संभाग के तीन जिले (मुरैना, श्योपुर व भिण्ड) सम्मिलित हैं, अत्यंत प्राचीनकाल से ही अनवरत् जैन धर्म, साहित्य एवं कला का अभूतपूर्व केंद्र रहा है। ग्वालियर क्षेत्र से विदित अनगिनत जैन मूर्तिलेखों से ज्ञात होता है कि इस विस्तृत भूभाग में स्थित अनेक मध्यकालीन एवं आधुनिककालीन ग्राम एवं नगर जिनबिंब प्रतिष्ठा महोत्सवों के केंद्रस्थल भी रहे हैं और इन स्थलों पर प्रतिष्ठित अनेक मूर्तियों का विस्तार संपूर्ण गोपाचल क्षेत्र के साथ ही पड़ोसी क्षेत्रों में भी दिखाई देता है। गोपाचल दुर्ग निरंतर पूर्व मध्यकाल से लेकर आधुनिककाल तक जिनबिंब प्रतिष्ठा आयोजनों का अप्रतिम प्रतिष्ठास्थल रहा है। कालांतर में दतिया जिला में स्थित प्रख्यात् दिगम्बर जैन तीर्थ सोनागिर में अनेक जिनबिंब प्रतिष्ठा आयोजनों की सूचना उपलब्ध है और इन प्रतिष्ठा महोत्सवों में प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का प्रसार संपूर्ण ग्वालियर क्षेत्र में दिखलाई देता है। इनके अलावा भिण्ड एवं शिवपुरी जिला में स्थित खनियाधाना में भी विभिन्न कालखण्डों में विशाल जिनबिंब प्रतिष्ठा महोत्सवों की सूचना अनेक मूर्तिलेखों से होती है।

ग्वालियर क्षेत्र के विशेषकर ग्वालियर, दतिया एवं शिवपुरी जिला के विभिन्न जैन मंदिरों में विराजमान एवं पूजनीय विक्रम संवत् १९४२ फाल्गुण कृष्ण ११ सोमवार (१८८५ ई.) के अनेक मूर्तिलेखों में उनकी प्रतिष्ठा मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ एवं कुंदकुंदाचार्याम्नाय के अंतर्गत वर्तमान खनियाधाना (२५°०१' उ. ७८°०७' पू., जिला शिवपुरी, मध्य प्रदेश) में होने का उल्लेख हुआ है। इन मूर्तिलेखों में इस नगर का उल्लेख खणियाधाना, षनियाधानै आदि नामों से हुआ है। ये अभिलिखित प्रतिमाएँ मुख्यतः ग्वालियर महानगर के लश्कर उपनगर, दतिया जिला के सिनावल-सोनागिर, और शिवपुरी जिला के खनियाधाना स्थलों से अच्छी संख्या में मिलती हैं, जिनसे सुस्पष्ट होता है कि संवत् १९४२ फाल्गुण कृष्ण ११ सोमवार (१८८५ ई.) को खनियाधाना में एक भव्य जिनबिंब प्रतिष्ठा महोत्सव में इन सभी की प्रतिष्ठा हुई थी और तदनंतर ये विवेच्य क्षेत्र के विभिन्न जैन मंदिरों में स्थानांतरित एवं स्थापित हुई। ये प्रतिमाएँ मुख्यतः श्वेत एवं कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण निर्मित एवं कुछ प्रतिमाएँ श्वेत स्फटिक पाषाण की भी बनी हुई हैं। श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित प्रतिमाओं की संख्या अधिक है। अधिकांश प्रतिमाओं में जिनाकृतियों को पद्मासन मुद्रा में तथा कुछेक उदाहरणों में कायोत्सर्ग मुद्रा में भी दिखाया गया है। आकार की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ ल. ३ फुट ऊँचाई तक की हैं, जबकि श्वेत स्फटिक पाषाण से बनी प्रतिमाएँ अत्यंत लघुकाय हैं। ये सभी प्रतिमाएं सामान्यरूपेण एक से तीन पंक्तियों में नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में अभिलिखित हैं। कुछेक प्रतिमाओं में तिथि के साथ सोमवार भी अंकित हुआ है। ये सभी प्रतिमाएँ परिकरविहीन एवं सामान्य हैं। इन सभी प्रतिमाओं के आसन पर मध्यभाग में यथोचित् लांछन का रूपांकन हुआ है। इनमें पार्श्वनाथ प्रतिमाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं कि इनमें पार्श्व को सात और नौ दोनों संख्याओं के सर्पफणों की छत्रावलि से सुशोभित दिखाया गया है और आसन पर लांछन सर्प का भी अंकन हुआ है।

ऐसी सर्वाधिक करीब २५ प्रतिमाएँ ग्वालियर महानगर (ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार) में विद्यमान विभिन्न दिगम्बर एवं श्वेतांबर दोनों जैन मंदिरों में विराजित एवं पूजनीय हैं। अधिकांश उदाहरणों में ये श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित हैं, परंतु साथ ही कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण एवं श्वेत स्फटिक पाषाण निर्मित प्रतिमाएँ भी ज्ञात हुई हैं। इनमें सामान्य रूप से जिनाकृति को पद्मासन मुद्रा में साधारण आसन पर निर्धारित लांछनयुत् एवं लेख सहित दिखाया गया है, किंतु कुछेक उदाहरणों में वे कायोत्सर्ग मुद्रा में भी प्रदर्शित हैं। इन सभी प्रतिमाओं के आसन पर एक से तीन पंक्तियों में संवत् १९४२ फाल्गुण कृष्ण ११ तिथ्यांकित लेख में मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ एवं श्री कुंदकुंदाचार्याम्नाय के अंतर्गत षनियाधाना (वर्तमान खनियाधाना) में प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है। श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित ऐसी तीन पद्मासनस्थ प्रतिमाएँ लश्कर (दौलतगंज) के श्री पार्श्वनाथ खण्डेलवाल दिगम्बर जैन मंदिर में स्थापित हैं और इनमें दो में नेमिनाथ तथा एक में पार्श्वनाथ का निरूपण हुआ है।

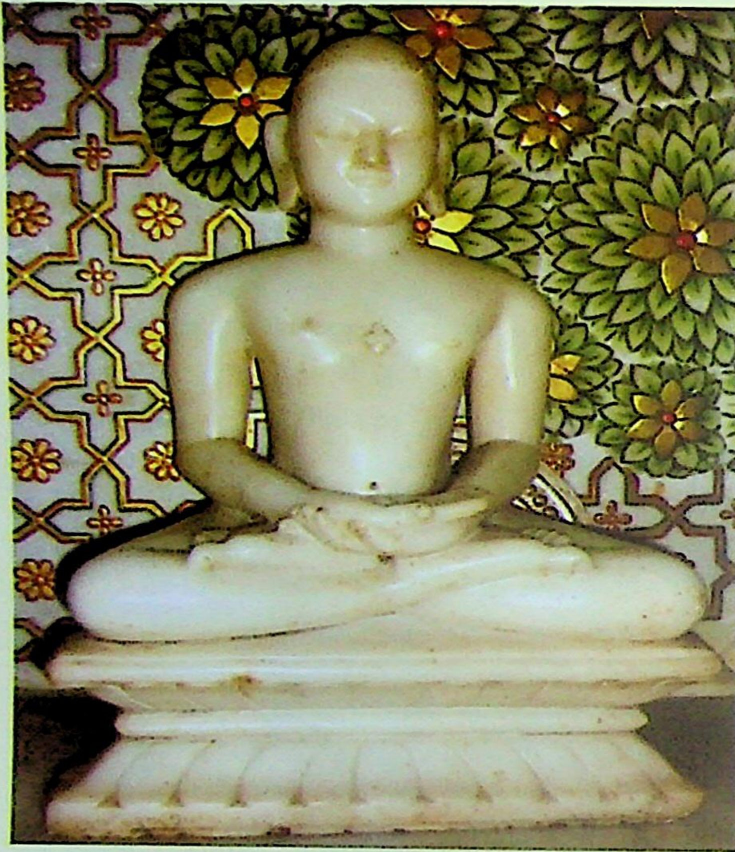
श्वेत एवं कृष्णवर्णीय संगमरमर तथा श्वेत स्फटिक पाषाण निर्मित कुल तेरह प्रतिमाएँ लश्कर (दानाओली) के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन खण्डेलवाल पंचायती नया मंदिर में विराजमान एवं पूजनीय हैं और इनमें ऋषभ (दो), चंद्रप्रभ (दो), मुनिसुव्रत, शांति, नेमिनाथ (दो), पार्श्व (चार) और महावीर का रूपांकन हुआ है। इनमें मुनिसुव्रत, एक प्रतिमा नेमिनाथ और दो पार्श्व प्रतिमाएँ कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण निर्मित, दो लघुकाय चंद्रप्रभ प्रतिमाएँ श्वेत स्फटिक पाषाण निर्मित एवं शेष ७ प्रतिमाएँ श्वेत संगमरमर



पाषाण की बनी हुई हैं **(चित्र १)**। साथ ही इनमें केवल कृष्णवर्णीय

संगमरमर पाषाण निर्मित एक कायोत्सर्ग प्रतिमा को छोड़कर शेष उदाहरणों में जिनाकृतियों को सामान्यरूपेण पद्मासन मुद्रा में ही दिखाया गया है। पार्श्वनाथ की चार प्रतिमाओं में से कृष्णवर्णीय पाषाण निर्मित दो प्रतिमाओं में पार्श्व को सात सर्पफणों की छत्रावली से युक्त, जबकि श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित दो प्रतिमाओं में उन्हें नौ सर्पफणों की छत्रावली से शोभित दर्शाया गया है। सभी प्रतिमाओं में आसन पर निर्धारित लांछन भी अंकित है।

तीन प्रतिमाएँ लश्कर (फालका बाजार) के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विराजित हैं और इनमें जिन चंद्रप्रभ, अरनाथ

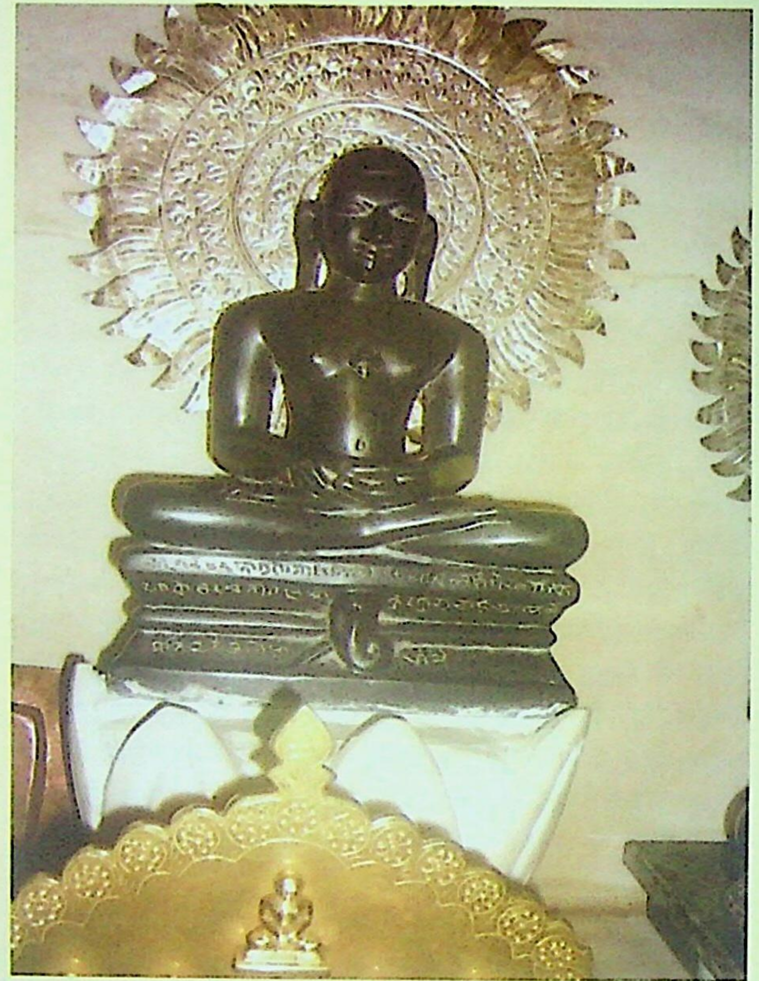


एवं पार्श्वनाथ का निरूपण हुआ है। इनमें चंद्रप्रभ **(चित्र २)** और



अरनाथ प्रतिमाएँ श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित हैं और इन दोनों में विशेषरूपेण पीठिका ऊँचे कमलासन के रूप में बनी हुई है, जबकि पार्श्व प्रतिमा कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण निर्मित है और इसमें पार्श्व के सिरोभाग के ऊपर सात सर्पफणों की छत्रावली आच्छादित है **(चित्र ३)**।

कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण से बनी एक पद्मासनस्थ पार्श्वनाथ प्रतिमा लश्कर (मामा का बाजार) के श्री दिगम्बर जैन बरैया पंचायती बड़ा मंदिर में विराजित है। इसमें जिनाकृति को परंपरागत सर्पफणों की छत्रावलि के बिना केवल ऊँची पीठिका पर लांछन सर्प



सहित दिखाया गया है **(चित्र ४)**।

श्वेत स्फटिक पाषाण निर्मित एक लघुकाय पद्मासनस्थ चंद्रप्रभ



प्रतिमा **(चित्र ५)** लश्कर (डीडवाना ओली) के श्री दिगम्बर जैन स्वर्ण



मंदिर में विराजित है (सिंह एवं जैन २०१८: ३६३-३६६)।

इनके अलावा लश्कर (सराफा बाजार) के श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर जैन मंदिर में भी श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित एवं पद्मासन मुद्रा में चार जिन प्रतिमाएँ विराजित हैं। इनमें एक में पार्श्वनाथ आसन पर लांछन 'सर्प' एवं तीन में नेमिनाथ आसन पर लांछन 'शंख' के साथ दर्शित हैं। इन चारों प्रतिमाओं के आसन पर दो पंक्तियों के संवत् १६४२ फाल्गुण कृष्ण ११ के अभिलेख में मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ एवं श्री कुंदकुंदाचार्याम्नाय के अंतर्गत षनियाधाना (वर्तमान खनियाधाना) में प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है।

दतिया जिला में स्थित विश्व प्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र सोनागिर-सिनावल से ऐसी पाँच प्रतिमाएँ ज्ञात हुई हैं और ये सभी श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित हैं तथा इनमें जिनाकृति को समानरूपेण पद्मासन मुद्रा में लांछन युक्त एवं लेखयुक्त साधारण आसन पर विराजित दिखाया गया है। इनमें एक पार्श्वनाथ प्रतिमा सोनागिर के श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर (क्र.६) में विराजित एवं पूजनीय है। इसमें जिन पार्श्व को सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली सहित दिखाया गया है। तीन प्रतिमाएँ (सुपार्श्व, पार्श्व एवं चंद्रप्रभ) सिनावल के ही सेठ श्री किशनलाल गंगवाल दिगम्बर जैन मंदिर (क्र.२) में विराजित है, परंतु इसमें जिन पार्श्व नौ सर्पफणों की छत्रावलियुत् प्रदर्शित हैं। एक चंद्रप्रभ प्रतिमा सेठ श्री गोकुलचंद्र जैसवाल दिगम्बर जैन मंदिर (क्र.६) में विराजमान है। इन सभी प्रतिमाओं के आसन पर दो पंक्तियों के संवत् १६४२ फाल्गुण कृष्ण ११ के लेख में मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ एवं श्री कुंदकुंदाचार्याम्नाय के अंतर्गत षनियाधाना (वर्तमान खनियाधाना) में प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है।

इनके अलावा सिनावल के श्री खरौआ दिगम्बर जैन मंदिर (क्र. ३) में कृष्णवर्णीय संगमरमर पाषाण निर्मित एक पद्मासनस्थ पार्श्व प्रतिमा भी विराजमान है और मूर्ति शिल्प की दृष्टि से यह लश्कर (मामा का बाजार) के श्री दिगम्बर जैन बरैया पंचायती बड़ा मंदिर में विराजित पार्श्व प्रतिमा के अनुरूप ही है। समान प्रकार की इसकी पीठिका पर भी समान तिथियुक्त लेख अंकित हुआ है और अंतर के तौर पर इसमें केवल खनियाधाना का नामोल्लेख नहीं मिलता है, शेष विवरण समान है। इसी मंदिर में जिन पार्श्व की धातुनिर्मित एक प्रतिमा और विराजित है (चित्र ६)। इसकी पीठिका पर संवत् १६४२ फाल्गुण कृष्ण ११ तिथ्यांकित लेख में मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ व कुंदकुंदाचार्याम्नाय के मानिकचंद्र सुवालाल सर्राफ, मौ वालों द्वारा प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है। बहुत संभव है कि इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा भी खनियाधाना में समान जिनबिंब प्रतिष्ठा महोत्सव में हुई होगी (सिंह एवं जैन २०१८अ: १७०-१७३)।

शिवपुरी जिला के खनियाधाना जो इन प्रतिमाओं का मूल प्रतिष्ठास्थल है, के श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में भी ऐसी तीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं और ये तीनों ही श्वेत संगमरमर पाषाण निर्मित एवं पद्मासन मुद्रा में जिन चंद्रप्रभ को समर्पित हैं। इन तीनों प्रतिमाओं के आसन पर लांछन अर्द्धचंद्र एवं संवत् १६४२ फाल्गुण



कृष्ण ११ तिथ्यांकित मूर्तिलेखों में से एक में धनि की पत्नी रैन द्वारा प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है (सिंह एवं जैन, २०१८ब: ३६२-३६३)। गूढ़र के श्री अभिनंदननाथ दिगम्बर जैन मंदिर में भी समान माध्यम एवं तिथियुक्त जिन चंद्रप्रभ की एक प्रतिमा विराजित है।

आश्चर्यजनक रूप से इन सभी मूर्तिलेखों में किसी में भी तिथि के साथ मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ व कुंदकुंदाचार्याम्नाय के अंतर्गत खनियाधाना में प्रतिष्ठा होने के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की सूचना उपलब्ध नहीं मिलती है। कुछेक मूर्तिलेखों में दानदाताओं के अवश्य ही नामोल्लेख हुए हैं। अन्यत्र से भी मुझे इस प्रतिष्ठा महोत्सव के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। अतः इस विषय पर अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है। ज्ञात हो कि खनियाधाना एवं उसके आसपास के अनेक स्थल जैन पुरातत्त्व के अति महत्त्वपूर्ण केंद्र रहे हैं।

- संदर्भ -

जैन, नवनीत कुमार एवं सिंह, अरविंद कुमार (२०१८) *जैन अभिलेख संग्रह, भाग १ (ग्वालियर जनपद, मध्य प्रदेश)*, आयु पब्लिकेशन्स्, दिल्ली।

जैन, नवनीत कुमार एवं सिंह, अरविंद कुमार (२०१८अ) *जैन अभिलेख संग्रह, भाग ३ (दतिया जनपद, मध्य प्रदेश)*, श्रुत संवर्द्धन संस्थान, मेरठ।

जैन, नवनीत कुमार एवं सिंह, अरविंद कुमार (२०१८ब) *इन्स्क्रिप्शन्स् ऑफ शिवपुरीः मटेरियल फार द हिस्ट्री ऑफ गोपाद्रि रीजन, वोल्यूम II* बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली।

-द्वारा घर गृहस्थी सुपर बाजार, जिला अस्पताल के सामने, माल रोड, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.) मो. 09827587161

एक विस्मृत जैन क्षेत्र – पारानगर

❑ डॉ. अनिल कुमार जैन



पारानगर या पारनगर अलवर जिले की राजगढ़ तहसील में टेहरा (टेहले) के निकट अरावली पर्वत के पठार पर स्थित है। प्राचीन समय में यह एक समृद्धशाली नगर था। यहाँ के शिव मंदिर, विशाल जैन मूर्ति, बावड़ी, तालाब तथा दूर-दूर तक पुरानी बस्ती के चिह्नों को देखकर इस नगर के प्राचीन वैभव का पता चलता है। अब यहाँ मात्र भग्नावशेष ही हैं। ऐसा कहते हैं कि महान तपस्वी पारस ऋषि के कारण इस नगर का यह नाम पड़ा है जिन्होंने यहाँ स्थित गुफाओं में साधना की थी। इस नगर के चारों ओर विशाल अनगिनत जैन भग्नावशेष बिखरे पड़ें हैं जिन्हें देखकर यह प्रतीत होता है कि यह स्थान जैनधर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान् पारसनाथ से सम्बंधित रहा है और उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम पारनगर (पारसनगर) या पारानगर पड़ा है।[१-४]

सर्वप्रथम इस क्षेत्र की जानकारी सन् १८८५ की सर्वे रिपोर्ट (जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, भाग २०) के पृष्ठ १२४-१२७ से प्राप्त हुई। इसमें सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ कनिंघम ने पश्चिमी राजस्थान के पुरातत्त्व संबंधी एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित करवाई थी। इसी रिपोर्ट में पारानगर के विशाल पुरातत्त्व की जानकारी भी मिलती है। कनिंघम के अनुसार यहाँ एक सुदृढ़ परकोटे से सुरक्षित एक सुन्दर एवं विशाल नगर था जो कि बड़गूजर राजपूत राजाओं की राजधानी थी। अपने नीलकंठ महादेव के मंदिर के लिए यह स्थान वर्तमान काल तक प्रसिद्ध रहा आया है। कनिंघम ने कोटे के भीतर प्रवेश करने पर ताल (लचोरोताल) का जिक्र किया हैं। उस ताल के किनारे पर अनेक देवालय स्थित थे। इन्हीं में से एक प्राचीन एवं भग्न मंदिर के भीतर उसे एक विशाल मनोज्ञ जिन प्रतिमा मिली थी। मूल प्रतिमा १३ फीट ऊँची खड्गासन थी और सिर के ऊपर २ फीट ३ इंच ऊँचा छत्र था जिसे दोनों ओर दो गजराज सम्हाले हुये थे। मूर्ति की कुल ऊँचाई १६ फीट और उसकी चौड़ाई ६ फीट थी। इसके अतिरिक्त अनेक जैन पुरातत्त्व के भग्नावशेष भी मिले।[१]

ऐतिहासिक परिदृश्य[३]

राजोरगढ़ या राजपुर भी इसी पारानगर के निकट ही हैं। यहाँ पर ऐतिहासिक महत्त्व के कई शिलालेख प्राप्त हुए हैं। एक शिलालेख संवत् ६७६ की वैशाख वदी १३ (सन् ६२२-२३) का है। इसके अनुसार गुर्जर-प्रतिहार सम्राट महिपाल (क्षितिपालदेव, कन्नौज) के शासनकाल में धर्कटवंश में उत्पन्न आर्द्रट के पौत्र, एवं देछुलक के पुत्र शिल्पी एवं सूत्रधार सर्व्वदेव ने भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमा का निर्माण करवाया था। इसी ने सिंहपद्र नामक नगर में एक मंदिर और बनवाया था। यह शिलालेख राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित है। वर्तमान में सिंहपद्र कहाँ है, यह स्पष्ट नहीं है, कुछ विद्वान् इसे सिंहोनिया (मुरेना, म.प्र.) से जोड़ते हैं जहाँ नौगजा जैसी ही भगवान् शीतलनाथ की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा मौजूद है। इसी प्रकार की एक अन्य खड्गासन मूर्ति करौली (राजस्थान) के किले से प्राप्त हुई है जिसे वर्तमान में श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र (राजस्थान) के संग्रहालय में स्थापित कर दिया गया है। स्थानीय विद्वानों का मत है कि ये तीनों मूर्तियाँ लगभग एक ही समय पर एक ही व्यक्ति द्वारा बनवाई गयी हैं। एक अन्य शिलालेख के अनुसार संवत् १०१६ (सन ६५६ ईस्वी) में गुर्जर-प्रतिहारवंशी महाराजाधिराज सावट के पुत्र मथानदेव यहाँ राज्य करते थे, जो कन्नौज के परम भट्टारक महाराज परमेश्वर श्री क्षितिजपालदेव के द्वितीय पुत्र महाराज जयपालदेव के सामंत थे[३]

कहते हैं कि विक्रम की ११वीं शताब्दी में गुर्जर-प्रतिहार (बड़-गूजर) वंशी राजा जयपालदेव (या अजयपाल) ने इस नगर को अपनी राजधानी बनाया था। इससे पूर्व गुर्जरों की राजधानी राजगढ़ थी, लेकिन वे बाहरी आक्रमणों से बहुत परेशान रहते थे। इस कारण उन्होंने १००० फीट ऊँचे पर्वत पर स्थित इस चौरस स्थान को अपनी राजधानी बनाना उचित समझा। इसके चारों ओर ऊँची पहाड़ियाँ हैं तथा उसकी तलहटी में घने जंगल हैं। अतः सुरक्षा की



दृष्टि से यह बहुत उपयुक्त स्थान था।

उन दिनों जहाँ-तहाँ अनेक छोटे-छोटे राज्य थे, उनमें आपस में काफी झगड़े भी रहते थे। बारहवीं शताब्दी में ग्वालियर में कुशवाह वंशीय राजा सोमदेव का राज्य था। उसने गुर्जरों पर आक्रमण कर दिया तथा दौसा (जयपुर के निकट) को अपने अधिकार में ले लिया। लेकिन राजपुर (राजोरगढ़) गुर्जर प्रतिहारों के अधिकार क्षेत्र में बना रहा।

पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में जब दिल्ली पर सुल्तान फिरोजशाह राज्य करता था तब इधर गुर्जर-प्रतिहार (बड़-गुर्जर) क्षत्रियों की शक्ति चढ़ी-बढ़ी थी। उसमें राजा आसलदेव के पुत्र महाराज गोगादेव प्रसिद्ध वीर और पराक्रमी था। इसकी राजधानी पारानगर के निकट माचेड़ी नगरी थी जो इन दिनों धनधान्य से परिपूर्ण थी। सम्राट अकबर के शासनकाल में ये लोग स्वतंत्र शासन करते रहे।

इस वंश के राजा राजपाल के पौत्र तथा राजा कुंभ के द्वितीय पुत्र अशोकमल (उपनाम राजा ईश्वरमल) के बादशाह अकबर को डोला (कन्या) देने से मना करने दिया तथा इधर आमेर नरेश राजा मानसिंह से बिगाड़ हो गया। इसी समय दिल्ली और आमेर सेनाओं ने अवसर पाकर तलहटी स्थित माचेड़ी नगर जो कि पारानगर का ही हिस्सा था, को खूब लूटा और इसे बड़-गूजरों से छीन लिया। इस नगर के बहुत से निवासी अन्य सुरक्षित स्थानों पर चले गए। तब से यह नगर उजड़ गया! बड़-गूजरों का प्रताप नष्ट हो जाने से यह प्रान्त आमेर राज्य में मिला लिया गया। पारानगर के मध्य में एक गढ़ी बनी हुई है जिसे मांडुसिंह ने बनवाया था। मिर्जा राजा जयसिंह ने संवत् १६८८ में पारानगर को पूर्णतः अपने राज्य में मिला लेने के पश्चात् गढ़ एवं राजोर की चौतरफा पहाड़ियों पर १२ कोस का परकोटा खिंचवाकर किला बनवाया।

जैन पुरातत्व

नौवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक पारानगर स्थापत्य एवं कला का प्रमुख केंद्र रहा है। छह मील लंबे तथा तीन मील चौड़े चारों ओर पहाड़ियों से घिरे इस स्थल पर स्थान-स्थान पर बिखरी पड़ी हुई हजारों मूर्तियाँ पाई गईं। ऐसा लगता है कि यहाँ सैकड़ों मंदिर थे। खजुराहो की शैली में खजुराहो से पूर्व बने ये मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। कहते हैं कि यहाँ हिंदुओं और जैनों के लगभग तीन सौ साठ मंदिर थे। पुरातत्त्व विभाग के अनुसार हिन्दुओं के मंदिरों में नीलकंठ महादेव, लाछों की देवरी, डाबर की देवरी तथा हनुमान की देवरी ये प्रसिद्ध मंदिर थे। अब यहाँ पर जो एक मात्र सुरक्षित मंदिर है वह नीलकंठेश्वर या नीलकंठ का मंदिर है। इस मंदिर के मंडप, गर्भगृह तथा शिखर आदि सुरक्षित हैं। यहाँ के स्तंभ सुन्दर कलात्मक मूर्तियों तथा बेलबूटों से मंडित है। छह फीट लंबे चौड़े गर्भगृह के बीच में शिवलिंग प्रतिष्ठित है जिसे पूजने अभी तक बहुत से श्रद्धालु यहाँ पहुँचते हैं। हिंदू मंदिरों से प्राप्त मूर्तियों में शिव, ब्रह्मा, सूर्य, विष्णु, गणेश आदि की कलात्मक मूर्तियाँ हैं। कुछ मूर्तियों को अलवर के संग्रहालय में रख दिया गया है।

पारानगर में हिंदुओं की संख्या बहुत अधिक थी तथापि जैनों का भी अच्छा प्रभाव था। उन्होंने यहाँ कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया। अभी तक यहाँ मात्र छह जैन मंदिर होने का पता चला है। पुरातत्त्व विभाग ने उनके नाम निम्न प्रकार निश्चित किए हैं (१) नौगजा, (२) कोटन की देवरी, (३) रत्ना की देवरी, (४) बाग की देवरी, (५) धौलादेव, तथा (६) बखत की देवरी। ये मंदिर शिव मंदिरों से पूर्व के ज्ञात होते हैं। यहाँ से प्राप्त अनेक जैन मूर्तियों को देश के विभिन्न संग्रहालयों में स्थापित कर दिया गया है।

महादेव मंदिर से लगभग ४००-५०० मीटर की दूरी पर नौगजा स्थित है। यहाँ एक विशाल चबूतरा है जिस पर एक बहुत बड़े मंदिर होने का अनुमान सहजता से लगाया जा सकता है। इस पर दूर-दूर तक मंदिर और मूर्तियों के भग्नावशेष बिखरे पड़े हैं जो इसकी विशालता को पुकार-पुकार कर बता रहे हैं। हालाँकि नौगजा के भग्न मंदिर सहित सम्पूर्ण क्षेत्र सुरक्षित है, फिर भी प्रशासन की लापरवाही से इस चबूतरे के चारों ओर स्थानीय लोग खेती करने लगे हैं जिसकी वजह से यह और अधिक शीघ्रता से नष्ट हो सकता है। जैन समाज थोड़ा सा प्रयास करे तो यह स्थान खाली करवाया जा सकता है। इस चबूतरे पर १६ फीट ऊँची और ६ फीट चौड़ी एक दिगंबर खड्गासन प्रतिमा है। प्रतिमा बहुत ही सुंदर है लेकिन खुले में होने के कारण इसका क्षरण हो रहा है। इस मूर्ति के इतिहास के संबंध में हम ऊपर बता चुके हैं। हालाँकि इस मूर्ति की ऊँचाई १६ फीट है, लेकिन लोग इसे नौगजा के नाम से ही जानते हैं। मूर्ति के पीछे भामंडल है, ऊपर हाथी तथा देवता मालाएँ लिए हुए अंकित हैं। गुलाबी बालू पत्थर से बनी यह मूर्ति एक हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। कहते हैं कि इसे भाईशाह महाजन ने बड़गूजर राजा सुल्तबरह के राज्यकाल में बनवाया था।" यह मान्यता उपरोक्त शिलालेख से भिन्न प्रतीत होती है। जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं कि नौगजा की यह मूर्ति एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है।

पुरातत्त्व विभाग वाले नौगजा की प्रतिमा को भगवान् आदिनाथ की बताते हैं तो कुछ अन्य भगवान् पार्श्वनाथ की। लेकिन अधिकतर मान्यता है कि यह भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमा है। चूँकि यहाँ पर अनेक जैन मंदिर उपलब्ध थे। संभव है कि उनमें से भगवान् आदिनाथ का मंदिर तथा भगवान् पारसनाथ का मंदिर भी प्रसिद्ध मंदिरों में रहे होंगे। आज वे मंदिर तो उपलब्ध नहीं हैं लेकिन नौगजा उपलब्ध है। इसी कारण इस मूर्ति को ही भगवान् आदिनाथ या भगवान् पारसनाथ की मूर्ति मान लिया गया होगा।

नौगजा के आगे जाने पर अनेक देवरीयाँ हैं। उनमें से कोटन की देवरी, रत्ना की देवरी तथा बाग की देवरी में पत्थरों और स्तम्भों पर अनेक जैन मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। धौलादेव में एक पद्मासन दिगंबर जैन प्रतिमा एक शिला पर विराजमान है। अनुमान है कि इस शिला के नीचे जैन मंदिर है। सभी जैन मंदिर १०वीं से १५वीं शताब्दी के मध्य बने हैं। नौगजा के निकट एक तालाब है। इसके चारों ओर लगभग २८५० शिल्पित एवं कलात्मक जैन एवं हिन्दू मूर्तियाँ बिखरी पड़ी थीं। जैसा कि स्थानीय लोगों से पता चला है कि प्रशासन की लापरवाही एवं जैन समाज की निष्क्रियता के कारण उनमें से अनेक मूर्तियों को मूर्ति-तस्करों ने देश और विदेशों में बेच दिया। पुरातत्त्व विभाग के प्रयासों से शेष मूर्तियाँ नीलकंठ महादेव के मंदिर के परिसर में सींकचों के अन्दर बंद कर दिया है जिनकी

निगरानी के लिए वहाँ पुलिस बल तैनात कर रखा है।

कुछ लोगों का मानना है कि जिस समय दिल्ली और आमेर की सेनाओं ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया और माचेड़ी को जयपुर राज्य में मिला लिया था उसी समय उन्होंने हिंदू तथा जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया। लेकिन यह कथन उचित नहीं लगता है क्योंकि सेनाओं में हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही थे। वैसे भी लूटना तो माचेड़ी को था तो अनावश्यक पारानगर के मंदिरों को तोड़ने के लिए, जो कि माचेड़ी से १००० फीट ऊँचाई पर स्थित था, कोई परिश्रम क्यों करेगा। कुछ अन्य का मानना है कि जैन मंदिरों को उन हिन्दुओं ने तोड़ा जो तंत्र आदि में विश्वास करते थे। लेकिन यह बात भी अधिक उचित प्रतीत नहीं होती है।

इस संबंध में संवत् ६७६ के शिलालेख का पुनः जिक्र करना महत्त्वपूर्ण रहेगा। यह शिलालेख दो भागों में अलग-अलग समय पर लिखा गया है। पहले भाग का वर्णन तो ऊपर कर चुके हैं। दूसरा भाग कब लिखा गया यह ज्ञात नहीं है और यह अपूर्ण भी है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस दूसरे भाग को सर्व्वदेव (जिसका जिक्र ऊपर कर चुके हैं) के पुत्र वरांग ने लिखवाया। इसके अनुसार इस क्षेत्र में एक शक्तिशाली भूचाल आया था जिसके कारण भगवान् शांतिनाथ का मंदिर क्षतिग्रस्त हो गया।[३] वरांग ने पुनः इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र में बाद में भी अधिक शक्ति का भूकंप (भूचाल) आया हो किसके कारण उस क्षेत्र के सभी मंदिरों को बहुत नुकसान पहुँचा हो। चूँकि यहाँ के सभी मंदिर बड़े-बड़े भारी पत्थरों से बने हुए थे, अतः थोड़ा-सा भी भूकंप बहुत अधिक क्षति कर सकता है। ऐसा लगता है कि इस भूकंप ने उस क्षेत्र के सभी मंदिरों को बहुत नुकसान पहुँचाया। इसी कारण अब यहाँ मात्र जैन व हिन्दू मंदिरों के भग्नावशेष ही मिलते हैं। लगता है कि इस क्षेत्र में भूचाल आते रहे हैं, इसी प्रकार का एक भूचाल सन् १६४० में भी आया था।[५]

पारानगर घने जंगलों के बीच है तथा लगभग ३ कि.मी. का पहाड़ी रास्ता है जो कि बहुत ही खराब है। इस कारण यहाँ लोगों का आना-जाना बंद सा हो गया है। फिर भी कुछ हिन्दू लोग यहाँ स्थित नीलकंठ महादेव के मंदिर में अभी तक दर्शनार्थ आते रहते हैं। इसके मुख्यतः दो कारण नजर आते हैं। एक तो यह कि यह मंदिर अपेक्षाकृत सुरक्षित है तथा दूसरा यह कि कुछ लोग यहाँ भगवान् शिव की मान्यता रखते हैं, वे उनसे कुछ याचना करते हैं और जब वह पूरी हो जाती है तो पुनः आते हैं। कवि ब्रह्मदेव की रचना[६] से पता चलता है कि लगभग २०० वर्ष पहले तक तो जैन लोग भी यहाँ भगवान् शांतिनाथ की नौगजा मूर्ति के दर्शनों को आते थे, लेकिन अब उनका यहाँ आना प्रायः बंद सा हो गया। एक तो आसपास में कोई जैन परिवार नहीं है, सबसे नजदीक जैन लोग अजवगढ़ में रहते हैं जो कि लगभग ४० कि.मी. है। दूसरे यहाँ एक भी जैन मंदिर नहीं बचा है। सभी जैन मूर्तियाँ खंडित हैं और पुरातत्त्व विभाग के अधिकार क्षेत्र में हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे इस विशाल प्राचीन जैन क्षेत्र को लोग भूलने लगे।

नौगजा की स्तुति

डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल जी की खोज से पता चलता है कि ब्रह्मदेव १८वीं सदी के प्रसिद्ध कवि थे।[६] इन्होंने राजस्थानी और विशेषतः ढूंढारी भाषा में अनेक पदों की रचना की थी। वे संभवतः जयपुर या उसके निकट के रहने वाले थे। कवि का समय संवत् १८०० से १८६० तक अनुमानित है। कवि ने राजोरगढ़ स्थित नौगजा की मूर्ति के लिए स्तवन लिखा था। वे लिखते हैं कि यह मूर्ति गेहूँ वर्ण की है तथा राजपुर या राजोरगढ़ में जो कि वन के पर्वत पर गढ़ बना हुआ है उसमें विराजमान है। घने जंगल के कारण मंदिर तक पहुँचना कठिन लगता है। वहाँ अनेक जैन मंदिर हैं। अजवगढ़ होकर राजोरगढ़ जाना पड़ता है। स्वयं अजबगढ़ भी प्राचीन नगर है। नौगजा की यात्रा की जाती है, ऐसा पद में लिखा है। 'राग रेखता' में लिखा पूरा पद निम्न प्रकार है-

सरसा उतरी बम्ही प्रतिमा राजोरगढ़ में विराजे है।
नोगाजा बिम्ब छाजै है, गेहूँ वरण कहा जे है।।१।।
देस है जोध ए नामां, नगर है राजपुर धामां।
निकरि परवल बना गढ़ है, मारिग अति कठिन चाले है।।२।।
जैन मंदिर घणा दरसै भव्य जीव आणि परसै है।
पूजै आहूं द्रव्य लै चित सै, करम सब भाग ऐ डर सै।।३।।
अजव गढ़ थे सवे ध्यावै, प्रभू की जतरा पावै।
गुर जुत संग आवै, मंगल पूजा रचावै है।।४।।
प्रभुजी जी अरज ऐ सुणिये, करम का फंद तल्योगे।
देवा ब्रह्म विनती करि है, तुम्हरी भगति मो धोये।।५।।

इस पद से स्पष्ट है कि संवत् १८५० के आसपास तक लोग यहाँ यात्रा पर जाया करते थे, वे प्रायः अजबगढ़ होकर जाते थे। मार्ग कठिन था इसलिए अधिकतर लोग समूह में ही जाते थे। अन्यथा अजबगढ़ से ही नौगजा को नमस्कार कर लिया करते थे।

पल्लीवाल जाति के संबंध में एक रोचक तथ्य

अलवर के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय श्री महावीर प्रसाद जैन ने व्यक्तिगत पत्राचार[७] (दि. २७.११.१९८६) में एक रोचक जानकारी दी। उनके अनुसार नौगजा और राजोरगढ़ से पल्लीवाल जैन जाति का विशेष संबंध रहा है, इसी कारण पल्लीवाल जाति के दो गोत्र "नौगजा" और "राजोरिया" क्रमशः पारानगर में स्थित नौगजा भगवान् शांतिनाथ तथा राजोरगढ़ के नाम पर ही पड़े हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि नौगजा तथा राजोरिया गोत्रीय पल्लीवाल दिगंबर जैन धर्मानुयायी ही रहे हैं। नौगजा गोत्रीय लोग अलवर के निकट नौगाँव में रहते थे तथा राजोरिया अनेक स्थानों पर रहते हैं।

निकटवर्ती प्राचीन नगर एवं दर्शनीय स्थल

पारानगर के निकट कई प्राचीन एवं रमणीय स्थल हैं। सिरसिका के घने जंगल में अनेक जंगली पशु स्वच्छंद विचरण करते हैं। यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। यहाँ शिकार पर प्रतिबंध है, अतः ये जंगल पूरी तरह संरक्षित है। सिरसिका के निकट कालीघाटी तथा पांडुपोल भी दर्शनीय स्थल हैं। पांडुपोल को महाभारत के पांडवों से सम्बंधित माना जाता है। एक लोककथा के अनुसार जब पांडवों को प्यास लगी तो यहीं पर भीम ने अपनी गदा से चट्टान तोड़कर पानी निकला।



महाभारत कालीन राजा विराट ने विराटनगर बसाया था जिसका वर्तमान नाम वैराट है। इसी नगर के जैन मंदिर में बैठकर प्रसिद्ध जैन विद्वान् पाण्डे राजमल्ल जी ने विक्रम संवत् १६३३ के प्रारंभ में "जम्बूस्वामी चरित" की रचना पूर्ण की थी। इस ग्रन्थ में उन्होंने विराटनगर की सुन्दरता का विस्तार से वर्णन किया है जो कि उस समय सम्राट अकबर के साम्राज्य में था[८]। पाण्डे राजमल्ल जी ने अनेक ग्रंथों की रचना की थी जिनमें से "जम्बूस्वामी चरित", "लाटी संहिता" और "पंचाध्यायी" अधिक प्रसिद्ध हैं।

शैवभक्त भर्तृहरी ऋषि की साधना स्थली भी अलवर जिले में स्थित है जो कि "भर्तृहरी" नाम से ही विख्यात है। जैन कथानकों के अनुसार भर्तृहरी प्रसिद्ध जैनाचार्य शुभचंद्र (समय ई. सन् १००३-१०६८) के भाई थे। भर्तृहरी ने शैवधर्म अपना लिया था। उस समय अलवर प्रांत में मंत्र-तंत्र का बहुत जोर था। भर्तृहरी ने एक ऐसे रसायन की खोज की जो कि लोहे को सोना में बदल देता था। लेकिन आचार्य शुभचंद्र के सामने शैवभक्त भाई भर्तृहरी की साधना फीकी पड़ गयी। आचार्य शुभचंद्र ने अपनी तपस्या से इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि उनके पसीने के पत्थर पर पड़ने से पत्थर भी सोना बन जाता था।[६]

अजबगढ़ और भानगढ़ (भानुगढ़) भी प्राचीन दर्शनीय स्थल हैं। अजबगढ़ को राजा अजबसिंह ने लगभग ४०० वर्ष पूर्व तथा भानगढ़ को आमेर नरेश महाराज भगवानदास जी ने संवत् १७३७ में बसाया था। इनके वंशजों में आपसी फूट हो जाने के कारण इस वंश की शक्ति क्षीण हो गई। जयपुर नरेश सवाईसिंह ने मौका पाकर भानगढ़ पर चढ़ाई कर दी तथा तत्कालीन राजा जसवंतसिंह को पराजित कर जयपुर में मिला लिया। तब से भानगढ़ उजड़ा पड़ा है। राजभवन, विशाल मंदिर, प्रजा के घर और दुकानें अब तक दिखाई देते हैं। उस समय के कुँओं, मंदिरों तथा बावड़ियों में इस राजवंश के शिलालेख भी मिलते हैं। स्थानीय लोग इस नगर को अभिशप्त नगर मानते हैं और इसके विनाश का कारण एक तांत्रिक के श्राप को मानते हैं। भानगढ़ एक सुन्दर दर्शनीय स्थल है। पुराना अजबगढ़ भी उजड़ा शहर है, लेकिन उसके नजदीक ही नये अजबगढ़ ग्राम में बस्ती है तथा बड़ा जैन मंदिर भी है।

पारानगर जाने का मार्ग

वर्तमान के राजोरगढ़, काली घाटी, पारानगर (पाराशर) गाँव, नीलकंठ महादेव और नौगजा मंदिर ये सब प्राचीन पारानगर के ही हिस्से थे। नीलकंठ महादेव का मंदिर "नीलकंठ" के नाम से ही जाना जाता है। नीलकंठ जाने के दो मार्ग हैं। जीप द्वारा जाने पर अलवर से सिरसिका होते हुए जा सकते हैं। लेकिन अलवर से राजगढ़ तथा वहाँ से टहला होकर जाना ठीक रहता है। तीन किलोमीटर का अंतिम हिस्सा पहाड़ी वाला है तथा यह कच्चा भी है, अतः नीलकंठ जाने के लिए गाड़ी मजबूत होनी चाहिए। यह स्थान निर्जन सा ही है, ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है, अतः उसी दिन वापस आना पड़ता है। जयपुर से भानगढ़ और अजबगढ़ देखते हुए टहला होकर भी जा सकते हैं। टहला से आगे का मार्ग समान है। टहला से १० किमी., भानगढ़ से ४७ किमी. तथा अजबगढ़ से ३४ किमी. है। राजोर (राजोरगढ़) नौगजा से ६ किमी. पर है।

संदर्भ

१. "Paranagar (Alwar)" by Pupul Jayakar, "Marg" (Special issue on the monuments of Rajasthan), 1958-59.

२. "पारानगर का जैन पुरातत्त्व", डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, "जैन संदेश (शोधांक) २३ (२५ अगस्त १९६६), पृ.१०१-१०२/ "शोधादर्श-४७" जुलाई २००२

३. "राजोरगढ़ के शिलालेख", श्री ब्रह्मदत्त, "विनय" (अलवर अंक), १९६९ (संपादक डॉ. जयसिंह नीरज, प्रकाशक-राजर्षि कॉलेज, अलवर)

४. Personal letter from Dr. C. Margabandhu, Superintending Archaeologist, ASI, New Delhi dated 23-09-1986

५. "नीलकंठ-राजौरगढ़-श्री शांतिनाथ दि. जैन नौगजा मन्दिर", हरिशंकर गोयल, एडवोकेट, "अलवर जिले में जैन धर्म की धरोहर" (प्रकाशक- श्री दिगम्बर जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर प्रबन्ध समिति, अलवर), पृ.९०-९६, सन् २०२०

६. "राजस्थानी कवि ब्रह्मदेव के तीन ऐतिहासिक पद", डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल, "अनेकांत" वर्ष ४१, किरण २ (अप्रैल-जून, १९८८), पृ.१५-१६

७. व्यक्तिगत पत्र-श्री महावीर प्रसाद जैन (स्वतंत्रता सेनानी) रिटायर्ड थानेदार, दि. २७ नवम्बर १९८६

८. "जम्बूस्वामी चरित", पाण्डे राजमल्ल जी

९. "नीलकंठ के शांतिनाथ", अशोक कुमार जैन, "प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार" जनवरी-फरवरी, २००५

आभार

स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री महावीर प्रसाद जैन (रि. थानेदार), अलवर ने मुझे नौगजा के बारे में अनेक प्राथमिक जानकारियाँ दीं तथा साथ ही कुछ साहित्य भी उपलब्ध करवाया। अलवर के ही श्री खिल्लीमल जैन एडवोकेट के सुझाये मार्ग निर्देश के कारण हम फरवरी २०२० में नीलकंठ नौगजा की यात्रा कर सके तथा साथ ही इन्होंने भी कई जानकारियाँ प्रदान कीं। अतः मैं इन दोनों महानुभावों का बहुत-बहुत आभार मानता हूँ।

-डी-१९७, मोती मार्ग, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

मोबाइल 09925009499

हाड़ौती की जैन मूर्तिकला

❑ ललित शर्मा

मध्ययुग में हाड़ा राजपूत शासकों के प्राधान्य के कारण राजस्थान का दक्षिणी पूर्वी भूभाग हाड़ौती कहलाता था, यद्यपि वर्तमान में इस क्षेत्र को प्रशासनिक दृष्टि से हाड़ौती सम्भाग कहा जाता है। इसमें बूंदी, बांरा, कोटा, झालावाड़ जिले आते हैं। यह भूभाग पूर्व मध्ययुग से ही जैन धर्म एवं संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस अवधि में यहाँ निरन्तर अनेक जैन तीर्थंकरों की सुन्दर मूर्तियों से युक्त मंदिरों का निर्माण होता रहा, परन्तु इनका शोध की दृष्टि से आज तक विवेचन नहीं हो पाया। यद्यपि इस भूभाग में आज भी अनेक जैन मंदिर कलात्मक दृष्टि से न केवल सुन्दर हैं अपितु उनमें स्थापित तीर्थंकर मूर्तियाँ हमारे देश की अमूल्य सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर हैं। ज्ञातव्य है कि विगत दो दशकों में इस भूभाग में खोज एवं उत्खनन के दौरान अनेक दुर्लभ जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं, जो आज भी कोटा एवं झालावाड़ के राजकीय पुरातत्त्व संग्रहालयों में दर्शित है। इन सभी के अध्ययन से इस क्षेत्र में जैन धर्म की प्राचीनता एवं प्रभाव प्रमाणित होता है।

कोटा क्षेत्र में कोटा, अटरू, शेरगढ़, रामगढ़, बांरा, बून्दी क्षेत्र के नैनवा, केशवरायपाटन सहित झालावाड़ जिले के पचपहाड़, झालरापाटन, गागरोन, अकलेरा, चाँदखेड़ी आदि इस सम्भाग के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ से जैन धर्म की अमूल्य पुरा सामग्री मिली है, परन्तु इनका परिचयात्मक कला सर्वेक्षण न होने से यह विपुल धरोहर भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में आज तक भी अल्पज्ञात और अप्रकाशित है।

क्षेत्र में जैन धर्म का उक्त दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ ८वीं से १७वीं सदी के मध्य जैन संस्कृति खूब पुष्पित एवं पल्लवित हुई। श्राविकाओं का चित्ताकर्षक अंकन कला की दृष्टि से अनुपमेय है। इस मूर्ति से ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र ६वीं सदी से ही जैन धर्म के केन्द्र के रूप में उभरकर श्रमण संस्कृति का केन्द्र बन गया था। इस क्षेत्र के जैनाचार्य पद्मनन्दी ने उक्त काल में **'जम्बूदीप णण्णन्ति'** नामक जैन ग्रन्थ का कुशल सम्पादन कर इस क्षेत्र को गौरवान्वित किया था। इसी परम्परा में मूलसंघ के २३वें भट्टारक माघचन्द्र द्वितीय ने संवत् १०८३ में अपनी पीठ अवन्तिका (उज्जैन) से बांरा में स्थानान्तरित कर स्थापित की थी। **इस आशय का भी प्रमाण मिलता है कि बांरा भूभाग को लगभग १० महान् जैन भट्टारकों के इस गादी पर विराजने का गौरव प्राप्त है।** यहाँ के रामगढ़ में भण्डदेवरा का जैन मंदिर जैन मूर्तियों का अकूत खजाना है। यहाँ के तालाब के किनारे तीर्थंकर सुमतिनाथ, पुष्पदन्त, सुव्रतनाथ तथा पार्श्वनाथ की पद्मासनावस्था की कई सुन्दर मूर्तियाँ हैं।

संग्रहालय के संख्यांक ४६६ पर बांरा क्षेत्र के विलासगढ़ से प्राप्त ४७"x६" माप की ९वीं १०वीं सदी का प्रतिनिधित्व करने वाली रक्त पाषाण पर उत्कीर्ण एक जैन तीर्थंकर की मूर्ति आजानबाहु एवं कायोत्सर्ग मुद्रा की अवस्था में है। इसके छत्र पर गज युगल को घटाभिषेक करते हुए दर्शाया है। मूर्ति के परिकर में मालाधारी गंधर्व तथा पैरों के निकट चंवरधारी सेवकों का अंकन है। मूर्ति के नीचे की एक रथिका में अर्द्धसुखासन में पीठिका पर स्थापित यक्ष की मूर्ति के एक हाथ में बिजौरा तथा दूसरा हाथ अभयमुद्रा में है। यह लघुमूर्ति आकर्षक केश विन्यास तथा अनेक आभूषणों से युक्त है। विलासगढ़ देखने पर ज्ञात होता है कि यहाँ कई प्राचीन जैन मंदिरों के अवशेष हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि यहाँ जैन धर्म लोकप्रिय रूप में प्रसारित था। १२१८ ई. में रचित जिनदत्त चरित्र की प्रशस्ति में ऐसा भी उल्लेख प्राप्त होता है कि लक्ष्मण नामक एक व्यक्ति त्रिभुवनगिरी (तहनगढ़) का वासी था, वह मुस्लिम आक्रमणों के भय से उस स्थान को छोड़कर बिलासगढ़ आ गया था। यहाँ जिस श्रीधर श्रावक ने उसे आश्रय दिया उसी की प्रेरणा से उसने जिनदत्त चरित्र ग्रंथ की रचना उक्त सन् में की थी।

संग्रहालय में संख्याक ६२२ पर प्रदर्शित काकूनी से अवाप्त प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामी (ऋषभदेव) की १३३x६८ सेमी. माप की रक्त पाषाण पर निर्मित एक भव्य स्थानक मूर्ति है। इस मूर्ति के परिकर में चार अन्य तीर्थंकरों की पद्मासन एवं बद्धपद्मांजलि मुद्रा की मूर्तियों का अंकन है जबकि दोनों ओर एक-एक त्रिभंग मुद्रा में पद्महस्ता नारी का अंकन है। इन नारियों के आकर्षक केशों का विन्यास एवं शरीर पर धारित आभूषण जैन मूर्तिकला के सर्वोच्च कलात्मक भावों के प्रमाण माने जा सकते हैं। इन नारियों ने अपना एक-एक हाथ अपने उरू भाग पर रखा हुआ है। इनके नीचे बायीं ओर अद्धसुखासन में चतुर्भुज गौमुखी यक्ष तथा दाईं ओर चक्रेश्वरी देवी के तीन हाथों में से एक में चक्र व एक में बिजोरे फल का अंकन दृष्टव्य है। पीठिका पर चिह्न रूप में वृषभ की उपलब्धता महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है। जैन मूर्तिकला सम्बन्धी प्रतीकों के कोण से इन तीर्थंकरों की अन्यान्य पहचान के चिह्नों में इनके केश कन्धों तक आते हुए उकेरे गये हैं। मूर्ति विशेषज्ञों का ऐसा भी कथन है कि तपश्चर्या के पश्चात् इन्द्र ने उन्हें सभी केशों का लुंचन नहीं करने दिया था। इस कारण इन्हें पातरशना मुनि और तथा केशी कहा गया। तीर्थंकरों में प्रथम होने के कारण ये आदिनाथ भी कहे जाते हैं।

संग्रहालय में संख्यांक ६२० पर प्रदर्शित एक मूर्ति तीर्थंकर अजीतनाथ की है। काकूनी से अवाप्त रक्त पाषाण निर्मित यह मूर्ति १३६x६८ सेमी. माप वाली है। १२वीं सदी की इस सुन्दर मूर्ति में तीर्थंकर अजीतनाथ को एक चैत्यवृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा में दर्शाया गया है, जो बड़ी भावपूर्ण तपसाधना का अनुपमेय अंकन है। मूर्ति की पीठिका पर धर्मचक्र के नीचे गज का अंकन है। यद्यपि मूर्ति के दोनों हाथ व स्कन्ध के भाग भग्न हैं, परन्तु इसके बाद भी इसका कलात्मक निर्माण भाव कम नहीं आंका जा सकता है। मूर्ति के उर्ध्व परिकर भाग की प्रथम पंक्ति के अवलोकन करने पर ज्ञात होता है



कि इसके मुख्य ताक में मूलनायक के लांछन गज का अंकन है तथा इस चिह्न के दोनों ओर एक-एक जिन मूर्तियाँ ध्यानावस्था में उत्कीर्ण हैं। इनके दोनों ओर उड़ीयमान मालाधरों की मूर्तियाँ उकेरी हुई हैं। परिकर भाग की द्वितीय पंक्ति का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इसके मध्य में मृदंग वादक तथा उसके दायें बायें गजों का अंकन है। इन गजों के भी दायें बायें छोरों पर झल्लरी वादक तथा शंखनाद करते एक पुरुषाकृति है। मूलनायक के शीर्षभाग के दोनों छोरों पर कमलहस्ता देवियों का अंकन है। इनके दायें बायें दो कायोत्सर्ग मुद्रा की जिन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। तीर्थंकर अजीतनाथ की पीठिका पर चामरधारी के नीचे द्विहस्ता यक्ष-यक्षी की मूर्तियाँ हैं।

संग्रहालय के संख्यांक ५ पर प्रदर्शित अटरू से प्राप्त तीन पार्श्वनाथ की मूर्ति १३०X७७ सेमी. माप की हैं। १०वीं सदी की इस मूर्ति में मूलनायक कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं तथा इसमें सर्प की कुण्डलियों को चरणों तक उकेरा गया है। शीश पर सप्त सर्पफणों की छत्र छाया है। छत्र के ऊपरी परिकर भाग में भग्न मृदंग वादक एवं उसके दोनों ओर गजरोहियों का अंकन है। इसके आसपास मालाधारी पुरुष हैं। मूलनायक की सप्त सर्पफणरूपी छत्रावली के दायीं तथा बायीं ओर ताक बने हुए हैं, जिनमें ध्यानावस्था की जिन मूर्तियाँ हैं। आसन के निकट भग्न चंवरधारी एवं सप्तसर्पफणों से युक्त स्त्री-पुरुष का अंकन है।

इसी क्रम में उक्त स्थल से एक अन्य तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति संग्रहालय में प्रदर्शित है। ५०X८५ सेमी. माप की यह मूर्ति ध्यानावस्था में है। इसके शीश पर छत्ररूपी सप्तसर्पफणावलियाँ हैं। परिकर में भी ऊपर की ओर छत्र तथा उसके दोनों ओर गजों का अंकन है। इसके दोनों ओर चंवरधारी पुरुषाकृतियाँ हैं, साथ ही एक-एक ध्यानस्थ जिन मूर्तियों का अंकन है। पीठिका के मध्य में सरस्वती समान कोई देवी (सम्भवतः शांतिदेवी) तथा दायीं ओर गज व बायीं ओर सिंह का अंकन है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की बांरा जिले के रामगढ़ स्थल से अवाप्त ९वीं सदी की २१X१६ सेमी. माप की रक्त पाषाण निर्मित मूर्ति आजानबाहु रूप में प्रदर्शित है। मूलनायक के दोनों ओर दो चंवरधारी सेवक स्थानक मुद्रा में हैं, जबकि पादपीठिका पर सिंहाकृतियों सहित सुदर्शन चक्र का अंकन है। ज्ञातव्य है कि रामगढ़ नामक यह स्थल जैन धर्म के मेदवंशीय शासकों के काल में खूब फलाफूला। यहाँ ११वीं से १३वीं शती ई. की जैन तीर्थकर मूर्तियाँ बहुतायत में मिली हैं जो इस भूभाग में प्राचीन जैन मंदिरों के विशाल अस्तित्व व उनके विकसित प्रभाव की स्पष्ट सूचक मानी जा सकती है। इसी क्रम में अटरू से प्राप्त ९वीं सदी की उक्त संग्रहालय में प्रदर्शित ५२X३१ सेमी. माप की एक और मूर्ति तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है। इसमें मूलनायक के छत्र रूप में परम्परागत सर्पफणावलियाँ हैं जबकि मूलनायक स्थानक अवस्था में हैं। कुंचित केश एवं श्रीवत्स के चिह्न से युक्त इस मूर्ति के दोनों ओर छत्र के निकट गवाक्ष में अन्य तीर्थंकरों का अंकन है जिनकी मुद्रा पद्मावस्था एवं बद्धपद्मांजलि में है। इस मूर्ति के परिकर में चंवरधारी सेवक, मालाधारी गंधर्व, गजशार्दूल सहित त्रिभंग मुद्रा में पद्महस्ता नरनारियों का आकर्षक अंकन है। नीचे दायीं ओर अर्द्धसुखासन में विजोरा फल लिये यक्ष तथा बायीं ओर अपनी गोद में एक शिशु को लिए एक मातृका शिशुमति यक्षणी का अनुपम अंकन है। ये सभी माननीय रूपों की मूर्तियाँ आकर्षक केश विन्यास तथा विभिन्न आभूषणों से अलंकृत हैं।

बांरा जिले का पुरास्थल शेरगढ़ प्राचीनकाल में कोशवर्धन नाम से विख्यात रहा है। यहाँ के साक्ष्यों से यह प्रमाणित होता है कि यहाँ प्राचीनकाल से जैन धर्म का जो प्रभाव रहा वह आज भी जीवन्त है। कोटा के संग्रहालय में यहाँ के ११०५ ई. के एक संरक्षित अभिलेख का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि तीर्थंकर नेमीनाथ का महोत्सव यहाँ नये चैत्य में मनाया गया था। इस समारोह का संचालन वीरसेन ने किया था। यहाँ के एक अन्य संवत् ११९१ के शिलालेख में यह भी उल्लेख है कि खण्डेलवाल जैन श्रेष्ठि के पुत्रों द्वारा रत्नत्रय (तीर्थंकर शांतिनाथ कुंथुनाथ अरनाथ) की मूर्तियों का निर्माण किया गया। इसी क्रम में एक अन्य प्रभावोत्पादक मूर्ति सर्वतोभद्र की है। कुंचित केश युक्त यह मूर्ति ११X३८ सेमी. माप तथा ९वीं सदी की है। रक्त पाषाण पर निर्मित इस मूर्ति में जैन तीर्थंकर चारों दिशाओं में देखते हुए अत्यन्त सौम्य मुद्रा में खड़े हैं। तीर्थंकरों की लम्बवत् लटकती कानों की लोबें, घुटने के नीचे जाती भुजाएँ (जिनकी उंगलियाँ विशेष मुद्रा में हैं) हैं। प्रतीत होता है जैन धर्म के समवसरण भावों को ध्यान में रखकर यह मूर्ति निर्मित की गई होगी। सर्वतोभद्र की ऐसी मूर्तियों का अंकन ७वीं-८वीं सदी से प्रारम्भ हुआ माना जाता है। जैन धर्म में इस मूर्ति को सभी ओर से मंगलकारी माना जाता है।

संग्रहालय के संख्याक ६२५ पर प्रदर्शित एवं काकूनी से अवाप्त १२वीं सदी की १२२X८० सेमी. माप की रक्त पाषाण मूर्ति तीर्थंकर शांतिनाथ की है जो कायोत्सर्ग मुद्रा में है। मूर्ति के परिकर भाग में आसनस्थ उपासक, गज शार्दूल सहित श्रावक श्राविकाएँ तथा चंवरधारी सुन्दरियों का अंकन है। मूर्ति की पीठिका पर उत्कीर्ण लघु मूर्तियों में हाथ जोड़े श्रावक, अर्द्धसुखासन में चतुर्भुजी यक्ष-यक्षिणी तथा मध्य की रथिका में हिरण युगल का आकर्षक प्रेमालाप युक्त अंकन है। ज्ञातव्य कि बांरा जिले के सारथल कस्बे की परवन नदी के तट पर स्थित प्राचीन स्थल काकूनी अपने अनुपमेय स्थापत्य, कला, वास्तु तथा मूर्तिकला के लिये प्रसिद्ध रहा है। इस क्षेत्र की जैन मूर्तिकला में भव्यता के साथ-साथ सूक्ष्मता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यह पूरा क्षेत्र पूर्व में परमारों, प्रतिहारों तथा चौहान शासकों के अधीन रहा है। इसी स्थल से जैन धर्म की कुछ अन्य विशिष्ट मूर्तियाँ संग्रहालय में प्रदर्शित हैं जो लगभग ११वीं-१२वीं सदी की जैन मूर्तिकला का प्रतिनिधित्व करती हैं।

संग्रहालय के संख्यांक ५९२ पर प्रदर्शित १२०X६१० सेमी. माप की जैन पद्मावती देवी की मूर्ति प्रभावोत्पादक है। काकूनी से अवाप्त इस देवी को तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यक्षी व यक्ष धर्णेन्द्र की अर्धांगिनी माना जाता है। सप्तसर्पछत्र एवं आकर्षक जूड़े युक्त अनूठे

केश विन्यास के प्रभा मण्डल में षटभुजी देवी पद्मावती अपनी ग्रीवा, कटि प्रदेश तथा भुजाओं में अनेक सुन्दर आभूषण धारण किये है। ये आभूषण गलसटी, हार, हंसली व मुक्तामाल के रूप में है। देवी के कानों में कुण्डल व ओगनी (कान के ऊपरी लोल में) भुजाओं में बाजूबन्ध, टड्डा, कटि में करधनी तथा पावों में पायल का अंकन है। मूर्ति के शीर्ष भाग पर चैत्यवृक्ष का अंकन है जिसके ध्यान मुद्रा में आसनस्थ तीर्थंकर सम्भवनाथ (जिनका लांछन चिह्न रूप में अश्व है) का अंकन है। इनके नीचे दोनों छोरों पर ध्यानस्थ एवं पद्मासन व बद्धपद्मांजलि मुद्रा की पाँच व सप्त सर्पछत्रधारी तीर्थंकर पार्श्वनाथ की दो मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इस मूर्ति की पीठिका पर एक भग्न लेख है, उसका संवत् ११५६ ही पठन में आ पाया है।

संग्रहालय के क्रमांक ६२१ पर प्रदर्शित १२५X६५ सेमी. माप की रक्त पाषाण पर बनी तीर्थंकर विमलनाथ की मूर्ति १२वीं सदी की है। इसमें मूलनायक कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थानकावस्था में है। कमल पत्रों से सुसज्जित परिकर में दोनों ओर की रथिका में आसनस्थ एक-एक पुरुष व नारी की चतुर्भुजी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। परिकर के सर्वोपरि भाग में कुछ उपासकों को घटाभिषेक करते उत्कीर्ण किया गया है, जो अत्यन्त कलात्मक है। पैरों के समीप दोनों ओर तीन-तीन परिचारकों का अंकन है जिनमें से मध्य की एक नारी को जंघा पर हाथ रखे हुए चित्ताकर्षक अंकन है। मूलनायक की पाद पीठिका के मध्य में मालाधारी गंधर्वों के मध्य सुदर्शन चक्र और उसके नीचे शूकर का अंकन दिखाई देता है जो मूर्तिकला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। इसी क्रम में संख्याक ५३५ पर २०X१७ सेमी. माप की १२वीं सदी की जैन यक्षिणी का प्रदर्शन दृष्टव्य है। इसका शीश भाग इतना अधिक कलात्मक है कि इसमें आम्रलुम्बिनी युक्त परिकर के मध्य सूक्ष्म जैन तीर्थंकर का अंकन है, जो इसे जैन यक्षिणी प्रमाणित करता है। मूर्ति के केश विन्यास अत्यन्त आकर्षक हैं जबकि कानों में कुण्डलों का प्रभावी अंकन है।

संग्रहालय में प्रदर्शित बांरा से अवाप्त ११वीं सदी की तीर्थंकर महावीर स्वामी की १३२X७६ सेमी. माप की मूर्ति ध्यानमुद्रा में है। प्रभामण्डल युक्त इस मूर्ति का परिकर एवं शीशभाग जोड़ा गया प्रतीत होता है। मूर्ति की कोहनी से नीचे तक हाथ एवं घुटने से नीचे तक के पैर भग्न हैं। परिकर के शीश भाग पर कायोत्सर्ग मुद्रा में दो जैन मूर्तियों का अंकन है। इनके ठीक नीचे उड़ीयमान मालाधर उत्कीर्ण है। मूलनायक के दोनों ओर चंवरधारी मूर्तियाँ हैं। नीचे के आसन के समानान्तर दोनों ओर दो-दो जिन मूर्तियाँ हैं, जिनमें दो कायोत्सर्ग एवं दो ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण हैं। पीठिका पर मध्य में कीर्तिमुख व उसके दोनों ओर एक-एक सिंह का उत्कीर्णन है। पीठिका के दोनों छोरों पर द्विहस्त सामान्य लक्षणों वाले यक्ष-यक्षी की मूर्तियाँ हैं।

-जैकी स्टूडियो, १३-मंगलपुरा, झालावाड़ (राज.)
मोबाइल 09829896368



इतिहास, सत्य को उजागर करने के लिए लिखा व पढ़ा जाता है

❑ डॉ. सूरजमल बोबरा

कभी-कभी यह कहना भी गलत नहीं है कि क्रमशः सत्य विलुप्त होता जा रहा है। क्या यह चिंतनीय नहीं है?

इतिहास सत्य को उजागर करने के लिए पढ़ा और लिखा जाता है। इतिहास के विद्यार्थी को हर पल जो बीत चुका है उस पर दृष्टि रखना होती है। पहले तो जमीन में दबे पड़े या कुएँ, तालाबों में इधर-उधर घुस गये पुरावशेषों की ही खोज करना पड़ती थी, जो प्राकृतिक विपदाओं का परिणाम होते थे। पर जब से मनुष्य पढ़ा लिखा हुआ है और भिन्न-भिन्न धार्मिक मान्यताओं से उबलता हुआ हो गया है, तब से इन पुरावशेषों की खोज का दायरा कई गुना बड़ा हो गया है। मनुष्य ने कुटिलता वश, पुरावशेष यदि मूर्ति या शिल्प के रूप में हैं, तो उसे खण्डित कर दो। लिखे को मिटा दो, उसे कपड़े पहना दो, या श्रृंगारित कर दो। अन्य विचारों के साहित्य को मिटा दो, या अन्य विचारों में थोड़ा ऊँचा-नीचा कर अपना कहकर प्रचारित कर दो। इन क्रियाओं से भ्रम फैला दो। पढ़ने वाला उलझ जायेगा। अब इतिहासकार क्या करें? ऐसी ही कुछ सामने आई समस्याओं का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयत्न यहाँ किया गया है।

यह सब को स्पष्ट है और इतिहास सिद्ध है कि श्रमण जैन, वैदिक ब्राह्मणों से पूर्व, अस्तित्व में थे। पहले तो सब ऋषभ को मानने वाले भरतखंडवासी थे, किन्तु ऋग्वेद की ऋचाओं के वाचन (करीब ६५०० से ७००० ई. पूर्व) के बाद विचार भिन्नता बढ़ी और वेदानुयायी ब्राह्मण समूह और उनके मानने वाले बढ़ गये। दो फड़ हो गई। यहाँ से इतिहास के विद्यार्थी की कठिनाई बढ़ गई। ऋग्वेद वाचन से पहले की घटनाओं को हम भले ही फाइल पेड़ में बाँधकर रख दें पर जो सामने स्पष्ट है, उसे तो दोहरा लें। इस काल के तुरन्त बाद (६००० से ६५०० ई.पूर्व) में प्रतापी राम का जन्म हुआ और रामायण का कथानक अस्तित्व में आया। इस कथानक का तो विस्तार बहुत बड़ा है, पर दो ही घटनाओं का संदर्भ हम लेते हैं। राम का जन्म अयोध्या में हुआ। इसी कारण रामलला का मंदिर अयोध्या में था, इस मंदिर को बाबर के आदेश से (१५२८-२६ में) ध्वस्त कर मस्जिद में परिवर्तित कर दिया। राज्य बाबर मुसलमानों का था इसलिए मस्जिद को मान्यता दे दी गई और रामलला के इतिहास को ५०० वर्ष तक अमान्य रहना पड़ा। लंबी कश्मकश के पश्चात् रामलला का वनवास समाप्त हुआ और २०२० में न्यायिक निर्णय के अनुसार पुनः राम का विशाल मंदिर बन रहा है और मस्जिद अमान्य कर दी गई है।

पर इस विवरण में एक ऐतिहासिक तथ्य भुला दिया गया है कि रामलला के मंदिर के पूर्व उसी जगह एक श्रमण जैन मंदिर था। ऐसा हो सकता है क्योंकि जैन धर्म पुराना है। जैन पूजित राम भी यहीं जन्मे थे। इसी अयोध्या में जन्मे थे।

इस विवाद को टालने के लिए सरकार के पुरातत्त्व विभाग ने उत्खनन किया और मंदिर के स्तंभ वहाँ मिले जिन पर जैन प्रतीक मिले। इन्हें देख कर नया विवाद खड़ा न हो, इस आशय से उत्खनन बंद कर दिया गया। इसके बावजूद उसे प्राचीन मंदिर अवश्य कहा गया। यह वैदिक मंदिर था ऐसा भी नहीं कहा गया पर यह भी नहीं कहा गया कि ये जैन मंदिर था। देखें चित्र

(संदर्भ- क्या बाबरी मस्जिद मूलतः जैन मंदिर था ? लेखक प्रो. भागचन्द जैन भास्कर

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अंक -नवम्बर २०१६ पृष्ठ १३)

अब क्या करें? देश का वातावरण खराब करना नहीं, न्याय पालिका के सामने प्रश्न खड़ा करना नहीं। संख्या में कम राष्ट्रीय जैन करें तो क्या करें? राम तो एक ही है।

मुसलमानों और हिन्दुओं द्वारा जैन मंदिर तोड़कर अपने धार्मिक स्थल बनाने के कई उदाहरण हैं। मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ना और लूटना ये मुसलमान अपना धर्म समझते थे। सभी प्रमुख स्थानों में उन्होंने हिन्दू और जैन मंदिर तोड़े। उनके मलवे से उन्होंने मस्जिदें बना दीं। इसके कई ऐतिहासिक प्रमाण हैं। जैसे-

१. देवल मस्जिद, निजामाबाद- ६वीं सदी में मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा जैन मंदिर तोड़कर बनाई गई थी।

२. टीपू सुल्तान द्वारा केरल पर आक्रमण कर ध्वस्त किया गया जैन मंदिर गाँव पन्नमार (केरल) में है।

३. अजमेर में स्थित मस्जिद 'अढाई दिन का झोपड़ा' कुतुबद्दीन एबक ने जैन मंदिर तोड़कर बनाया था।

४. जामी मस्जिद खंभात जिला आणंद, अलाउद्दीन खिलजी द्वारा ई. १२६६ में, राजकुमारी सुदर्शना का जैन मंदिर तोड़कर बनाई गई थी। इसमें न भटककर हम मूल विषय पर आयें। हिन्दुओं द्वारा जैन मंदिरों के विनाश के भी ऐसे ही संदर्भ हैं। उन्हें दोहराकर विवाद पैदा नहीं करना चाहिए।

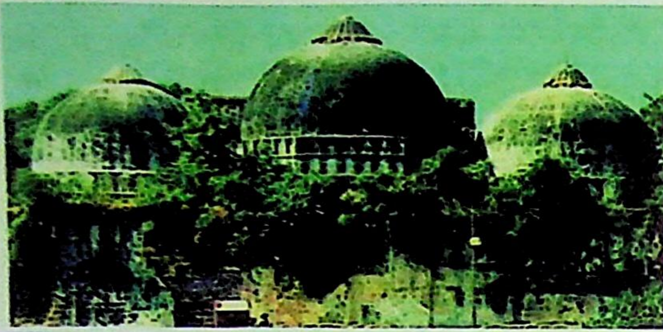
यहाँ स्मरण करना उचित होगा कि अयोध्या से संदर्भित एक आलेख इसी पत्रिका में छपा है।

अयोध्या (जुलाई २०२०) पृष्ठ संख्या १२, १३, १४, १५। इस 'अतुलनीय अयोध्या' आलेख में अयोध्या का अस्तित्व आदिनाथ से लेकर वर्तमान काल तक पहचानने का प्रयत्न किया गया है। मैं समझता हूँ अभी समय है कि सभी लोग उस दृष्टि से भी अयोध्या का इतिहास देखें और जैन दृष्टि से तथ्यों को संकलित कर नये रामलला के मंदिर के प्रवेश द्वार पर उन्हें एक शिलापट्ट पर अंकित कर लगवाना चाहिए, ताकि आगे भी लोग जानें कि यह मंदिर केवल रामलला का ही नहीं वरन् मर्यादा पुरुषोत्तम राम का भी है, जो अंत में श्री विष्णु में ही नहीं समाये थे, वरन् स्वसाधना कर, तपस्या कर, मरण को प्राप्त हुए थे और मांगीतुंगी से मोक्षगामी हुए थे। वह मंदिर रामलला का ही रहे, किन्तु जैन दृष्टिकोण को उजागर करने वाला एक शिलालेख बड़े अक्षरों में लिखा लगा होना चाहिए।

रामलला मंदिर से लगा हुआ पवनपुत्र हनुमान का मंदिर भी है। वैदिक चिंतन ने वानरवंशी हनुमान को वानर (बंदर) ही बना दिया, जो हनुमान के प्रति अन्याय है। जैन चिंतन के अनुसार, हनुमान

क्या बाबरी मस्जिद मूलतः जैन मन्दिर था ?

पुरातत्व निदेशक
❑ प्रोफेसर भागचन्द्र जैन 'भास्कर'





• यदि नहीं तो कोई बात नहीं - 'जय श्री रामलला के मंदिर की'
• यदि हाँ तो - तथ्य बताने वाला शिलापट्ट नवनिर्मित मंदिर के द्वार पर लगाया जाय - 'जय श्री मर्यादा पुरुषोत्तम राम की'



अंजनेरी- १०८ जैन मंदिर थे जहाँ...

नासिक-त्र्यंबकेश्वर मार्ग पर २२ किलोमीटर दूरी पर अंजनेरी गांव मौजूद है। जैन रामायण अनुसार हनुमान का जन्म अंजनेरी की पर्वत गुफा में हुआ था। उनकी माता के नाम से ही इस गांव को अंजनेरी एवं पर्वत को अंजनगिरी नाम पड़ा है। यहां किसी समय में १०८ जैन मंदिर थे। आज गांव एवं पहाड़ी पर भग्नावस्था में ११ जैन मंदिर शेष हैं। हेमाडपंथी पद्धति से बने इन मंदिरों में से ६ जैन मंदिरों को भारतीय पुरातत्व विभाग ने मान्यता दी है। अन्य २ मंदिर जैन देवी-देवता या यक्ष-यक्षिणी के होने की संभावना है। सभी मंदिरों में वेदी बनी हुई हैं। इन मंदिरों के आसपास जैन तीर्थंकरों की असंख्य कायोत्सर्ग एवं पद्मासन में मूर्तियां बिखरी पड़ी हैं। अनेक नक्षीकाम किये हुए खंभे, शिलाखण्ड, यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियां भी अस्त-व्यस्त पड़ी हुई हैं। १ मानस्तंभ के अवशेष भी दिखाई पड़ते हैं। १ मंदिर में संस्कृत भाषा में लगे ई.सं. ११४० के शिलालेख अनुसार अंजनेरी ग्राम में ई.सं. १०३६-१०४१ में चंद्रप्रभु तीर्थंकर का मंदिर बनाया गया था। महासामंत सेऊणदेव इन्होंने चंद्रप्रभु मंदिर के लिए दान देने का उल्लेख है। सन् १६७६ में अंजनेरी औरंगजेब के आधिपत्य में था तब यहां के जैन मंदिर ध्वस्त कर दिये गये थे। सन् १७०८ में अंजनेरी पर मराठा पेशवाओं का आधिपत्य हुआ तब इन मंदिरों के जीर्णोद्धार का प्रयास हुआ। इस तथ्य की पुष्टि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा भी की गई है।

↑ एक विनय युक्त, वैज्ञानिक, बलवान, तत्वदर्शी हनुमान भारत को चाहिए

पहली गुफा से कुछ सिढियाँ चढकर एवं थोडा चलकर आप ऊपर पहुँचते है। वहाँ एक गुफा में महाबली हनुमान की माता
अंजनीदेवी रहती थी वहीं हनुमानजी का जन्म हुआ था। इस गुफा में ३ फीट ऊँची आदिनाथ भगवान की प्रतिमा दिवार पर कोरी हुई
है। मंदिर की वेदी पर अद्वितीय पद्मासन में एक एवं आजु बाजु में २ कायोत्सर्ग अवस्थाओ में जिनप्रतिमा है। दूसरी गुफा के
प्रवेशद्वार पर अंबिका एवं चक्रेश्वरी की खडी मुर्ति है। इस गुफा में पार्श्वनाथ एवं शांतीनाथ तीर्थंकर की कायोत्सर्ग मुर्ती है।



पवनंजय-अंजना से जन्म लिये चरम शरीरी, परम शक्तिशाली, ज्ञानी विद्याधर वंशी (बिना पूँछ वाले) मानव थे। वे अंजनगिरी की गुफा में जन्मे थे। उन्होंने राम रावण युद्ध में महत्त्वपूर्ण सेनापति के समान कार्य किया था। अंजनगिरी की गुफा नासिक के निकट ही है। ८००० वर्ष बाद भी श्रमण चिंतन के अनुयायी आज भी अंजनेरी की गुफा में जन्मे हनुमान को पूज रहे हैं। हनुमान की माता अंजना सती, दुःखों में कई वर्षों तक जीती रही जैन उस नारी रत्न का वंदन कर रहे हैं। किन्तु उनमें इतनी जनसंख्या सामर्थ्य नहीं है कि वे कह सकें कि भाई हनुमान को अवश्य पूजो किन्तु पूंछ वाले बन्दर के रूप में नहीं। विश्व का जनमत बड़ी मुश्किल से इस मान्यता से बाहर निकला है कि मनुष्य के पूर्वज बंदर थे। उन्हें भी स्पष्ट हो गया है कि मनुष्य सीधे खड़े होता है और ऐसे मस्तिष्क का स्वामी है, जिसमें १००० अरब (१०० बिलियन) से अधिक ज्ञान तन्तु हैं। जिन्हें नाड़ी, संवेदन सूत्र और स्नायु भी कहा जाता है। इन ज्ञान तंतुओं में आपसी संदेश सतत चलता रहता है, कभी रुकता नहीं। मनुष्य की निर्णय क्षमता, प्रकृति के साथ संतुलन क्षमता, स्वयं के शरीर की क्षमता का विकास इस मस्तिष्क के साथ जुड़ा हुआ है। आकाश में उड़ने वाले साधनों का विकास करना, समुद्र में यात्रा कर लेना सब इसी क्षमता का व्यक्त रूप है। विद्याधर वानर वंशी हनुमान ऐसी ही क्षमताओं का धनी था तभी तो वह, वह सब कुछ कर सका, जो उसने किया। वानर की शरीर रचना से हनुमान की शरीर रचना से भिन्न थी। वे शुद्ध मनुष्य थे।

यह ज्ञात इतिहास है कि उत्तर भारत का मानव समूह अधिक दार्शनिक अवधारणाओं से भरा-पूरा था। यह एक संयोग था कि ऋषभ ने २०-२२ लाख वर्ष पूर्व, उनके गृह त्यागी बनने के बाद, विद्याधर वंशियों को जो दक्षिण में रहते थे, उनसे जुड़ाव बनाया था। नमि विनमी को राज्य देकर, समस्त दक्षिणांचल में रहने वाले विद्याधर वंशियों को उत्तर से जोड़ा गया था। उस समय भी दक्षिण के विद्याधर वंशी भौतिक ज्ञान-विज्ञान में उत्तर भारत वंशियों से उन्नत थे। उनके पास विमान थे, शस्त्रों में कई उन्नत शस्त्र थे। यह स्थिति रामकाल के पूर्व तक बनी रही, किन्तु संघर्ष का कोई कारण पैदा नहीं हुआ। हो सकता है उत्तर भारती अपने को श्रेष्ठ कहते रहे हों और दक्षिणी भारतीयों को जंगली कहते रहे हों। शायद वानर वंशी हनुमान को पूँछ वहीं से मिली जबकि वे मनुष्य जैसे मनुष्य थे। कथाकारों ने उन्हें पशु बना दिया था।

राम के पूर्व का, भारतवर्ष का सही इतिहास केवल श्रमण परंपरा ने सम्हाल कर रखा है। इसी कारण उसके नायक भी अत्यन्त तर्कसंगत है। राम की विजय यात्रा भी दक्षिण के विद्याधर वंशियों की क्षमता के कारण संभव हो पाई। उनके सहयोग से ही आकार ले पाई।

श्रमण पंरपरा ने कभी दक्षिण भारतीयों को, कपिरूप में पूँछ धारी नहीं माना। युगलिया समाज में भी कोई मनुष्य पूँछ धारी नहीं था। पूर्व भव की धारणाओं में भी मनुष्य को पूँछ वाला बंदर नहीं बताया गया है।

विद्याधरवंशियों से संबंध होने के बाद भरत चक्रवर्ती पहली बार दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व की ओर गये और सबसे घनिष्ठ संबंध स्थापित किये पर कहीं-पूँछ युक्त हनुमानवंशी नहीं थे। दस लाख वर्षों के बाद अजितनाथ व सगर चक्रवर्ती का काल आया जिसमें गंगावतरण हुआ। वहाँ भी कहीं पशुरूप वानर का मनुष्य समाज में अस्तित्व नहीं था। उसके बाद दस बारह लाख वर्ष गुजर गये। कई महापुरुष अवतरित हुए। उन्होंने अध्यात्म का प्रभाव मानव समूह को समझाया। शीतलनाथ के काल में विचार विभिन्नता के संकेत मिलते हैं। दान के स्वरूप को लेकर विचार भिन्नता उजागर होती है। आर्थिक परिवर्तन के संदेश भी मिलते हैं।

यह विचार भिन्नता निरन्तर बढ़ती रही, जिसने-विकृति, वैमनस्य, और विवाद को बढ़ाया, किन्तु मनुष्य-मनुष्य नहीं रहा, पशुरूप में नहीं बदला। ईक्ष्वाकुवंश में भगवान् मुनिसुव्रत के काल में विजय नामका एक राजा हुआ। उसके वंश में सुंदर, कीर्तिधर, सुकौशल, हिरण्य रुचिनधुष, सौदास, सिंहस्थ आदि राजा हुए। इसी वंश में हिरण्य कश्यप हुआ। उसके पुंजस्थल, कुकुत्सथ और उसके रघु हुआ। उससे ही रघुवंश चला। रघु से अनरण्य नाम का पुत्र हुआ। अनरण्य की रानी पृथ्वी मती थी। उनके दो पुत्र हुए दशरथ और अनन्त रथ। अनन्त रथ तो अपने पिता के साथ संन्यास लेकर मुनि हो गया और राज्याधिकार दशरथ को प्राप्त हुए। राम उन्हीं दशरथ के पुत्र थे, चार भाईयों में सबसे बड़े। उसके बाद की कहानी सबको पता है।

उसी समय नारद का अस्तित्व भी हुआ। एक विचारों को जोड़ने, तोड़ने, मोड़ने वाला व्यक्तित्व। नारद को पहचानना भी कथा शिल्पियों की बड़ी योग्यता थी।

भरत क्षेत्र के मध्य में विजयार्ध नाम का एक विशाल पर्वत था जो अब भी है। अलग नाम से पहचाना जाने वाला उसकी उत्तर श्रेणी और दक्षिण श्रेणी, दो श्रेणियाँ थीं। उत्तर श्रेणी की राजधानी अलकावती और दक्षिण श्रेणी की स्थनपुर थी। इन श्रेणियों में विद्याधरों का निवास था। इनकी कई जातियाँ थीं, जैसे राक्षस, वानर, ऋक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि। यह सभी अपने ज्ञान विज्ञान से युक्त होने के कारण, उत्तर भारतीयों को भूमि गोचरीय कहते थे और अपने आपको श्रेष्ठ मानते थे। वे आकाश मार्ग से जाने-आने में सक्षम थे। श्रमण परम्परा के अनुयायी थे।

इसके विपरीत उत्तर भारतीय अपने आपको दार्शनिक और उच्च मानवीय मूल्यों का स्वामी मानते थे और विद्याधर वंशियों को हलका मानते थे। संभवतः इसी कारण वानर वंशी हनुमान को उत्तर भारतीयों द्वारा वानर (बंदर) ही बना दिया गया।

विजयार्ध की दक्षिण श्रेणी में श्रीकण्ठ का राज्य था। उस द्वीप में वानर बहुत अधिक थे, इसलिए वे वानर वंशी कहलाये। उसी के वंश में अमर प्रभ राजा हुए। उसने अपनी ध्वजा, मुकुट, छत्र, तोरण और द्वारों पर वानरों के चिह्न खुदवा दिये और वानर वंश विख्यात हो गया। राक्षस और वानर वंशियों में बड़ा प्रेम भाव था।

राक्षस कुल में रावण का जन्म हुआ और वानर वंश में हनुमान का जन्म हुआ। सीता हरण के पूर्व रावण, हनुमान का बहुत आदर करते थे। हनुमान अत्यन्त सुन्दर, बलवान और बुद्धिमान पुरुष थे। हनुमान ने रावण को कई युद्धों में सहयोग दिया था।

क्या राम के इस परम भक्त हनुमान को उसकी उचित पर्याय

नहीं दे दी जानी चाहिए ? हनुमान को बंदर और रावण को दस सिरवाला (दशानन) राक्षस प्रतिपादित कर हमने, उत्तर भारतीयों ने अपने आपको श्रेष्ठ प्रतिपादित कर दिया हो, किन्तु तथ्यपरक इतिहास को खड़ा करने के दायित्व से हमने मुँह मोड़ लिया।

क्या हो गया जैन मंदिर को रामलला का मंदिर बना देने से और रामलला के मंदिर को तोड़ने और उस पर बाबरी मस्जिद बना देने से ? केवल इतना ही हुआ होगा कि उस समय मंदिर और मस्जिद बनाने वालों के भौतिक सामर्थ्य की प्रशंसा हुई हो, पर ऐसा तो नहीं हुआ कि जैन धर्म का आत्मा आधारित चिंतन समाप्त हो गया हो, या क्रिया कांड आधारित हिन्दू धर्म समाप्त हो गया हो और इस्लाम अजर अमर हो गया हो। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। थोड़े समय उस कार्य को सम्मान व प्रशंसा मिली हो पर कोई भौतिक निर्माण अजर अमर नहीं हो गया।

यह सत्य रामलला का नवीन भवन निर्माण करते समय भी हमें मन और मस्तिष्क में जीवित रखना चाहिए। इतिहास की धारा को हमें स्वीकार करना चाहिये।

रामलला का मंदिर पुनः बनना, मुसलमानों की नासमझी का प्रमाण हो सकता है व हिन्दू क्षमता का पुनर्जीवीकरण हो सकता है पर इतिहास तो चाहेगा कि जैन, हिंदू और इस्लाम की गतिविधियों को एक जगह शिलालेख में दिखाया जाये ताकि यह प्रमाण रहे कि २१वीं सदी का भारत तार्किक व धार्मिक उड़ानों का समदर्शी था।

हमें यह तथ्य आत्मसात करना होगा कि ऋषभ, राम और बाबर समय के चले कदम थे। आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणायें पता नहीं कौन सा कदम हो जाये पर वह भी काल का चला एक कदम ही होगा। पता नहीं इसके बाद का काल मानव को किस ओर मोड़ने का प्रयत्न करे इसके लिए हमें आग्रहों से मुक्त, ज्ञान से युक्त खुली दृष्टि रखना होगी। स्मरण रहे मानव न बंदर है न राक्षस है, वह तो प्रकृति प्रदत्त क्षमतावान मस्तिष्क का स्वामी है।

इतिहास के खुले द्वार उस मस्तिष्क का अभूतपूर्व ग्राफ होगा।

प्रस्तावित शिलालेख की विषय वस्तु निम्न प्रकार हो सकती है-

अयोध्या, ज्ञान भारतीय सभ्यता का, उसके विकास का प्रथम पायदान है।

ऋषभदेव से लेकर श्रीराम तक कई कर्म, आध्यात्म व मानवता के समर्थक, समदर्शी महापुरुषों ने यहीं जन्म लिया और इसे ही राजधानी बनाकर भारत व विश्व के मानवता प्रेमी राष्ट्रों पर भावनात्मक राज्य किया।

अनेकान्त व प्राणिमात्र के प्रति प्रेम व सबका विकास उनका लक्ष्य था।

मूलतः जैन मंदिर, बाद में बने राम मंदिर को ध्वस्त कर उसी स्थान पर सन् १५२८-२६ में बाबरी मस्जिद का निर्माण धार्मिक उन्माद से प्रेरित होकर किया गया। यह इतिहास है।

ऐतिहासिक तथ्यों से यह प्रमाणित होने के बाद कि मूलतः इस स्थान पर राम का मंदिर था, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि इस स्थान पर केवल राम मंदिर ही बनाया जा सकता है।

तदनुसार यह राम मंदिर-जैन धर्म व वैदिक धर्म के आदेशों को समेटे हुए विश्व को धार्मिक समन्वय का संदेश देता है।

धर्म, युद्ध का कारण नहीं होना चाहिए।

-ज्ञानोदय फाउण्डेशन, ६/२, स्नेहलतागंज, इन्दौर (म.प्र.)
मोबाइल : 09685991565

पृष्ठ १६ का शेष...(ग्वालियर के गुजरी महल पुरातत्व संग्रहालय की प्रतिमायें)

''पंचास्तिकाय'' टीका की प्रति करवायी।

विक्रम संवत् १४६७ में पांडवपुराण भट्टारक यशकीर्ति ने लिखा और १५०० में हरिवंशपुराण की रचना अपभ्रंश भाषा में की गईं, इन्होंने ही जिनरात्री कथा, रविव्रत कथा और चंद्रप्रभ चरित आदि ग्रन्थ भी रचे। १५३१ विक्रम संवत् में पद्मसिंह ने महाकवि पुष्पदंत की अमरकृति आदिपुराण की एक लाख प्रतिलिपियाँ तैयार कराके विभिन्न मंदिरों में भेजी थीं। संवत् १५५८ में गोपाचल दुर्ग में भट्टारक सोमकीर्ति और भट्टारक विजयसेन के शिष्य ने षट्कर्मोपदेश की प्रतिलिपि कराई। संवत् १५६६ में गोपाचल में श्रावक सिरिमल के पुत्र चतरु ने ४४ पद्यों में नेमीश्वर गीत की रचना की थी।

ग्वालियर काष्ठासंघ माथुरगच्छ का भट्टारकपीठ था। मूर्तिलेखों में इस संघ के साथ काष्ठासंघ माथुरान्वय बलात्कार गण, सरस्वती गच्छ का प्रयोग मिलता है। शाखा के प्रारम्भ के भट्टारक माधवसेन थे उनके दो शिष्य, उद्धरसेन और विजयसेन की शिष्य परंपरा में देवसेन, विमलसेन, धर्मसेन, भावसेन, सहस्रकीर्ति, गुणकीर्ति, यशकीर्ति, मलयकीर्ति, गुणभद्र और गुणचंद्र भट्टारक हुए।

माधवसेन के दूसरे शिष्य विजयसेन से दूसरी परंपरा प्रारम्भ हुई। इस परंपरा में विजयसेन, नयसेन, श्रेयांससेन, अनन्तकीर्ति, कमल कीर्ति, क्षेत्रकीर्ति, हेमकीर्ति एवं कमलकीर्ति हुए। ग्वालियर के इन भट्टारकों का अपने समय में राजा और प्रजा दोनों पर अद्भुत प्रभाव था। उन्होंने अनेक मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण कराया, अनेक भट्टारकों ने शास्त्र लिखे एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार कराई।

ग्वालियर जनपद के प्रतीक स्वरूप गोपाचल दुर्ग पर किये गये जैन कलात्मक उपक्रमों का सर्वेक्षण करने से एक बात स्पष्ट हो गई कि यह जैन सारस्वत साधना का एक महत्त्वपूर्ण पीठ था जहाँ जैन मंदिरों व मूर्तियों का समराधन किया गया और तीर्थंकरों की आराधना व आदरांजलियाँ मूर्ति प्रकल्पन द्वारा समर्पित की गई। राजवंशों ने उन जैन कलावतों को प्रश्रय प्रोत्साहन दिया व जैनग्रंथों व जैनशिल्प का प्रणयन व निर्माण कार्य संपन्न हुआ। यह सांस्कृतिक धरोहर हमारे आज के लिए वरदान है। उसे पुनः पुनः याद कर हम अपने प्राचीन शास्त्रकारों एवं भट्टारकों के औदार्य व अनुकंपा को स्मरण कर स्फूर्ति, बल ओज व मेधा प्राप्त करते हैं।



चाँदपुर-जहाजपुर (ललितपुर, उ.प्र.) का प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमाएँ

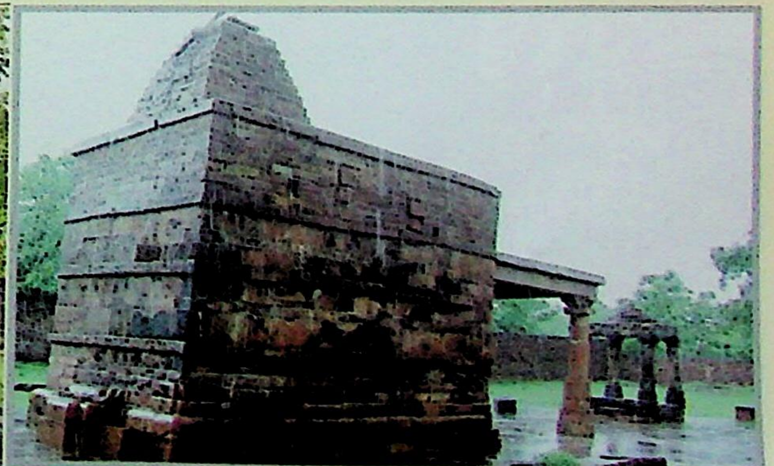
पुरातत्त्वविदों और इतिहासकारों के लिए बुंदेलखण्ड क्षेत्र सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र में प्रचुर पुरातत्त्व सम्पदा और अनेक प्राचीन जैन और हिन्दू मंदिर पाये गए हैं जो कि समर्पण, भक्ति, स्थापत्य और मूर्ति निर्माण कला के विकास की गाथा गाते हैं। हिन्दू और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार इस काल की मुख्य उपलब्धि कही जा सकती है। चंदेल राजाओं ने भी जैन धर्म को समान प्रश्रय दिया एवं धार्मिक सहिष्णुता का परिचय दिया। जैन कला और स्थापत्य का विकास बुंदेलखण्ड क्षेत्र में जैन व्यापारियों और शासकों के सान्निध्य में हुआ।





चाँदपुर ग्राम उत्तर प्रदेश राज्य के ललितपुर जिले में स्थित है। यह ग्राम पुरातत्त्व और अवशेषों के लिए विख्यात है। चाँदपुर में पाँच मंदिर समूह पाये गए हैं जो कि जैन और हिन्दू धर्म से संबंधित हैं। यह स्थान देवगढ़ से करीब १२ किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित है और देवगढ़ से धौर्रा जाने वाली सड़क से लगभग १ किलोमीटर अंदर स्थित है। यह ग्राम वीराने में स्थित होकर झाँसी-मुंबई रेलमार्ग के पास में स्थित है। निकटवर्ती रेलवे स्टेशन धौर्रा ५ किमी. की दूरी पर है, तथा जहाजपुर बस स्टैण्ड की दूरी २ किमी. है।





जैन मंदिर समूह चाँदपुर ग्राम से लगभग आधा किमी. बाहर दक्षिण पूर्व दिशा में झाँसी-मुंबई रेल लाइन के पास स्थित है। क्षेत्र लगभग वीरान जगह स्थित है, कुछ झोपड़ियाँ और कच्चे मकान नजर आते हैं। यहाँ कोई जैन परिवार नहीं रहता है। जैन मंदिर समूह में कुछ प्राचीन जैन मंदिर, मूर्तियाँ, सरदल, पुरातत्त्व अवशेष पाये गए हैं। एक जेन मंदिर पूरी तरह से सही सलामत अवस्था में है, जबकि कुछ मंदिर के मंडप और अवशेष ही बचे हैं। जैन मंदिर में ११वीं शताब्दी की सोलहवें तीर्थंकर शांतिनाथ प्रभु की १५ फीट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर का प्रवेश द्वार काफी छोटा है जहाँ झुककर ही प्रवेश किया जा सकता है। अंदर से मंदिर में शांतिनाथ प्रभु के दर्शन होते हैं। शांतिनाथ प्रभु के चेहरे पर सौम्यता और शांति की झलक दिखाई पड़ती है। प्रभु शांतिनाथ की भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हैं और दायां हाथ खंडित अवस्था में है। प्रभु के दोनों तरफ कुछ जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं, संभवतः मध्यकालीन मुस्लिम आक्रमणकारियों ने खंडित कर दिया है। ये छोटी जैन मूर्तियाँ खड्गासन अवस्था में ध्यानरत हैं इनके शीश खंडित कर दिए गए हैं। मंदिर की बायीं दीवार पर कुछ जैन मूर्तियाँ पद्मासन अवस्था में ध्यानरत हैं और कुछ मूर्तियाँ खड्गासन अवस्था में सीधी रेखा में उकेरी गयी है। मंदिर के अंदर मूलनायक मूर्ति के पास जिन शासन देवी की मूर्ति भी उकेरी गयी है। पूरा जैन मंदिर परिसर ही जैन अवशेषों, खंडित मूर्तियों, सरदलों और कलाकृतियों से अटा पड़ा है। कुछ खंडित जैन मूर्तियों को परिसर और खंडित मंडप की दीवार के सहारे रखा गया है। अधिकतर मूर्तियों का निर्माण लाल पत्थर से हुआ है जो कि बलुआ पत्थर है और आसानी से मिलने की वजह से बहुतायत से उपयोग किया गया है।



इस स्थान के पुरातत्त्व महत्त्व को देखते हुए कई विद्वानों और पुरातत्त्वविदों ने इसे अपनी किताबों में स्थान दिया है। यहाँ मंदिर के बाहरी दीवार पर यक्षी अम्बिका, कुबेर यक्ष की मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं जो कि पुरातात्त्विक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यक्षी अम्बिका और यक्ष कुबेर की प्रतिमाएँ लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईस्वी की हैं। यक्षी अम्बिका की प्रतिमा द्विभुजा के रूप में निरूपित की गयी है जिसके वाम भुजा में शिशु का निरूपण किया गया है साथ ही दायें हाथ में आम्र लुम्बी निरूपित है। यक्षी अम्बिका आम के वृक्ष के नीचे ललितासन में निरूपित की गयी है। यक्षी अम्बिका के आसन के नीचे उनका वाहन सिंह निरूपित है। यक्षी अम्बिका के दायें भाग में यक्ष कुबेर का निरूपण किया गया है जो कि ललितासन में अवस्थित है। यक्ष-यक्षिणी के साथ भक्त प्रतिमाओं का भी निरूपण किया गया है। यक्षी अम्बिका का उल्लेख डॉ. मारुति नंदन प्रसाद तिवारी ने अपनी पुस्तक में किया है। यहाँ स्थित हिन्दू मंदिरों में सहस्र लिंगेश्वर और विष्णु मंदिर दर्शनीय है। इस मंदिर के आसपास और भी कई इमारतों, मंदिरों, स्तूपों और बावड़ियों के अवशेष बिखरे पड़े हैं, जिन्हें पुरातत्त्व विभाग सहेजने का प्रयत्न कर रहा है।







यहाँ पर भी पुरातत्त्व विभाग का बोर्ड लगा हुआ है जो कि इस स्थान के पुरातत्त्व महत्त्व को घोषित करती है, परन्तु इस स्थान की सुरक्षा के लिए उनकी ओर से कोई चौकीदार मौजूद नहीं है। पास ही में एक धर्मशाला भवन भी बना हुआ है जिसका संचालन ललितपुर की जैन समाज के द्वारा किया जाता है। यूँ तो ये मंदिर पुरातत्त्व विभाग की देखरेख में है, किन्तु यदि कहें कि जैन समाज ही इस स्थान की देखरेख कर रही है तो गलत नहीं होगा। इस स्थान की पुरातत्त्व सम्पदा की सुरक्षा और संरक्षण के लिए ध्यान देने की जरूरत है।

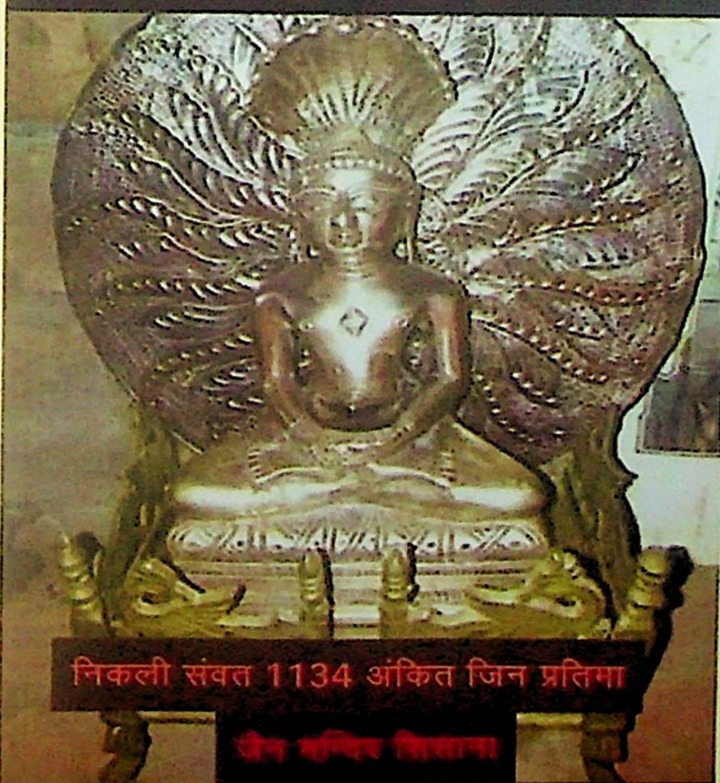




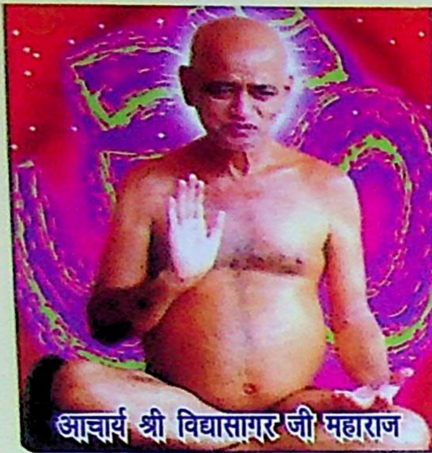
ललितपुर की जैन समाज ने क्षेत्र के विकास के लिए अनेक योजनायें घोषित की हैं। मंदिर समिति द्वारा इसी मंदिर के पास रेलवे लाइन से कुछ दूरी पर छह एकड़ जमीन भी खरीदी गई है। कुछ वर्ष पहले श्रीरणछोरधाम के पास बेतवा नदी से निकली श्रेयांसनाथ प्रभु की प्राचीन प्रतिमा को लेकर यहाँ एक भव्य मंदिर बनाने की योजना है। पुरातत्त्व विभाग के नियमों के अनुरूप मंदिर की स्थापना की जाएगी। इसके अलावा शांतिनाथ भगवान् की लगभग २१ फुट ऊँची नवीन मूर्ति भी स्थापित होगी। यात्रियों के लिए धर्मशाला, आश्रम के साथ शिक्षा व स्वास्थ्य की व्यवस्था होगी। १ या २ वर्ष पूर्व यहाँ एक जैन आचार्य ने भी चातुर्मास किया था, जिससे क्षेत्र की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। क्षेत्र का प्रचार-प्रसार होना चाहिए और आसपास के तीर्थों में पोस्टर आदि लगाने चाहिए। कृपया आप अधिक से अधिक संख्या में इस स्थान के दर्शन कीजिए जब भी आप ललितपुर या देवगढ़ पधारें और स्थानीय ललितपुर के लोगों को तो सप्ताह में या महीने में या कभी-कभी जाते रहना चाहिए। हम सभी को सहयोग करना चाहिए इस क्षेत्र के विकास के लिए और ऐसे ही कई क्षेत्रों के विकास के लिए।

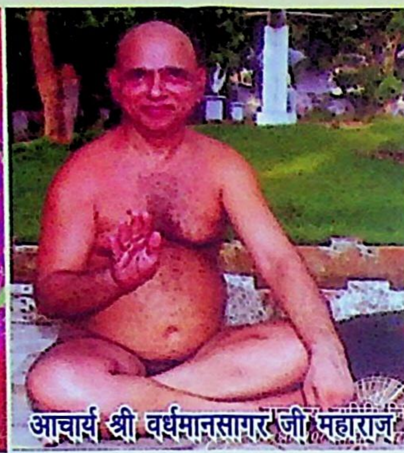
-मनीष जैन, उंदयपुर (राज.) मोबाइल : 09461872124

300 साल बाद हुई थी देव भुमि कि खुदाई

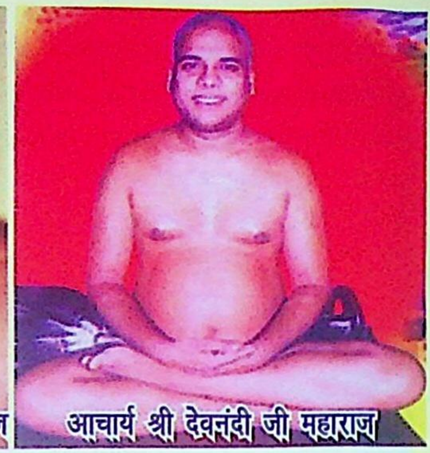


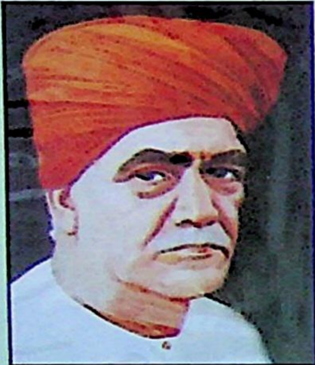
निकली संवत 1134 अंकित जिन प्रतिमा


आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज


आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज


आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

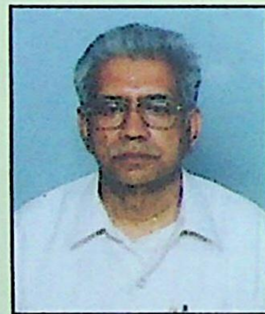

आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज


स्व. श्री हरखचंद सेठी
(पिता जी)

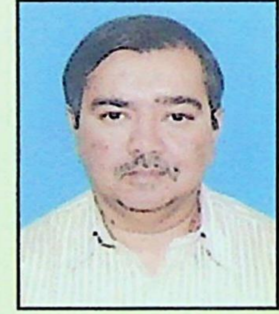
स्व. सोहनी देवी सेठी
निर्मल कुमार सेठी
हुलाशचंद सेठी,
महावीर प्रसाद सेठी,
स्व. दिनेश कुमार सेठी


स्व. सोहनी देवी सेठी
(माता जी)


श्री निर्मल कुमार सेठी
दिल्ली


श्री हुलासचंद सेठी
तिनसुकिया


श्री महावीर प्रसाद सेठी
सिल्चर


स्व. श्री दिनेश कुमार सेठी
दिल्ली

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

सेठी ट्रस्ट गुवाहाटी/दिल्ली

हरकचंद निर्मल कुमार जैन चेरिटेबुल ट्रस्ट सीतापुर

DELHI OFFICE :

1506, Modi Tower, 98, Nehru Place,
New Delhi-110019 Ph.: (Off.) 011-26293824, 41618226 Fax : 91-11-26470895
(Resi.) 011-29552219 Fax: 91-11-260678777

प्राचीन मंदिरों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई

प्रसिद्ध बांधवगढ़ किले (उमरिया) जिला मध्य प्रदेश में स्थित प्रसिद्ध बांधवगढ़ रिजर्व नेशनल पार्क में प्राचीन पुरातत्व अवशेषों में यह खड्गासन प्राचीन प्रतिमा त्रिछत्र युक्त चौबीसवें जैन तीर्थंकर महावीर भगवान की जीवंत प्रतिमा है। रामायणकालीन माने जाने वाले किले के उत्तरी हिस्से की गुफाओं की खुदाई से प्रथम शताब्दी के ब्राम्ही अभिलेख प्राप्त हुये हैं।





छत्तीसगढ़ के रतनपुर (विलासपुर) में स्थित पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित ११वीं सदी के प्रसिद्ध प्राचीन माँ महामाया मंदिर प्रांगण में प्राचीन खड्गासन जैन तीर्थंकर प्रतिमा और प्राचीन जैन मंदिर के लिंटल व पिलर पर पद्मासन जैन तीर्थंकर प्रतिमा होने से इस मंदिर के आसपास ११वीं सदी के पूर्व में भी विशाल प्राचीन जैन मंदिर के प्रमाण।









निवेदक- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

निर्मल कुमार जैन सेठी
अध्यक्ष
09891029717

राजकुमार जैन सेठी
महामंत्री
09339826125

कमल कुमार जैन रांवका
वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री
09335920972

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा नवम्बर माह में उड़ीसा, गुजरात एवं केरल संभाग के पदाधिकारी मनोनीत किये गये

स्वागत है सभी नये पदाधिकारियों एवं सहयोगीगणों का


श्री दिनेशकुमार जैन
अध्यक्ष-उड़ीसा


श्री कमलकुमार बाकलीवाल
कार्याध्यक्ष-उड़ीसा


श्री राजकुमार छाबड़ा
महामंत्री-उड़ीसा


श्री रवीन्द्र कुमार जैन
मंत्री-उड़ीसा


श्री आर.सी. गांधी
संरक्षक-गुजरात


श्री सौभाग्यमल कटारिया
संरक्षक-गुजरात


श्री श्रीचंद गंगवाल
संयोजक-गुजरात


श्री राकेशकुमार अजमेरा
संयोजक-गांधीधाम


श्री अजयकुमार संघई
संयोजक-सुरेन्द्रनगर


शाह आशीष वीरचंद
संयोजक-व्यारा ग्राम


श्री अनिल बड़जात्या
संयोजक-भावनगर


श्री कुमारपाल मनहरलाल शाह
सह संयोजक-भावनगर


श्री महेन्द्र कुमार
संयोजक-केरल


श्री जयकीर्ति ए.डी.
संयोजक-केरल


श्री महेश ए.डी.
संयोजक-केरल


श्री विजय पद्मन
संयोजक-केरल


श्रीमती वनमाला सनतकुमार
संयोजिका-केरल


श्रीमती सुनीता सुकेश
संयोजिका-केरल


श्रीमती अनीता नलिनकुमार
संयोजिका-केरल


श्री नयननंदा ए.वाई.
संयोजक-केरल



श्रीमती रीगल कोटड़िया जैन, धर्मपत्नी श्री अमित कोछाल जैन सुपुत्री श्री वीरेन्द्र कुमार कोटड़िया जैन, उदयपुर (राज.) वह अल्टोस्टार नेटवर्क्स, बैंगलोर में प्रिंसिपल इंजीनियर के रूप में कार्यरत् हैं। अमित जी कोछाल सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमार कोछाल जैन स्टैण्डर्ड चार्टर्ड बैंक बैंगलोर में सीनियर मैनेजर हैं ने प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ ११ हजार रुपये प्रदानकर विशिष्ट सदस्य बनकर खुशी जाहिर की है। तीर्थ संरक्षिणी महासभा परिवार आपका आभार प्रकट करता हुआ आपके भवि य की मंगलमय कामना करता है।



श्री एस.सी. सेठी, दिल्ली



आपने प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ १० लाख रुपये की राशि प्रदानकर तीर्थ संरक्षिणी महासभा की 'वरिष्ठ संरक्षक' की सदस्यता ग्रहण की है एतदर्थ धन्यवाद।

श्री नवरतन जैन, चंडीगढ़



तीर्थ संरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय संयोजक एवं सदस्यता विकास उपसमिति के महामंत्री श्री नवरतन जैन, चंडीगढ़ (पंजाब) के निवासी हैं। आपको चंडीगढ़, सम्पूर्ण पंजाब एवं हिमांचल प्रदेश की जिम्मेदारी सौंपी गई थी तब से नियमित रूप से गुल्लक योजना एवं तीर्थ जीर्णोद्धार के अन्तर्गत सराहनीय योगदान आप द्वारा प्राप्त हो रहा है। तीर्थ संरक्षिणी महासभा परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत आभार एवं साधुवाद।

श्री गोवर्धनलाल जैन, भींडर



श्री गोवर्धनलाल जैन एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कुंतादेवी जैन भींडर, जिला-उदयपुर (राज.) द्वारा प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ १ लाख रुपये की राशि प्रदानकर **'संरक्षक सदस्यता'** ग्रहण की है एतदर्थ धन्यवाद।

श्री सुरेश कुमार जैन, एडवोकेट सोनीपत (हरियाणा)



आप श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। आपने प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ २५ हजार रुपये की राशि प्रदानकर **'सम्मानित सदस्यता'** ग्रहण की है एतदर्थ धन्यवाद।

कु. तान्या जैन, पंजाब



आप श्री रजनीश जैन, जिराकपुर (पंजाब) की सुपुत्री हैं। आपने दिनांक २८ नवम्बर, २०२० को अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ ११ हजार रुपये की राशि प्रदानकर **'विशिष्ट सदस्यता'** ग्रहण की है एतदर्थ धन्यवाद।

स्व. प्रेमचंद जैन, फागी



स्व. प्रेमचंद जैन (बावड़ी वाले) फागी, जिला जयपुर (राज.) की पुण्य स्मृति में श्री महेन्द्रकुमार सुरेन्द्रकुमार जैन व परिवारीजनों द्वारा प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ ११ हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

श्रीमती नीलू जैन, चंडीगढ़



श्रीमती नीलू जैन धर्मपत्नी श्री नीरज जैन, चंडीगढ़ (पंजाब) द्वारा प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार सहायतार्थ ५१ सौ रुपये की राशि प्रदानकर **'आजीवन सदस्यता'** ग्रहण की है एतदर्थ धन्यवाद। महासभा परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत आभार।

मल्हार बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में जैन मूर्तियों का रूपांतरण



श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

(दिनांक ०१-०८-२०२० से ३०-०६-२०२० तक समाज के महानुभावों से प्राप्त दानराशि का विवरण)

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
01.	श्री अमित जैन पियूष जैन, प्रद्युम्न भवन, करोलबाग, नई दिल्ली	1,008.00
02.	श्री अमित जैन पियूष जैन, प्रद्युम्न भवन, करोलबाग, नई दिल्ली	1,008.00
	श्री राजकुमार सेठी, कोलकाता (प.बं.) द्वारा 1,43,800/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
03.	परिचित सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
04.	परिमित सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
05.	अतिशय सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
06.	अभिषेक सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
07.	श्रीमती प्रेमलता पांड्या, कूचबिहार (प.बंगाल)	2,000.00
08.	श्री सौरभ जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
09.	श्रीमती अनामिका जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
10.	सिविशा जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
11.	सावदर्शी जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
12.	श्री संदीप कुमार जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
13.	श्री अशोक कुमार बगड़ा, गुवाहाटी (असम)	2,000.00
14.	श्री महिपाल पाटनी, गुवाहाटी (असम)	2,000.00
15.	श्री राजकुमार जैन छावड़ा, गुवाहाटी (असम)	2,000.00
16.	श्रीमती इन्द्रादेवी गंगवाल, डीमापुर (नागालैण्ड)	2,000.00
17.	श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, डीमापुर (नागालैण्ड)	2,000.00
18.	श्रीमती उषा देवी जैन रारा, नलवाड़ी (असम)	2,000.00
19.	श्रीमती संतोष देवी छावड़ा, गुवाहाटी (असम)	2,000.00
20.	श्री राजकुमार जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
21.	श्रीमती ज्ञानादेवी सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
22.	श्रीमती राशि सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
23.	श्रीमती शालिनी जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
24.	श्रीमती सूर्या सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
25.	श्रीमती हर्षिता जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
26.	श्रीमती रितिका जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
27.	श्रीमती कामिनी जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
28.	श्रीमती शिवांगी जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
29.	श्री दिवास कुमार सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
30.	श्री आनन्द कुमार जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
31.	टीनू सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
32.	श्रीमती रश्मि सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
33.	श्री गणपतराय जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
34.	श्री संजय कुमार गंगवाल, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
35.	श्री सुरेन्द्र कुमार गंगवाल, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
36.	श्री भागचन्द जैन रारा, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
37.	श्री मोनू रारा, जयपुर (राज.)	2,000.00
38.	फ्लोरी जैन रारा, जयपुर (राज.)	2,000.00
39.	श्रीमती स्वाती बड़जात्या, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
40.	श्रीमती एकता पाटनी, दिनहट्टा, जिला-कूचबिहार (प.बंगाल)	2,000.00
41.	श्रीमती स्वाती जैन रारा, जयपुर (राज.)	2,000.00
42.	श्री आलोक जैन बड़जात्या, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
43.	श्रीमती शालिनी जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
44.	श्रीमती सूर्या सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
45.	श्रीमती हर्षिता जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
46.	श्रीमती रितिका जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
47.	श्रीमती कामिनी जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
48.	श्रीमती शिवांगी जैन, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
49.	श्री दिवास कुमार सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
50.	श्री आनन्द कुमार जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
51.	टीनू सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
52.	श्रीमती रश्मि सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
53.	श्री अशोक कुमार बगड़ा, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
54.	श्री महिपाल पाटनी, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
55.	श्री राजकुमार जैन छावड़ा, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
56.	श्रीमती इन्द्रा देवी गंगवाल, डीमापुर (नागालैण्ड)	2,000.00
57.	श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, डीमापुर (नागालैण्ड)	2,000.00
58.	श्रीमती उषादेवी जैन रारा, नलबारी (आसाम)	2,000.00
59.	श्रीमती संतोष देवी छावड़ा, गुवाहाटी (आसाम)	2,000.00
60.	श्री राजकुमार जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
61.	श्रीमती ज्ञानादेवी सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
62.	श्रीमती रिशि सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
63.	परिचित सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
64.	परिमित सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
65.	अतिशय सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
66.	अभिषेक सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
67.	श्रीमती प्रेमलता पांड्या, कोलकाता (प.बंगाल)	2,000.00
68.	श्री सौरभ जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
69.	अनामिका जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
70.	सिविशा जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
71.	सावदर्शी जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
72.	श्री संदीप कुमार जैन, जयपुर (राज.)	2,000.00
73.	श्री गणपत जैन गंगवाल, कोलकाता (प.बंगाल)	1,900.00
74.	श्री संजय कुमार जैन गंगवाल, कोलकाता (प.बंगाल)	1,900.00
75.	श्री अभय कुमार जैन कासलीवाल, सेक्टर-41, फरीदाबाद (हरियाणा)	1,100.00
76.	श्री राजकुमार जैन सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)	6,700.00
77.	श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट चैत्यालय टेम्पल ट्रस्ट, अजमेर (राज.)	40,000.00
	श्रीमती प्रेमलता काला, त्रिवेणीनगर, जयपुर (राज.) द्वारा 20,000/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
78.	श्री रतनलाल तारादेवी छावड़ा, विश्वेस्रैय्या नगर, जयपुर (राज.)	6,000.00
79.	श्री सुभाष जैन प्रेमलता जैन काला, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	1,100.00
80.	श्री महावीर मोना जैन कासलीवाल, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	1,100.00
81.	श्री अशोक जैन अंजू जैन अजमेरा, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	1,100.00
82.	श्री महेन्द्र जैन बाकलीवाल, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	600.00
83.	श्री विनोद कुमार जैन राजदेवी वैद, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
84.	श्री अजय गौरी जैन पाटनी, जयपुर (राज.)	500.00
85.	श्री हिमांशु कोमल जैन, निर्माण नगर, जयपुर (राज.)	500.00
86.	श्री प्रतीक सुरभि दीवान, धर्म पार्क, अजमेर रोड (राज.)	500.00
87.	श्री अशोक शिमला पापडीवाल, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
88.	श्रीमती शकुन्तला लुहाड़िया, शान्ति नगर, जयपुर (राज.)	500.00
89.	श्री नवरतन संतोष सोगानी, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
90.	श्री भागचंद मैना पाटनी, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
91.	श्री महेन्द्र मृदुला जैन काला, विश्वेसरय्या नगर, जयपुर (राज.)	500.00
92.	श्री सतीश सुनन्दा जैन, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
93.	श्रीमती उमा जैन, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
94.	श्रीमती भंवरी देवी सेठी, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
95.	श्री निर्मल रेखा जैन गोधा, विश्वेसरैय्या नगर, जयपुर (राज.)	500.00
96.	श्रीमती इन्द्रा जैन काला, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
97.	श्रीमती निशा जैन, विश्वेसरय्या नगर, जयपुर (राज.)	500.00
98.	श्रीमती रेणु, विश्वेसरय्या नगर, जयपुर (राज.)	500.00
99.	श्रीमती निर्मला जैन, विश्वेसरय्या नगर, जयपुर (राज.)	500.00
100	श्रीमती विमला जैन अजमेरा, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राज.)	500.00
101	मेसर्स नव अल्पना प्रिन्टर्स, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)	500.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**600.00**
	श्री रवीन्द्र कुमार जैन, देवेन्द्रनगर, पन्ना (म.प्र.) द्वारा 8,064/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
102	श्रीमती मालती जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	4,032.00
103	श्रीमती मालती जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	1,008.00
104	श्री रवीन्द्र कुमार जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	1,008.00
105	श्री रजत जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	1,008.00
106	कु. रक्षा जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	1,008.00
107	श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा, ग्वालियर (म.प्र.)	11,100.00
108	श्री शांतिनाथ दिग. जैन चैत्यालय, सैनिक फार्म, खानपुर, नई दिल्ली	7,285.00
	श्री राजकुमार जैन कासलीवाल, मालवीयनगर, जयपुर द्वारा 16,100/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
109	श्रीमती शारदा पाटोदी, 5/243, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
110	श्रीमती उषा जैन, 5/239, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
111	श्रीमती प्रेमलता जैन, 5/197, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
112	श्री पंडित विमल कुमार जैन, 5/216, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
113	स्व. सोहनदेवी, 5/107, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	1,100.00
114	श्रीमती गुणमाला देवी, 5/25, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
115	श्रीमती हेमलता सेठी, 5/23, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
116	श्रीमती मीनू जैन, 5/246, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
117	श्रीमती विमलादेवी सोनी, 5/333, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
118	श्रीमती पूजा सोनी, 5/333, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
119	श्रीमती अंजू दिनेश कुमार बड़जात्या, 75, मालवीयनगर, जयपुर (राज.)	500.00
120	श्रीमती पदमादेवी शाह, डी-8, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
121	श्रीमती मिथिलेश जैन, 6/348, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
122	श्रीमती तरुणा देवी, 6/405, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
123	श्रीमती सुमन सोगानी, 6/418, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
124	श्रीमती मैनादेवी पाटनी, 6/127, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
125	श्रीमती शैलकुमारी कासलीवाल, 7/197, मालवीयनगर, जयपुर (राज.)	500.00
126	श्री कान्ती कुमार वैद, 7/415, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
127	श्रीमती सुनीता राजमल जैन गोधा, 7/313, मालवीयनगर, जयपुर (राज.)	500.00
128	श्रीमती सुमित्रा, 7/335, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
129	श्रीमती अंशिका छाबड़ा, 7/335, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
130	श्रीमती निशा जैन, सेक्टर-7, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
131	श्रीमती तारामणी अजमेरा, 7/333, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
132	श्रीमती वीनू जैन, 7/333, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
133	श्रीमती मृदुला जैन, 8/209, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
134	श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन, 8/186, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
135	श्रीमती अनीता जैन, 8/275, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
136	श्रीमती सूरजदेवी, 8/8, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
137	श्रीमती शकुंतला देवी जैन शाह, 8/182, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
138	श्रीमती रतनदेवी जैन, ए-18, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00
139	श्रीमती सुनीता जैन, भगवानपुरी, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)	500.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
	श्रीमती मोनिका जैन, जयपुर (राज.) द्वारा 18,400/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
140	श्री विशाल जैन शाह, जयजवान कालोनी, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
141	श्रीमती विमला देवी सेठी, 112, मिलाप नगर, जयपुर (राज.)	500.00
142	गुप्तदान, द्वारा-श्रीमती मोनिका जैन, जयपुर (राज.)	500.00
143	श्रीमती उषा जैन, जयजवान कालोनी, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
144	श्रीमती कविता बड़जात्या, श्यामविहार कालोनी, सागानेर, जयपुर (राज.)	500.00
145	श्रीमती रोचना जैन, कल्याणपुरी कालोनी, सागानेर, जयपुर (राज.)	500.00
146	श्रीमती पदमा चौधरी, बी-71, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
147	श्रीमती सन्तोष कंजोलिया, 48, मिलाप नगर, जयपुर (राज.)	500.00
148	श्रीमती सुलोचना जैन, 78, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
149	श्रीमती कान्ता जैन, 3, जयजवान कालोनी, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
150	श्री राम अवतार जैन, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
151	श्री मनोज जैन बाकलीवाल, इन्कमटैक्स कालोनी, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)	500.00
152	श्रीमती सुमतिदेवी पाटनी, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
153	श्री माणकचंद जैन, इन्कम टैक्स कालोनी, जयपुर (राज.)	900.00
154	श्रीमती तारादेवी जैन, 66, मिलापनगर, जयपुर (राज.)	500.00
155	श्रीमती कंचनदेवी अनिलकुमार अरुणकुमार ठोलिया, जयपुर (राज.)	500.00
156	श्रीमती तारादेवी जैन कासलीवाल, जयअम्बे नगर, जयपुर (राज.)	500.00
157	श्री अनिल जैन छाबड़ा, मिलापनगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
158	श्रीमती सुनीता कासलीवाल, जयअम्बेनगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
159	श्रीमती किरण पाटनी, 115, जयजवान द्वितीय, जयपुर (राज.)	500.00
160	श्रीमती मुन्नादेवी जैन शाह, आदिनाथनगर, जयपुर (राज.)	500.00
161	श्रीमती कमलादेवी पाटनी, 94, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
162	श्रीमती विमला जैन सिंघी, 394, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
163	श्रीमती चम्पादेवी जैन चांदवाड़, जयअम्बेनगर, जयपुर (राज.)	500.00
164	श्री सूरज जैन, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
165	श्रीमती कांतादेवी सोनी, लालबहादुर नगर, जयपुर (राज.)	500.00
166	श्रीमती सुलोचना देवी हाडा, 232, हिम्मतनगर, जयपुर (राज.)	500.00
167	श्रीमती शान्ती रंजना जैन, एस-84, आदिनाथनगर, जयपुर (राज.)	500.00
168	श्रीमती सरला जैन, इन्कमटैक्स कॉलोनी, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)	500.00
169	श्रीमती सीमा उमेश जैन काला, जयजवान कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
170	श्रीमती इन्द्रा जैन, जयजवान कालोनी, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
171	गुप्तदान, द्वारा-श्रीमती मोनिका जैन, जयपुर (राज.)	1,000.00
172	श्रीमती प्रभादेवी जैन निगोतिया, आदिनाथ श्याम मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
173	श्रीमती मणिप्रभा जैन, जयजवान कालोनी, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
174	गुप्तदान, द्वारा-श्रीमती मोनिका जैन, जयपुर (राज.)	500.00
	श्रीमती नीलम ठोलिया, सी-स्कीम, जयपुर (राज.) द्वारा 20,800/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
175	श्री बसंतीलाल सरदारदेवी जैन छाबड़ा, जयपुर (राज.)	5,100.00
176	श्रीमती ममता सोगानी, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	3,100.00
177	श्रीमती पुष्पा जैन काला, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
178	श्रीमती सुशीला जैन शास्त्री, जयपुर (राज.)	500.00
179	श्रीमती दमयन्ती जैन, जयपुर (राज.)	500.00
180	श्रीमती सुशीला जैन राणा, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
181	श्रीमती त्रिशला जैन राणा, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
182	श्रीमती कान्ता जैन मोदी, जयपुर (राज.)	500.00
183	श्रीमती सुलोचना जैन शाह, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
184	श्रीमती ललिता जैन ठोलिया, जयपुर (राज.)	500.00
185	श्रीमती विक्टोरिया भाभी, जयपुर (राज.)	500.00
186	श्रीमती गुणमाला जैन बैनाड़ा, जयपुर (राज.)	500.00
187	श्रीमती सरोज जैन सोगानी, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	1,000.00
188	श्रीमती सारिका जैन काला, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	1,500.00



'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
189	श्रीमती नीलम जैन ठोलिया, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	1,100.00
190	श्रीमती निशि जैन काला, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	1,000.00
191	श्रीमती विमलेश जैन सेठी, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	1,000.00
192	श्री श्रवण जैन कासलीवाल, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
193	श्रीमती सुलोचना जैन, जयपुर (राज.)	500.00
194	श्रीमती विमला जैन, जयपुर (राज.)	500.00
195	श्रीमती प्रेमलता जैन, चितरंजन मार्ग, जयपुर (राज.)	500.00
	श्रीमती चंपादेवी गोधा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) द्वारा 29,842/- रुपये निम्न दातारों से प्राप्त हुए	
196	श्रीमती चम्पा जैन गोधा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,100.00
197	श्रीमती डॉ. शीला जैन, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
198	श्रीमती विद्या जैन कासलीवाल, जयपुर (राज.)	2,100.00
199	श्रीमती कला जैन, प्रेमनगर, जयपुर (राज.)	1,000.00
200	श्रीमती हेमा जैन, गायत्रीनगर, जयपुर (राज.)	500.00
201	श्रीमती कल्पना जैन सोनी, जयपुर (राज.)	500.00
202	श्री मनोज जैन सोगानी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
203	श्री सुरेन्द्र जैन सोगानी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,100.00
204	श्री नरेन्द्र जैन सोगानी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
205	श्रीमती अरुणा जैन छाबड़ा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
206	श्रीमती संतोष जैन छाबड़ा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,100.00
207	श्रीमती बविता जैन छाबड़ा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
208	श्रीमती मीना जैन झांझरी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,000.00
209	श्रीमती सुनीता जैन शाह, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,101.00
210	श्री सुरेन्द्र जैन शाह, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,000.00

'गुल्लक योजना' से प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
211	श्रीमती शशी ठोलिया, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	700.00
212	श्रीमती नलिनी जैन कटारिया, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	700.00
213	श्रीमती सुशीला जैन बेलेवाला, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,100.00
214	श्रीमती उर्मिला जैन, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	1,000.00
215	श्रीमती श्रुति सेठी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	701.00
216	श्रीमती उमा जैन पाटनी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	800.00
217	श्रीमती कमलचंद जैन पहाड़िया, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)	1,000.00
218	श्रीमती शान्तिदेवी जैन, देवीपथ कालोनी, जयपुर (राज.)	1,500.00
219	श्री नानूलाल जैन गोदिका, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
220	श्री प्रेमचंद जैन लुहाड़िया, सागानेर, जयपुर (राज.)	500.00
221	श्रीमती रेणु जैन सोगानी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
222	श्री श्रेयांस जैन सोगानी, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	2,100.00
223	श्रीमती कंचनदेवी जैन अजमेरा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
224	श्रीमती बीना जैन गोधा, हरिदेव नगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)	500.00
225	श्रीमती सविता जैन निगोतिया, जनता कालोनी, जयपुर (राज.)	500.00
226	श्री प्रेमचंद जैन छाबड़ा, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)	500.00
227	श्री सुनील जैन, बनी पार्क, जयपुर (राज.)	500.00
228	श्री ज्ञानचंद जैन, जयपुर (राज.)	1,100.00
229	श्री ज्ञानचंद जैन अजमेरा, महेश नगर, जयपुर (राज.)	700.00
230	श्री नरेन्द्र जैन छाबड़ा, गायत्री नगर, जयपुर (राज.)	500.00
231	श्री ताराचंद जैन, हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)	500.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**440.00**
	कुल योग	**3,25,207.00**

'तीर्थ जीर्णोद्धार' हेतु प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
01.	श्री विकास जैन, म.नं.-488, सेक्टर-46, फरीदाबाद (हरियाणा)	11,000.00
02.	श्री निखिलेश कुमार जैन काला, कुपुलवाड़ी, बोरिवली, मुंबई (महा.)	11,000.00
03.	श्री अशोक जैन, 2643, फेस-2, अर्बनस्टेट, पटियाला (पंजाब)	20,000.00
04.	कु. विधि जैन, निकट बावली चौकी, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,100.00
05.	श्री राजकुमार जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	2,000.00
06.	श्री खीनुकरण सुनीलकुमार बाकलीवाल, सिलीगुड़ी, बरपेटा रोड (असम)	5,000.00
07.	श्री मनीष कुमार सेठी, स्टेशन रोड, पो.-बरपेटा रोड (आसाम)	5,000.00
08.	श्री अशोक कुमार जैन, निकट जैन मंदिर, बरपेटा रोड (आसाम)	5,000.00
09.	श्री सागरमल निहालचंद चूड़ीवाल, वार्ड नं.-3, बरपेटा रोड (आसाम)	5,000.00
10.	श्री राजकुमार जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	3,000.00
11.	श्री मनोजकुमार पदमकुमार जैन, मान्धा सैलू, जि.-प्रभणी (महा.)	1,650.00
12.	श्री रजनीश जैन, एम.एस.इन्क्लेव, डोकाली, जिराकपुर (पंजाब)	4,200.00
13.	श्रीमती किरण देवी सेठी, दिल्ली	20,000.00
14.	श्रीमती शालिनी देवी जैन सेठी, 1-वुड स्ट्रीट, कोलकाता (प.बंगाल)	21,000.00
15.	श्रीमती अनुपमा जैन, सिविल लाइन्स, लुधियाना (पंजाब)	4,000.00
16.	श्री अरुण जैन हिमांशु जैन, 329, सेक्टर-22-ए, चंडीगढ़ (पंजाब)	2,000.00
17.	श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, डीमापुर (नागालैण्ड)	22,000.00
18.	श्री एन.के. जैन, 553, सेक्टर-18, चंडीगढ़ (पंजाब)	5,100.00
19.	श्री विनोद कुमार जैन, डीमापुर (नागालैण्ड)	17,000.00
20.	श्री सुगनचंद जैन, नीलकंठ हाइट्स, हवा सड़क, जयपुर (राज.)	11,000.00
21.	श्री विमलकुमार रौनककुमार जैन, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)	11,000.00
22.	श्रीमती सुनीता जैन, 422, सेक्टर-38-ए, चंडीगढ़ (पंजाब)	2,000.00
23.	श्री अशोक कुमार जैन, फ्रेण्ड्स अपार्टमेन्ट, IP Extension, दिल्ली	30,000.00
24.	श्री संजय जैन व श्रीमती सुनीता जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,100.00
25.	श्री महेश जैन वीरेन्द्र जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	2,100.00

'तीर्थ जीर्णोद्धार' हेतु प्राप्त दानराशि

क्र.	दान दातार का नाम व पता	धनराशि
26.	सुगनचंद बाबूलाल जैन ट्रस्ट, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	5,100.00
27.	श्री आदेश जैन मधु जैन, यहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)	500.00
28.	श्री कैलाशचंद जैन कागजी, यहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)	500.00
29.	श्रीमती रेखा जैन, एल.डी.ए. कालोनी, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,100.00
30.	श्री धर्मचंद जैन, बिसवां, सीतापुर (उ.प्र.)	1,511.00
31.	श्री गंभीरचंद श्रेयांसकुमार जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,100.00
32.	श्री अतुल जैन, ब्राहमनगर, कैम्पल रोड, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	1,000.00
33.	श्रीमती सरोज जैन, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	2,100.00
34.	श्रीमती रेखा जैन, एल.डी.ए. कालोनी, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)	500.00
35.	श्री श्रेयांसनाथ दिग. जैन बड़ा मंदिर, कापरेन, जिला-बूंदी (राज.)	10,000.00
36.	श्रीमती सुमित्रा जैन, गुलाबबाड़ी, लाडपुरा, कोटा (राज.)	14,000.00
37.	श्री एस.सी. सेठी, न्यू राजधानी इन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली	5,00,000.00
38.	श्री अशोक कुमार जैन, फ्रेण्ड्स अपार्टमेन्ट, IP Extension, दिल्ली	15,000.00
39.	श्रीमती राजल कोटड़िया, White Field, बंगलुरु (कर्नाटक)	11,001.00
40.	श्रीमती शम्पा शाह, डी-3, बालीनगर, नई दिल्ली	4,000.00
41.	श्रीमती सिम्मी जैन, सोनीपत (हरियाणा)	5,000.00
42.	श्री रवीन्द्र कुमार जैन, देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)	4,995.00
43.	श्री शांतिनाथ अग्रवाल दिग. जैन मंदिर, हुडको, औरंगाबाद (महा.)	5,001.00
44.	आदित्य जैन अश्वनी जैन, 17/145, सैनिक फार्म, दिल्ली	51,000.00
45.	श्री नरेशचंद जैन, जी.आई.सी. रोड, सिविल लाइन्स, सीतापुर (उ.प्र.)	20,000.00
46.	श्री निखिलेश कुमार जैन काला, कुपुलवाड़ी, बोरिवली, मुंबई (महा.)	11,000.00
47.	श्री चिरंजीलाल अशोककुमार पहाड़िया, पो.-रंगिया, कामरूप (असम)	11,000.00
	दातारों से 500/- रुपये से कम प्राप्त राशि	**663.00**
	कुल योग	**8,98,321.00**

स्वागत है तीर्थ संरक्षिणी महासभा के नये सदस्यों का (01.08.2020 से 30.09.2020 तक)

संरक्षक सदस्य

01. श्री निखिलेश भरतकुमार काला, मुम्बई (महा.)
02. श्री सुगनचंद जैन, हवासड़क, जयपुर (राज.)
03. श्री रवीन्द्र कुमार जैन, देवेन्द्रनगर, पन्ना (म.प्र.)
04. श्री आदित्य जैन अश्विनी जैन, दिल्ली

सम्मानित सदस्य

01. श्रीमती शालिनी देवी सेठी, कोलकाता (प.बंगाल)
02. श्रीमती सुमित्रा जैन, कोटा (राज.)

विशिष्ट सदस्य

01. श्री विकास जैन, फरीदाबाद (हरियाणा)
02. श्री अशोक जैन, पटियाला (पंजाब)
03. श्रीमती किरनदेवी सेठी, दिल्ली
04. श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, डीमापुर (नागालैण्ड)
05. श्री विनोद कुमार जैन, डीमापुर (नागालैण्ड)
06. श्री विमल कुमार रौनक कुमार जैन, अजमेर (राज.)
07. श्रीमती रीगल कोटड़िया, बंगलुरु (कर्नाटक)
08. श्रीमती आराधना जैन, ग्वालियर (म.प्र.)
09. श्री नरेशचंद जैन, सीतापुर (उ.प्र.)
10. श्री चिरंजीलाल अशोक कुमार पहाड़िया, कामरूप (आसाम)

आजीवन सदस्य

01. श्री एन.के. जैन, चंडीगढ़ (पंजाब)
02. श्री श्रेयांसनाथ दिग. जैन बड़ा मंदिर, बूंदी (राज.)
03. श्री रतनलाल तारादेवी छावड़ा, जयपुर (राज.)
04. श्रीमती सिम्मी जैन, सोनीपत (हरियाणा)
05. श्री देवेन्द्र जैन काला, औरंगाबाद (महा.)
06. श्री बसंतीलाल सरदारदेवी छावड़ा, जयपुर (राज.)

मंदिरों को भेजी गई दानराशि (01-08-2020 से 30-09-2020 तक)

1.	05.08.20 श्री दिग. जैन (प्राचीन) तीर्थक्षेत्र, अंजनगिरि, नासिक (महा.)	11,000.00
2.	17.08.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुजवाया, ग्वालियर (म.प्र.)	10,000.00
3.	17.08.20 श्री दिग. जैन श्रावस्ती तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्रावस्ती (उ.प्र.)	5,000.00
4.	24.08.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुजवाया, ग्वालियर (म.प्र.)	5,000.00
5.	28.08.20 दिग. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर, मेरठ (उ.प्र.)	80,000.00
6.	02.09.20 श्री धर्मनाथ दिग. जैन अतिशयक्षेत्र करई पाटई, ग्वालियर	30,000.00
7.	02.09.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुजवाया, ग्वालियर (म.प्र.)	5,000.00
8.	11.09.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुजवाया, ग्वालियर (म.प्र.)	5,000.00
9.	11.09.20 श्री धर्मनाथ दिग. जैन अतिशयक्षेत्र करई पाटई, ग्वालियर	15,000.00
10.	17.09.20 श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुजवाया, ग्वालियर (म.प्र.)	10,000.00
	योग	1,76,000.00

कुतुबमीनार परिसर में पुरातत्व संग्रहालय



विश्वप्रसिद्ध कुतुबमीनार परिसर में 'पुरातत्व साइट संग्रहालय' निर्माण हेतु पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा विश्व जैन संगठन की याचिका स्वीकार करते हुए माना जा रहा है कि देश में संचालित अन्य ४२ पुरातत्व साइट संग्रहालयों के समान कुतुब परिसर में संग्रहालय निर्माण हेतु शीघ्र आवश्यक निर्देश जारी होंगे। कुतुब परिसर में संग्रहालय का मुख्य उद्देश्य कुतुब व इसके आसपास प्राचीन लालकोट क्षेत्र से खुदाई में प्राप्त लेकिन संग्रहालयों व स्टोर आदि में संग्रहीत प्राचीन अवशेष प्रदर्शित हों ताकि देश-विदेश से आये दर्शक उसी परिवेश में पुरातत्व महत्व की सामग्री को देखकर वास्तविक इतिहास से परिचित हों।

–विश्व जैन संगठन

जैन तीर्थंकर नेमिनाथ मोक्षस्थली

जैन तीर्थंकर नेमिनाथ मोक्ष स्थली गिरनार की पांचवीं टोंक के वर्ष १८७४ में जेम्स बर्गेस द्वारा





आंखों देखा प्रमाणिक वर्णन पत्थर पर उकेरे गये नेमिनाथ के चरण चिह्न के ऊपर छोटा व खुला एक मंदिर है जिसकी देखरेख एक दिगम्बर साधु द्वारा की जा रही है। इसके अलावा इसमें एक भारी घंटा भी लटका है।

शोक समाचार

डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल बुढ़ार के तृतीय पुत्र ज्ञानानन्द बंसल ME, B.A., वर्कमेन इन्चार्ज एस.ई.सी.एल. धनपुरी का असामयिक निधन दिनांक २३ अक्टूबर २०२० को जाग्रत अवस्था में शांत परिणामों सहित हुआ। वे ५१ वर्ष के थे। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में उनकी विशेष रुचि थी। वे व्यवहार कुशल और योग्य कार्यकर्ता थे। अध्यात्म में उनकी रुचि थी।

–सिद्धार्थ सर्राफ, कॉलेज कॉलोनी, बुढ़ार







भगवान महावीर, महावीरजी

87-WR-F-MH-15
श्री मनीष गोदी
हिन्दी ग्रन्थ कार्यालय, हीरावाग,
सी.पी. टैंक, मुम्बई–4 (गहा.)



ISSN : 0972-4737
Pracheen Tirth Jirnodwar, Nov. 2020
RNI No.- : UPHIN/2001/05232
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/61-2020-2022
Posted at R.M.S., Charbagh, Lucknow-4 on Every Month 15/20
एक प्रति का मूल्य रुपये 30 वार्षिक सदस्यता शुल्क रुपये 300
कुल पृष्ठ 40

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा' (स्वामी का नाम) की ओर से सुधेश जैन (मुद्रक) द्वारा माहेश्वरी प्रिन्टर्स, मोतीनगर, लखनऊ से मुद्रित तथा सुधेश जैन (प्रकाशक) द्वारा प्रकाशित। सम्पादक : प्रोफेसर भागचन्द्र जैन 'भास्कर'

If Undelivered Please Return to- S.B.D.J. (T.S.) Mahasabha, Nandishwar Flour Mill Compound, Mill Road, Aishbagh, Lko.-226004 (U.P.)